भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 37 अंक : 2 | 27.2.2014 गुरुवार (मार्च - अप्रैल) | शुल्क – प्रति अंक : ₹ 10.00 वार्षिक : ₹ 50.00

गुणातीत कुनबे में ही है जगत जिनका समाया ऐसे 'गुरुजी' को वंदन बारंबार हमारा...

गुरु का प्राकट्य पर्व प्रभु से प्रार्थना करने का सुगम-सुलभ मौका है। इसीलिए, अनंत जन्मों से चिपकी आशाओं, वासनाओं, आसक्तियों, तृष्णा, लौकिक-पारलौकिक महत्त्वकांक्षाओं से मुक्त होने के लिए, प्रत्येक मुमुक्षु शिष्य अपनी-अपनी रुचि व अंग के अनुसार, गुरु के प्रति भक्ति अदा करते हुए, ऐसे शुभ दिन प्रभु को पुकार करता है। 'ताड़देव' मंदिर के सभी मुक्तों के लिए ऐसा ही अनमोल अवसर **2 मार्च 2014** के मंगलकारी दिन आ रहा है, जब **फाल्गुन शुक्ल 1** अर्थात्–**प.पू. गुरुजी की 77वीं प्राकट्य तिथि** पर, अंतर के भाव प्रकट करने के लिए गुणातीत कुनबे के हम सभी एकत्र होंगे।

सभी प.पू. गुरुजी को भले ही 'गुरुजी' कह कर संबोधित करते हैं, लेकिन वे सभी के लिए क्या हैं यह बात भजन की निम्न पंक्ति से सहज ही सिद्ध हो जाती है –

'कृष्ण रूप किसी को, तो विष्णु रूप किसी को,
जैसा जिसका भाव दिखे वैसा उसको...'

और... सबसे अधिक तो–

मुश्किल में आधी रात को भी हमारे लिए **हमारा अपना** कोई बैठा है, ऐसी तसल्ली देती ब्रह्मस्वरूप काकाजी की अनमोल भेंट–गुरुजी का ऋण कैसे अदा कर पाएँगे...

सामान्यतः अध्यात्म गुरु की छवि 'ध्यानस्थ शांत, धीर, गंभीर' होती है। परंतु, भगवान स्वामिनारायण स्वयं विनोदप्रिय थे। हास्य-विनोद से तत्कालीन समाज में उन्हीं के अनुसार खुद को ढाल कर इन्होंने सभी को अपनी मूर्ति का सुख दिया। ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने भी उसी प्रकार संबंध में आए मुक्तों को उनके अनुरूप ही प्रभु से जोड़ा। और... ऐसे ब्रह्मस्वरूप काकाजी को पल-पल हाज़राहज़ूर मान कर जीते हुए प.पू. गुरुजी भी मुक्तों के साथ उन्हीं की कक्षा के मुताबिक संबंध करके कब उनके जीवन का केन्द्र बन जाते हैं, इसका तो वे मुक्त खुद

भी एहसास नहीं कर पाते। लेकिन, समय जाते ख्याल पड़ता है कि *ओहो! कभी लाड़ लड़ा कर, तो कभी नाराज़गी ग्रहण करके हमें अपनी मूर्ति में रत रख कर, उन्होंने हमारे अंतर में छिपी कई कितनी लालसाओं, अहंता-ममता के बंधनों से हमें खूब ऊपर उठा लिया है।*

सन् 1953 में, जब से प.पू. गुरुजी ब्रह्मस्वरूप काकाजी से जुड़े, तभी से उन्होंने देखा है कि **ब्रह्मस्वरूप काकाजी, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी एवं प.पू. कांतिकाका** के परिवार ने वचनामृत अंत्य. प्रकरण 21 में **भगवान स्वामिनारायण** द्वारा कथित उनकी विभावना – ***'...ऐसे जो दृढ़ सत्संगी वैष्णव हैं, वे ही हमारे तो सगे-संबंधी हैं और वे ही हमारी बिरादरी है तथा जीतेजी ऐसे वैष्णव के साथ ही रहना है...'*** को अपनी जीवनशैली बनाते हुए सामूहिक रूप से प्रवर्ताया, जिसके फलस्वरूप **'योगी परिवार'** अस्तित्व में आया, जो आज **'गुणातीत समाज'** के रूप में विकसित हुआ!

एक बार प.पू. गुरुजी ने बताया था कि – *गुरुहरि योगीजी महाराज कहते कि शास्त्रों में **ब्रह्मर्षि गुरु वशिष्ठ** के **'लव सत्संग'** की जो महिमा गाई है, वैसा 'लव सत्संग' दादुभाई के यहाँ होता है। 6/डी सोनावाला, मुंबई में हम सब उस सत्संग के लिए जाते थे और सत्संग में टिके रहें, यही काकाजी के 'लव सत्संग' का फल है।*

यूँ, तब ताड़देव की चौरासी सीढ़ियाँ चढ़-चढ़ कर **प.पू. गुरुजी** ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी से 'कुटुंबभाव' की जो घुट्टी पी, उसी के कारण **संबंध में आए मुक्तों के इर्द-गिर्द ही उनका जगत समाया है** और वे सभी को इसी रास्ते पर निरंतर अग्रसर करते हैं। संपर्क में आते किसी भी परिवार के विषय में उन्हें मालूम हो कि उनका **'संयुक्त परिवार'** है और वे कारोबार इत्यादि सब कुछ मिलजुल कर ही करते हैं, तो प.पू. गुरुजी के चेहरे पर एक अलग-सी चमक देखने को मिलती है। किसी भी रूप में 'पारिवारिक भावना' ही उनकी प्रत्येक क्रिया में झलकती है।

गत वर्ष दीवाली के दिनों में दिल्ली मंदिर से जुड़े प.भ. बाबुभाई शिहोरिया ने **'परिवार'**❖ से संबंधित निम्न मुद्दे भेजे थे, जो प.पू. गुरुजी को खूब पसंद आए –

- परिवार में **आचारसंहिता** नहीं होती, एक **मर्यादा** होती है।
- परिवार में **टीका-चर्चा** नहीं होती, **समझदारी** होती है।
- परिवार में **भय** नहीं होता, **भरोसा** होता है।
- परिवार में **कायदा-कानून** नहीं होता, **अनुशासन** होता है।
- परिवार में **शोषण** नहीं होता, **पोषण** होता है।
- परिवार में **स्वार्थ** नहीं होता, **प्रेम** होता है।
- परिवार में **होड़** नहीं होती, **सहर्ष स्वीकार** होता है।
- परिवार में **क्लेश** नहीं होता, **कदर** होती है।
- परिवार में **दबाव** नहीं होता, **आदर** होता है।

❖ 'मूल गुजराती' पृष्ठ 6 पर पढ़ें।

* परिवार में **लापरवाही** नहीं बरती जाती, **देखभाल** की जाती है।
* परिवार में **संपर्क** नहीं होता, **संबंध** होता है।
* परिवार में **अवलंबन** नहीं होता, **आत्मीयता** होती है।
* परिवार में कोई **कर्ज़** नहीं होता; सिर्फ **साथ** होता है, **फर्ज़** होता है, **एक-दूसरे की फ़िकर** होती है।

इन्हें पढ़ कर **प.पू. गुरुजी** ने बताया–

परिवार में ऐसे आचरण की इच्छा-अपेक्षा हर एक को होती है, लेकिन जिस परिवार में भगवान के निर्मल संत का स्थान केन्द्र में होगा, वहीं यह भावना साकार हुई नज़र आएगी। हम सभी को ऐसे संत का संबंध है। तो, भगवत्स्वरूप संत के साथ 'अनन्यभाव' से जुड़ कर, उनके संतों-मुक्तों के संग कुटुंबभाव से जीते हुए, अक्षरधाम के दिव्य जीवन का सुख, माधुर्य प्राप्त करें।

एक बार अमदावाद के प.भ. समीरभाई ने प.पू. गुरुजी से पूछा– *गुरुजी, अमदावाद में रविवार की सभा में हम काकाजी की कथा-वार्ता पढ़ रहे थे कि आज्ञा से बढ़ कर 'अनुवृत्ति' और अनुवृत्ति से बढ़ कर 'दिव्य एकता' है। यदि हम 'दिव्य एकता' दृढ़ कर लें, तो सहज ही पूर्णविराम को पा जाए न!*

तब प.पू. गुरुजी ने भारपूर्वक कहा– *'दिव्य एकता' तो बहुत दूर की बात है। पहले आपस में एक परिवार-सी एकता तो हम करें। कौटुम्बिक एकता होगी, तभी प्रभु के संबंध की एकता हो पाएगी!*

वचनामृत अंत्य. प्रकरण 7 में भगवान स्वामिनारायण ने तो बहुत स्पष्ट रूप से लिखा है–

अपने देह के सगे-संबंधी से भगवान के भक्तों को अधिक मानना।

हम यह बोलते तो हैं, लेकिन भीतर में तो अपने सगे को ही ज़्यादा रखते हैं।

यूँ, संबंध में आए मुक्तों की आध्यात्मिक परवरिश तो वे करते ही हैं; दूसरी ओर–हर एक के प्रति उनकी फ़िकर पल-पल अपनत्व का दर्शन कराती है, फिर वो चाहे स्वरूपों के लिए हो, उनके साथी-संगी के प्रति हो या गुणातीत समाज के किसी भी केन्द्र से जुड़े मुक्त के प्रति हो।

* पिछले वर्ष **7 फरवरी** को प.पू. गुरुजी को मालूम हुआ कि **पू. कोठारीस्वामिजी** को किडनी की ज़्यादा परेशानी हो आई है और फिलहाल प.पू. स्वामिजी की आज्ञा से उनका आयुर्वेदिक इलाज चल रहा है। प.पू. गुरुजी ने खूब चिंता करते हुए मुंबई के पू. **डॉ. महेन्द्र मर्चंट** से उनके विषय में सारी जानकारी हासिल की। प.पू. गुरुजी के मन में ऐसा था कि अभी उनकी जैसी हालत है, उसके मुताबिक एलोपैथी इलाज कराएँ और फिर जब हालत थोड़ी सुधरे, तो बाद में भले ही आयुर्वेदिक ट्रीटमेन्ट लें। पर, प.पू. स्वामिजी की मरजी के समक्ष, प.पू. गुरुजी ने कोई आग्रह न रखते हुए, तब यही कहा –

  ब्रह्मप्रवाह (हिन्दी) के पृष्ठ 157 में काकाजी ने कहा है–

  'अतिशय बड़े पुरुष कसौटी करें, वहाँ प्रार्थना का ही - केवल प्रार्थना का ही - उपचार करना।'

  और... उन्होंने भीतर में भजन-प्रार्थना जारी रखी।

कुछ ही दिनों में खबर आई कि पू. कोठारीस्वामिजी का एलॉपथी इलाज कराने के लिए प.पू. स्वामिजी ने सूचना भेजी है!

इस प्रकार, प.पू. गुरुजी के स्वामीसेवकभाव का तो दर्शन हुआ ही, साथ ही प.पू. काकाजी की बनाई राह पर चलते हुए अपने सखास्वरूप प.पू. कोठारीस्वामिजी के प्रति की प्रीति का एहसास भी कराया– ***'हम पंछी एक डाल के!'***

* 15 दिन लंडन-पेरिस का विचरण करने के बाद 20 अगस्त 2013 की मध्यरात्रि को प.पू. गुरुजी दिल्ली मंदिर लौटे। **22 अगस्त** को उन्हें पता चला कि वडोदरा निवासी **प.पू. साहेबजी के बहनोई, प.भ. भरत कुमार** को अस्पताल में दाख़िल किया गया है और उनकी हालत बहुत सीरियस हैं। प.भ. भरत कुमार एवं उनकी पत्नी सौ. उर्मि बहन 'अनुपम मिशन' की गतिविधियों में खूब अपनेपन से सक्रिय रहे हैं। परंतु, प.पू. गुरुजी से तो इतना ही परिचय कि वे प.पू. साहेबजी की बहन-बहनोई हैं। सो, यह जानते हुए कि प.पू. साहेबजी तो इस समय लंडन में हैं, प.पू. गुरुजी ने लंडन प.पू. साहेबजी से फोन पर पूछा– *आप, लंदन में हैं, तो मैं भरत कुमार से मिलने के लिए वडोदरा चला जाऊँ?*

  पर, प.पू. साहेबजी ने कहा– *आप, अभी तो यहाँ से लौटे हैं। सो, भागदौड़ न करें। मैंने शांतिभाई को वहाँ भेज दिया है।*

  भले ही प.पू. गुरुजी नहीं गए, लेकिन संबंध वाले सभी के प्रति उनकी ऐसी चिंता '**गुणातीत ख़ानदानी की प्रणाली**' का दर्शन कराती है।

प.पू. गुरुजी के जीवन को जिसने भी नज़दीक से निहारा होगा, उसने यही दर्शन किया होगा कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी के सिद्धांतानुसार उन्होंने कभी भी ऐसी चाहना नहीं रखी कि भीड़ इकट्ठी हो। एक सोफे पर वे **सिर्फ हमारे लिए** ही बैठे होते हैं और... जो भी मुक्त किसी के संपर्क से या सहज ही मंदिर का दर्शन के लिए आते हैं, उनकी परवरिश करना ब्रह्मस्वरूप काकाजी के प्रति भक्ति मानते हैं।

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की बातों का जिक्र करते हुए वे अकसर यह भी कहते हैं–

कल्याण तो सत्संग से जुड़े सभी का होना है – गाय, भैंस, बैल का भी। लेकिन हम लगे हुए हैं भगवान जैसा ऐश्वर्य पाने – जीतेजी अक्षरधाम का सुख प्राप्त करने!

और... जीवदशा से घिरे हमारे मन की भ्रांति को दूर करते हुए बताते हैं–

जूते कीचड़ से सने हुए हों, लेकिन सूखी पथरीली ज़मीन पर चलते जाएँगे, तो कीचड़ से सने जूते कब साफ़ हो जाएँगे पता भी नहीं चलेगा, ऐसे ही सत्संग में चलते हुए हम वासना-प्रकृति से परे होकर, ब्रह्म के संबंध से कब ब्रह्मरूप हो जाएँगे, इसका ख्याल भी नहीं पड़ेगा। परंतु, हमें विश्वास होना चाहिए। दृढ़ विश्वास तो शिष्य को ही पकड़े रखना होता है।

इस बात को अपने प्रसंगों द्वारा समझाते भी हैं–

*एक बार सोखड़ा के पुराने मंदिर में **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** से उन्होंने पूछा था –*

स्वामी, मुझे काकाजी के प्रति लगाव जरूर है, पर उनकी कई बातों पर मुझे विश्वास नहीं होता!

तब उन्होंने मुझसे कहा–

'विश्वास नहीं है, तो विश्वास रख; विश्वास आ जाएगा...'

और... तब से चाहे उन्हें ब्रह्मस्वरूप काकाजी की क्रिया जँची हो या नहीं; उनकी आज्ञा मानने में भी मन कितना ही बाधित हुआ हो, पर कुछ भी गिने बिना, प.पू. गुरुजी निरंतर ब्रह्मस्वरूप काकाजी की मरजी के मुताबिक ही चलते रहे... फलस्वरूप आज वे उनकी मूर्ति के अखंड धारक बन गए!

साथ ही, संबंध वाले मुक्त के प्रति उनका अतिशय लगाव कहा जाए कि वे अपना समय व्यर्थ न गवाँते हुए, इस प्राप्ति का सुख पाएँ; सो अपनेपन से डाँटते हुए, जबरन इस रास्ते पर चलने की सूझ देते हैं।

7 नवंबर 2011–लाभपंचमी के शुभ दिन प.पू. गुरुजी अमदावाद के मुक्तों के साथ बैठे हुए थे। तब मुक्तों के अभाव-अवगुण में न जाने की चेतावनी देते हुए **प.पू. गुरुजी** ने खूब सचोट बात की–

इस सत्संग से हमें प्राप्ति बहुत बड़ी हुई है, पर न समझें तो खोट भी उतनी ही अधिक है।

जैसे तुम्हारा बेटा यदि लंगड़ा हो और कोई उसका मज़ाक उड़ाए तो दिल कितना दुःखता है ? वैसे ही सभी मुक्त महाराज के बच्चे हैं; हम यदि किसी का मज़ाक बनाएँ, तो महाराज को कितना हर्ट होता होगा ? हम जो संबंध वालों की मसखरी या अवहेलना करते हैं, वह हमारे संत का दिल दुःखाने का रास्ता है।

पर, यह बात वैसी ही है– साइकिल पर कहीं जा रहे हों और गिर जाएँ, तो सिर्फ हाथ-पैर छिल जाएँगे। पर, यदि स्कूटर से गिरें तो ज्यादा चोट आएगी और उससे भी अधिक, यदि प्लेन में बैठे हों और वह क्रॅश हो जाए तो... ? बेशक, दूसरी ओर प्लेन फास्टेस्ट तरीके से तुम्हें पहुँचाता भी है।

ऐसे ही चाकू से काम करते हुए ज़रा-सा चूक जाएँ, तो उंगली कट जाए, पर यदि मशीन पर काम करते हुए ज़रा-सी गल्ती से पूरा हाथ ही अंदर चला जाए और कट जाए तो!

मतलब – एड्वान्स्ड हाई टॅक मशीनरी से फायदा अधिक है, पर चूक होते ही घाटा भी अत्यधिक है। यही कॅमेस्ट्री एड्वान्स्ड स्पीरिच्युअल टॅक्नोलॉजी की भी है!

यूँ, सत्संग में विघ्न डालने वाली कई लाल बत्तियों के विषय में प.पू. गुरुजी हमें बताते ही रहते हैं। पर, हम अपनी गफ़लत में व अधिकतर तो जड़ स्वभाव के वश, ऐसी लाल बत्तियों को नज़रअंदाज़ कर निकल जाते हैं और फिर पछताते हैं। एक कहावत है– *'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।'* यूँ हम कब तक पछतावा करते रहेंगे ? प.पू. गुरुजी ब्रह्मप्रवाह में ब्रह्मस्वरूप काकाजी द्वारा बताई बात अधिकतर दोहराते हैं–

गुणातीत ज्ञान में दोष कबूल करने से नहीं चलता... भीतर से परिताप करके, निर्दोषभाव का सत्कर्म करें, तो वह टल जाए...

सो, हाल ही में प.पू. गुरुजी द्वारा नक्षु को दी गई सहज सीख की जुगाली करते हुए प्रार्थना करें... **मुंबई-सांकरदा** से **'योगेश्वर हीरक महोत्सव'** मना कर दिल्ली मंदिर लौटने पर **नक्षु** को **प.भ. दिवेशजी** द्वारा लाया सोलर एनर्जी से चलने वाला खिलौना देते हुए, **6 फरवरी** की सायं **प.पू. गुरुजी** उसे बता रहे थे कि यह सूरज की किरणों से चार्ज होकर चलता है। फिर कहा–

सुन, एक बार मैंने तुझे दिखाया था कि धूप में मॅग्नीफाईंग काँच के नीचे काग़ज़ रखने से वह जल

गया था। हम धूप में खड़े होते हैं, तो क्या हमारे कपड़े जलते हैं? नहीं न! पर, वो धूप की किरणें काँच द्वारा केन्द्रित हुई थी, तो काग़ज़ जल गया! इसी तरह पढ़ाई करते हुए मन एकाग्र होना चाहिए; इधर-उधर ध्यान नहीं होना चाहिए।

हम अपने भीतर टटोलें, तो कहीं न कहीं हम में या तो कोई नादान बालक छिपा है या इसे हमारी जड़ता कहा जाए कि प.पू. गुरुजी द्वारा लगातार की गई 'कुटुंबभाव' व 'दिव्य एकता' की बातें दिमाग़ में बैठती ही नहीं, और शायद यही वज़ह है कि कोल्हू के बैल की भाँति आँखों पर अपने आदर्शों, इज़्म, सत्यों, मरजी, मनमानी, और इच्छाओं की गहरी पट्टी बांध कर चलते हुए, इतने वर्षों के सत्संग के बाद भी, खुद को वहीं के वहीं महसूस करते हैं, जहाँ से हमारी शुरुआत हुई थी।

सो, जब **2 मार्च – प.पू. गुरुजी की प्राकट्य तिथि** और **8 अप्रैल – रामनौमी** के शुभ दिन धरा पर **भगवान श्री स्वामिनारायण** द्वारा लिए अवतरण जैसे मंगल पर्व नज़दीक आ ही रहे हैं, तो सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में गद्‌गद् कंठ से यही प्रार्थना कि नक्षु जैसा निर्दोष बालक तो प.पू. गुरुजी की बात पकड़ कर जरूर एकाग्रता से पढ़ने लगेगा; पर, अब हम भी अपनी बुद्धि का सयानापन छोड़ कर उनके कहे मुताबिक खुद को ढाल लें...

❖ *મૂળ ગુજરાતી*

'પરિવાર'

- પરિવારમાં **બંધારણ** ન હોય, **વ્યવસ્થા** હોય.
- પરિવારમાં **ટીકા-ચર્ચા** ન હોય, **સમજણ** હોય.
- પરિવારમાં **ભય** ન હોય, **ભરોસો** હોય.
- પરિવારમાં **કાયદો** ન હોય, **અનુશાસન** હોય.
- પરિવારમાં **શોષણ** ન હોય, **પોષણ** હોય.
- પરિવારમાં **સ્વાર્થ** ન હોય, **પ્રેમ** હોય.
- પરિવારમાં **હોડ** ન હોય, **સહર્ષ સ્વીકાર** હોય.
- પરિવારમાં **કલેશ** ન હોય, **કદર** હોય.
- પરિવારમાં **દબાણ** ન હોય, **આદર** હોય.
- પરિવારમાં **બેદરકારી** ન હોય, **કાળજી** હોય.
- પરિવારમાં **સંપર્ક** ન હોય, **સંબંધ** હોય.
- પરિવારમાં **અવલંબન** ન હોય, **આત્મીયતા** હોય.
- પરિવારમાં કોઈના પર કોઈનું **ઋણ** નથી હોતું;
  માત્ર **સાથ** હોય છે, **ફરજ** હોય છે, **એકબીજાની ફિકર** હોય છે.

✡✡✡

14 अगस्त, 2013 सुबह – 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव', पेरिस

प.पू. वशीभाई (पवई)

...एक महान कार्य के लिए हम सब यहां एकत्रित हुए हैं। **पेरिस की रोमेंटिक और रंगीली भूमि का कैसा भाग्य जगा! काकाजी और पप्पाजी जैसे बड़े पुरुष यहाँ आए** और... आज 'काकाजी - पप्पाजी सेन्टीनरी सेलिब्रेशन्स' का फर्स्ट चरण यहां मनाया जा रहा है। इतिहास में घटनाएं घटती हैं, उसे नोट करें। वर्ना, घटना अदृश्य हो जाती है। पृथ्वी पर काकाजी और पप्पाजी का प्रागट्य भी कोई आकस्मिक घटना नहीं थी...

स्वामिनारायण भगवान ने पृथ्वी पर मनुष्य देह धारण करके अनंत कोटि जीवों को माया से पार किया। अनंत जीवों को ब्रह्मरूप करने के लिए, गुणातीतभाव में ले जाने के लिए ही मनुष्य देह धारण किया। लेकिन, मानव जात समझ नहीं सकी। एक्ज़ेक्टली 100 साल के बाद 1907 में करोड़ों-करोड़ों धन्यवाद हो, **शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज को कि अक्षरपुरुषोत्तम का सिद्धांत जो कि महाराज का रहस्य था, उसके लिए उन्होंने बहुत-बहुत कष्ट सहा। मैं आपको कितना ही डिस्क्राईब करूंगा, वह हमारी परसेप्शन से बाहर है।**

सामूहिक रूप में गुणातीतभाव प्रगटाने के लिए काकाजी-पप्पाजी को वे पृथ्वी पर लाए... अक्षरपुरुषोत्तम के सिद्धांत से गुणातीतभाव में हम सब जीएं और रहें, इस हेतु काकाजी-पप्पाजी का प्रागट्य था...

हमें गुणातीतभाव प्राप्त करना है, यह बात सामान्य आदमी को समझ में आए, इसीलिए काकाजी व पप्पाजी की शताब्दी है। करोड़ों-करोड़ों धन्यवाद हैं। यह बात कैसी है कि **सेब के भाव में हमें हीरा दे दिया। साइकिल के भाव में मर्सिडीज़ – ऐसी बात काकाजी और पप्पाजी ने हमें दी है।** कोई पूछेगा कि उनकी शताब्दी क्यों मना रहे हो? शास्त्रीजी महाराज की शताब्दी मनाई जा रही थी, तो योगीजी महाराज से किसी ने यूं पूछा। तो, उन्होंने उत्तर दिया कि *शास्त्रीजी महाराज की शताब्दी के लिए तो मैं बिक जाऊं।* उस समय योगीजी महाराज की उम्र 70 साल थी। शताब्दी के लिए उन्हें बिक जाना पड़े, तो वो भी कम था। क्योंकि – योगीजी महाराज को मालूम था कि शास्त्रीजी महाराज क्या विभूति हैं! यूँ **पेरिस के सब भक्तों** को करोड़ों-करोड़ों धन्यवाद हैं कि **आपने यह बात पकड़ कर काकाजी और पप्पाजी की शताब्दी मनाने की शुरुआत कर दी है।**

योगीगीता में मुद्दा है – *समजवुं भगवाननुं स्वरूप।* भगवान का स्वरूप समझाने के लिए काकाजी और पप्पाजी हमारे स्तर पर आए। छोटी-छोटी बातों से काकाजी ज्ञान देते थे। एक घंटा धुन कराते, पर बताते कि 5 मिनिट भी तुम धुन में नहीं रहते... **दुनिया में सारी बीमारियों के लिए क्लीनिक है...** लेकिन स्वभाव चेईन्ज करने का कोई क्लीनिक है? **काकाजी और पप्पाजी ने स्वभाव चेईन्ज करने का क्लीनिक खोला।** शांतिभाई के लिए कहा था – *शांतिभाई 'शांति' की गोली बेचेंगे।* वो क्या था? हमें स्पीरीच्युअल टेक्नीशियन्स बनने के लिए कहते। मतलब कि आप ऐसे संत बनो। पूरी दुनिया में स्ट्रेस का प्रॉब्लॅम, यूँ कहें कि

पूरी दुनिया में लाइफ ही प्रॉब्लॅम है। **सबकी प्रॉब्लॅम का सोल्युशन स्वामिनारायण फिलॉसॉफी पर है।** स्वामिनारायण प्रकाश में एक लेख आया था कि हमारी सहनशक्ति को क्या हो गया है?

...किसी भी रिवोल्यूशन, एनी चेईन्ज इज़ पेइनफुल... अब्दुल कलाम जब प्रेसीडेंट थे, तो एक बार वे जेल की विज़िट करने के लिए गए।

वहाँ सबसे पूछा–*आपको क्या प्रॉब्लॅम है?*

किसी ने कहा–*हमारी ये कोठरी अच्छी नहीं है।*

किसी ने कहा–*हमें एक ही टाइम नाश्ता मिलता है।*

किसी ने कहा–*हमें सुबह में नहाने के लिए गर्म पानी नहीं मिलता है।*

पर, किसी ने ऐसा नहीं कहा कि जेल से हमें मुक्ति दे दो, जबकि वो तो मुक्ति देने सक्षम था। हमारे हालात भी ऐसे हैं। ऐसे **महापुरुष हमारे सामने आ जाते हैं, तो जिसके लिए मनुष्य जन्म है, वो नहीं मांगते। महाराज** ने कहा था–***अन्यों का अवतरण कार्यकारण भाव से हुआ है, हमारा प्राकट्य तो जीवों को ब्रह्मरूप करने के लिए हुआ है।***

काकाजी ने क्या किया? ही रिवॉल्युशनाईज़्ड धी इन्सटीट्यूशन... एक्च्युअली प्रवीणभाई यश ले गए...

एवरी बडी हेज़ थिंकिंग कि अपनी एसोसीएशन को बढ़ाओ, लेकिन साथ में करने की बात, कलेक्टिव लीडरशिप की बात, काकाजी बोलते थे कि – ***'आई बीलीव इन ग्रुप, बट नॉट इन ग्रुपिज़म। लॅट अस वर्क टु गेधर।'*** इतना कार्य हुआ तो काकाजी बोलते थे–*मैं मेरे साथीदारों को धन्यवाद देता हूँ।* कांतिकाका, गोरधनकाका, पप्पाजी, साहेबजी, स्वामिजी सबको साथ लेकर। 1952 में काकाजी ने स्वरूप पहचान कराई, तब लोग उन्हें **'छोटे योगी'** के नाम से जानते थे। लेकिन, **काकाजी ने योगीजी की रीयल प्रसन्नता वाले पात्र–पप्पाजी, स्वामिजी, साहेबजी, महंतस्वामिजी – की भी पहचान करवाई। उनका ऐसा माहात्म्य समझा कर उस समय से मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम का-भक्तों का माहात्म्य समझाया। उस समय पर कुछ नहीं था, पर आज भक्तों के लिए गाड़ी, भक्तों के लिए खाना ये–वो सब। ही रीवोल्यूशनाईज़्ड धी होल सत्संग और उसका पूरा स्ट्रक्चर काकाजी ने बनाया...** नॉट ओनली धेट, उसके बाद 'गुणातीत समाज' जब विमुख हो गया, तो ज़ीरो थे। दोबारा वो सब करने **काकाजी और पप्पाजी ने जो सहन किया है, वो हमारी ह्यूमन लैंग्वेज में समझाना मुश्किल है।** करोड़ों धन्यवाद है कि ऐसा फंक्शन होता है। गुणातीत सत्पुरुष हमें वीज़न देते हैं कि काकाजी और पप्पाजी ने क्या किया है और इसीलिए ये शताब्दी है... आज करोड़ों धन्यवाद ऐसे महापुरुषों को है कि जो आकर हमें इससे लाभान्वित कर रहे हैं।

...**काकाजी** ऑलवेज़ सेइड–***आई बीलीव इन क्वॉलिटी, नॉट इन क्वॉन्टिटी।*** जैसे गुरुजी ने बताया – *अब सब सुनते हैं कि कृष्ण भगवान की भागवत सप्ताह में एक लाख आदमी आए ... दो लाख आदमी आए; लेकिन जब कृष्ण भगवान थे, भगवान ने जो लीला की उस समय कितने आदमी सामने होंगे?* तो मैं तो यह कहता हूँ कि पेरिस में इतने भक्त नहीं, इतने 'करोड़' भक्त बैठे हैं; क्योंकि आपने काकाजी और पप्पाजी का माहात्म्य, काकाजी और पप्पाजी की शताब्दी का मर्म समझा। मैं तो मानता हूँ कि हमारा खूब-खूब भाग्य है कि काकाजी और पप्पाजी की ऐसी शताब्दी हमारे हाथ आई...

ऐसे सब भक्तों को भी धन्यवाद है। लेस्टर से भी विमू मासी और उनका मंडल, मुकेश और उनका मंडल और रमणीकभाई तो कहते हैं कि मैं 6 साल से बाहर नहीं निकला। लेकिन, वो पुष्पाबेन पंचमतिया उन्हें लेकर आईं। तो वे बोले कि मैं इतना खुश हूँ कि मुझे दो दिन से ऐसा लगता है कि समाधि में-अक्षरधाम में ही हूँ। ऐसे सब काकाजी की प्रसन्नता वाले भक्त इकट्ठे हुए हैं...

एक बार 12 जून को **पप्पाजी** ने लिख कर दिया कि **काकाजी का** संस्था से **विमुख होना** दूसरे कारण से तो ठीक है। लेकिन, काकाजी ऐसा मानते थे कि **स्वामिनारायण भगवान के कई स्वरूप एक साथ मिलकर ज्यादा काम कर सकते हैं, उस प्रिंसीपल के लिए उन्होंने यह भी ग्रहण किया।** काकाजी ने खुद ऐसा जीवन जीकर हमें यह सब सिखाया। काकाजी और पप्पाजी का ऋण चुकाने इस उम्र में कल स्वामिजी डायरेक्ट एयरपोर्ट से यहां समैया के लिए आ गए। तो, ये सब सत्पुरुष हमें जीवन जीकर सिखाते हैं...

गुरुजी ने एक भजन बनावाया है कि – ***'हमें देख के हर कोई सोचे, कैसे होंगे काकाजी और पप्पाजी ...'*** तो, हमारा जीवन ही उनका परिचय बन जाए और उनका जैसा है वैसा माहात्म्य स्वरूप, जो अपरंपार–अगाध है, अगाध है, अगाध है, वो हम समझ पाएँ। आज ऐसी कृपा काकाजी स्वरूप हम पर करें यही प्रार्थना....

पू. दिलीपभाई भोजाणी (लंडन)

....एक बार पप्पाजी और बेन यहाँ आए। उन्होंने कहा कि एक शिविर करनी है। तो एक ऐसा हॉल हायर किया था। इतने गिने-चुने आदमी थे कि पप्पाजी स्टेज पर बैठे थे, तो उन्होंने कहा कि वहाँ क्यों बैठे हो, यहाँ स्टेज के ऊपर आकर बैठो। उस दिन की बात वो थी और आज हम यह देख रहे हैं। इतना फर्क हुआ कि **काकाजी और पप्पाजी** का कार्य देख सकते हैं। वे दोनों **आज देह से पृथ्वी पर नहीं हैं, लेकिन व्यापक स्वरूप में हमारे साथ हैं, सबके साथ हैं। ये मंच पर बैठे हुए सभी स्वरूपों के साथ हैं।**

दुनिया में कुछ भी नया होता है, वो सबको जल्दी से एक्सॅप्ट नहीं होता। 1966 में एक टाईम ऐसा था कि एक ही शब्द बोला जाता था–'विमुख, विमुख... आपको विमुख किया जाता है।' हम स्वामिनारायण भगवान से, योगीजी महाराज से कैसे विमुख हो सकते हैं? वो तो एक सुपरफीशियल स्टेटमेन्ट था। भगवान के साथ जो जुड़ने की बात है, वो अंदर की बात है। **काकाजी ने हमें सिखाया – धुन करो, प्राप्त करो। आज्ञा से अनुवृत्ति में जाओ।** स्वामिजी ने कल कहा कि पप्पाजी का स्टाईल 'संकल्प, भाव और क्रिया' का था। आज दोनों का कार्य हम देख सकते हैं। कल हमने सांस्कृतिक कार्यक्रम में देखा कि काकाजी ने कितना काम किया। काकाजी कहते कि मैं लंडन जा रहा हूँ, अमेरिका जा रहा हूँ, पेरिस जा रहा हूँ। उस समय एयरमाईल्स होते, तो काकाजी को सबसे ज्यादा एयरमाईल्स मिलते... धुन करो, धुन करो, धुन से सब काम होता है।

इंडिया में तो सब हैं ही। **भरतभाई, वशीभाई फॅन्टेस्टिक काम करते हैं।** अमेरिका में **दिनकर दादा– मैं तो उन्हें 'माहात्म्य का नायगरा धोध' मानता हूँ।** बस, एक ही रट लगाए हुए हैं कि सबको भगवान देने हैं। देह को भी तकलीफ होती होगी, फिर भी नहीं गिनते हैं। पप्पाजी यहाँ सात बार आए। 2001 में मैंने उनसे कहा – *पप्पाजी अब आपकी तबियत ठीक नहीं है, तो इस साल मत जाओ।* तो, मुझे हाथ जोड़ कर कहते हैं कि *मुझे जाना है।* ऐसे हैं हमारे प्रत्यक्ष स्वरूप! यहाँ आए, सबको संबंध दिया। आज हम देखें तो

प्रवीणभाई और उनकी टीम तो निष्ठा वाली है ही, लेकिन साथ-साथ मगनभाई, मितेषभाई, गुणवंतभाई, पिन्टुभाई, मगनभाई की फॅमिली, उनके साथ उनकी पुत्रवधु सब-सारी फॅमिली सत्संग में आ गई, निष्ठा वाली हो गई। **हम जो सर्वदेशीयता की बात करते हैं, उसका साकार एग्ज़ाम्पल यहाँ दिखाई देता है।** काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी के हेत वाले सब साथ होकर, एक मन होकर यह समैया मना रहे हैं। सिर्फ बातों में नहीं रह गया। कोई गाड़ी चलाने में जुटे हुए हैं, कोई किचन में जुटा है। वे लोग तो सेवा में ही हैं, उन्हें कुछ सुनने का चान्स नहीं है। लेकिन कैसे भी हमारा समैया सक्सेसफुल हो...

हम सब काकाजी-पप्पाजी के पीछे पागल हैं, लेकिन बुद्धि भी है कि क्या करना है। अल्टीमेट रिडम्पशन कैसे पाना है? **मोक्ष इन सब स्वरूपों के चरणों में है। वो हमें भलीभाँति पता लग गया है। बाकी तो ज्ञान कुछ काम नहीं आता है। निष्ठा पक्की और धुन–ये दोनों काम आते हैं।**

...हमारे सारे स्वामिनारायण संप्रदाय में बेन पहले स्वरूप हैं, जो 100 वर्ष की आयु तक पहुँचे। फर्स्ट स्वरूप टु रीच हन्ड्रेड। वहाँ (विद्यानगर) पारायण शुरू हुई। दो दिन के बाद मुझे लगा कि मैं पेरिस पहुँच सकूँगा, मुझे जाना चाहिए। टिकिट्स चेईन्ज कर लीं, फिर ज्योति बहन और दीदी को बताया कि मैं जा रहा हूँ। वे भी बहुत खुश हुए और बोले–*सबको हमारा जय स्वामिनारायण कहना।*

...भगवान की कृपा के सिवा नहीं होता है। कितना भी ट्राई, कोशिश करो, लेकिन भगवान साथ हैं, तो सब होता है। वे सब ठीक चला रहे हैं, कुछ नॅगेटिव नहीं हो रहा है। ऐसा मानना–उसके लिए स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेबजी, गुरुजी, हिंमतस्वामिजी सबके आशीर्वाद की हमें जरूरत है और वे देते भी हैं। दिनकरभाई, भरतभाई, शांतिभाई भी देते हैं। हमें ये आशीर्वाद लेकर चलना है...

काकाजी और पप्पाजी ने हम सभी को भगवान देने का कैसा कार्य कर दिया? उनका खुद का डिसीप्लीन ऐसा था, खुद का बॉडी लेंग्वेज ऐसा था, तो हम पर असर पड़ा। **काकाजी एग्री ओरियन्ट में डायरेक्टर थे। पैदल चलने की उनकी आदत ही नहीं थी। उस ज़माने में ब्यूक, कॅडीलॅक कार में घूमते थे। फिर एक दिन वह भी आया कि हाथ में धोती पकड़ कर लोकल ट्रेन पकड़ते थे। लेकिन, भगवान से भरा हुआ उनका क्या दिल और मस्ती थी? दोनों ने बहुत हार्डशिप देखी।** हम सबको ताड़देव की हिस्ट्री पता है। **दूर भाईखला जाकर बा सब्जी ले आती थीं।** लेकिन उन्होंने यह एग्ज़ाम्पल हमें दिया। **धे सफर्ड धी वर्स्ट, टु गिव अस धी बेस्ट। पप्पाजी** ने गुणातीत ज्योत की कितनी सारी शाखाएँ खोली। योगीजी महाराज ने सिर्फ इतना ही कहा कि *बहनें भगवान भजें तो क्या गलत है? शास्त्रीजी महाराज जोग दे देंगे।* बस, पप्पाजी के लिए इतना ही काफ़ी था। धी रेस्ट इज़ हिस्ट्री। **काकाजी-पप्पाजी की ज़मीन पर 'ज्योत' खोली** और आज हम सब उसका रिज़ल्ट देखते हैं। भगवान के संकल्प के बिना यह शक्य, पॉसीबल नहीं है। पप्पाजी ने खुद ने भगवान रखे थे, तो आज हमारा समाज 'संप, सुहृद्भाव और एकता' से आगे बढ़ रहा है।

हमें भी पता लग गया है कि **इन दो पुरुषों को कभी भूलना नहीं चाहिए।** गो बॅक टु धी हिस्ट्री। तो, 28 मई को चिट्ठी मिलती है कि आपको 'विमुख' किया गया है और... चार दिन के बाद 1 जून को 'ज्योत' की

स्थापना होती है। हिस्ट्री में कभी ऐसा नहीं हुआ है। हमें तो किसी एक जगह से रीमूव किया हो-निकाला हो, तो एक साल तक तो हम शॉक में– डिप्रेशन में रहते हैं कि ये सब क्या हो गया। लेकिन, भगवान का काम कभी स्टॉप नहीं होता है। वो चलता ही रहता है, चलता ही रहता है। **दोनों विज़नरी पुरुष थे। दुनिया में हमारे लिए ही आए थे।** छोटे थे, तब बोलते थे कि हमें अक्षरधाम पृथ्वी पर लाना है; लाकर दिखाया। हमारे लिए यह बहुत गर्व की बात है और हम सब भी वही कोशिश करते हैं कि दोनों हमारे दिल में हमेशा रहें, हम उनकी आज्ञा के अनुसार जीएँ।

तो, आज ये शुभ अवसर पर सब स्वरूपों के चरणों में हम सभी की यह प्रार्थना है कि सोनाबा के शब्दों में बोलें तो हम तो हां-हां गड़थल (जी हज़ूरी) कर रहे हैं। आप हमें बल देना, हमारे साथ रहना और सब 'होलाउपाड़' करके अच्छी तरह काकाजी, पप्पाजी प्रत्यक्ष स्वरूपों की शोभा बढ़ाएँ। दिन-प्रतिदिन आध्यात्मिक प्रगति करते जाएँ– ऐसी उनके चरणों में प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

पू. दास स्वामिजी (हरिधाम)

...काकाजी और पप्पाजी के बारे में मैं मेरी पर्सनल कक्षा से बात करूँ तो त्रिकाल में जन्मों तक उनका ऋण अदा नहीं कर सकता... पहली ही नज़र में काकाजी ने मेरे पिताश्री से कह दिया कि *ये दो तो हमारे हैं, योगीबापा-ठाकुरजी के हैं...* हमने तब योगीबापा के दर्शन भी नहीं किए थे। स्वामिनारायण संप्रदाय क्या है, वह भी मालूम नहीं था। पर, वो चैतन्यदर्शी पुरुष को मालूम था कि हमें कैसा जीवन जीना है और किसके सान्निध्य में रहना है।

पप्पाजी की बात करूँ तो 8 अगस्त 1964 के दिन प्रभुदासभाई ने योगीबापा की आज्ञा से चिट्ठी लिख कर भेजी थी... स्वामिजी ने लिखा कि *तेरी पढ़ाई पूरी हो गई होगी, तो तू वढवाण आ जा, बापा तुझे याद कर रहे हैं।* स्वामिजी से बापा ने वह काग़ज़ मांग लिया और उसमें चार पंक्ति लिखी थी कि *तुम दादुभाई और बाबुभाई के पास ताड़देव जाना और उनसे कहना कि योगी बापा मुझे बुला रहे हैं। मैं आपके आशीर्वाद लेने-मिलने के लिए आया हूँ।* काकाजी तो ताड़देव थे नहीं। पर, पप्पाजी विराजमान थे। वे चैतन्यदर्शी पुरुष; उन्होंने तुरंत कह दिया कि *इस काग़ज़ का अर्थ यह है कि दोबारा तुझे मुंबई की धरती नहीं आना है और योगीबापा जब कहें, तब दीक्षा लेने के लिए बैठ जाना...* **इन पुरुषों का ऋण कैसे अदा करें? काकाजी और पप्पाजी ऐसे हैं कि 365 दिन हम अनंत जन्मजयंती मनाएँ-गुणगान गाएँ तो भी कम है...**

काकाजी बहुत निरपेक्ष, निर्मत्सर दिव्य स्वरूप थे... **काकाजी ने जिस निरपेक्षभाव से जीवन जिया है,** उसका स्वामिजी ने बहुत सुदंर वर्णन किया था और **उसका मूर्तिमान दृष्टांत कोठारीस्वामिजी हैं। उनका लगाव टोटली काकाजी के साथ।** पर, जैसे ही वे 'पुरुषोत्तमचरणस्वामी' बने, तुरंत उसी दिन काकाजी ने कह दिया कि *मैं गृहस्थ हूँ, अब तुम बार-बार ताड़देव नहीं आ पाओगे, तो तुम्हें दूर रह कर अब सेवन करना है, आज्ञा का पालन करना है। तुम महंतस्वामी की आज्ञा में रहना। योगीबापा भले कहीं भी*

विचरण करते हों, लेकिन महंतस्वामी तुम्हारे लिए योगीबापा का स्वरूप हैं। कोठारीस्वामी ने मन-बुद्धि को एक ओर रख कर ऐसा ही सेवन किया।

यूँ, **काकाजी जहाँ-जहाँ गए और रहे व जिस स्वरूप की निश्रा में मुक्त साधना करते थे, उसी स्वरूप में उन्हें जोड़ा है। अक्षरभुवन में आते, तो महंतस्वामी की अपरंपार महिमा गाते। सोखड़ा आते तो स्वामिजी तुम्हारे लिए शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज का स्वरूप हैं, ऐसी महिमा गाई। माणावदर जाते तो हरिभाई साहेब में जोड़ते। विद्यानगर जाते तो अश्विनभाई, शांतिभाई सभी साक्षी हैं कि साहेब में ऐसे सर्वोपरिभाव से जुड़ जाएँ–ऐसा उन्होंने बताया। उन्होंने किसी को भी अपने में जोड़ा नहीं।** वर्ना, कोठारीस्वामी ने बालक बन कर स्वामिजी के हृदय में जो स्थान प्राप्त किया है, वह कर न सकते। तो, जिस प्रकार से काकाजी को निरपेक्षभाव था–**अपने में किसी को जोड़ा नहीं और अपनी हाज़िरी में उन्होंने अपना कोई स्थान भी नहीं बनाया–ऐसे पुरुष का हम क्या ऋण चुका सकेंगे...**

अंकुर की बात करता हूँ, बड़ों के समक्ष उसकी महिमा, भक्ति, समर्पण के विषय में कहने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। मैंने कई सालों के बाद अंकुर को देखा। मैंने यूँ ही अंकुर से पूछा–*अंकुर, तूने काकाजी के आख़िरी दर्शन कब किए थे।* ड्राईविंग करते-करते 27 वर्ष का जवान बेटा अंतर के भाव से सहज बोल उठा–*दासस्वामी, काकाजी के दर्शन मैंने कब किए, वह तो मुझे याद नहीं है। पर, मैं आप में काकाजी के साक्षात् दर्शन कर रहा हूँ।*

आप मानोगे नहीं, मेरी आँखों में आसूँ आ गए और मैं रो पड़ा। उसके माँ-बाप ने उसका कैसा पालन-पोषण किया होगा! दिनकरभाई, बापु, भरतभाई, वशीभाई ने उसके अंतर में कैसा सिंचन किया होगा? वो जिसके भी साथ सर्वोपरिभाव से जुड़ा है, ऐसे काकाजी ने कैसा सिंचन किया होगा? **लहू की एक-एक बूंद में सर्वदेशीयता और गुणातीत ज्ञान का कायदा किसी ने सिखाया हो, तो वो काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी ने सिखाया है।** उसका पोषण दिनकरभाई, बापु, भरतभाई, वशीभाई, निर्मलस्वामिजी, गुरुजी, कोठारीस्वामी, प्रेमस्वामी, फुआ, शांतिभाई, अश्विनभाई, निष्कामस्वामी जैसे पात्रों द्वारा निरंतर हो रहा है। मैं तो अपने आपको परम भाग्यशाली मानता हूँ...

विद्यानगर में एक प्रोफेसर चंद्रकांतभाई हैं। वे एक बार हरिधाम आए थे। उन्होंने मुझसे कहा–*मुझे आपसे आपके साधु जीवन की लंबी हिस्ट्री नहीं सुननी। दो वाक्यों में आपके संतजीवन का सार कहो।* मैंने उनसे कहा–

योगीजी महाराज के प्रेम के कारण साधु हुए और काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामिजी के प्रेम के कारण साधु रहे। यही मेरी क्वालीफीकेशन, प्रमाण पत्र, लायकता, योग्यता, पात्रता है...

कल यहाँ बैठा था, तो लगातार दो दिन से मुझे 1978 में षण्मुखानंद हॉल में आयोजित हीरक उत्सव याद आ रहा है। काकाजी, पप्पाजी के प्रति स्वामिजी और अक्षरविहारीस्वामिजी ने गुरुभक्ति अदा करने में कोई कसर छोड़ी नहीं। हम देखते हैं इतने वर्षों के बाद भी कैसे अंतर के भाव से दस-दस पंद्रह बार रिपीट करते हैं।

हमें भले ही लगता हो, स्वामिजी ने ऐसी प्रकृति ग्रहण भी की है कि दस-दस, बारह-बारह बार रीपिटेशन करते हैं। लेकिन–

कल जो रिपीटेशन था, वह बहुत हेतुपूर्वक था। बार-बार मन-बुद्धि से परे ठोक-ठोक कर बिठाना चाहते थे कि जो पुरुष हमें मिले हैं, उनके प्रति हमारी जिम्मेदारी है, वारसा दिया है कि खींचातानी नहीं करनी।

28 मई को जब ठहराव आया, तब अनुपम मिशन या सोखड़ा का मंदिर नहीं था। दिल्ली या सांकरदा का मंदिर नहीं था, कुछ भी नहीं था। सभी एक थे और आज भी एक ही हैं। पर, स्वप्न में हम ऐसा अलगाव महसूस न करें। अलगाव रखेंगे, तो भले ही काकाजी और पप्पाजी के कितने भी ऐसे उत्सव मनाएँगे, लेकिन उनके अंतर में स्थान नहीं मिलेगा।

आज इस प्रसंग पर प्रार्थना है कि स्वामिजी, काकाजी, पप्पाजी, साहेब, अक्षरविहारीस्वामिजी, गुरुजी, निर्मलस्वामी, दिनकर अंकल के अंतर की जो भावना है, उसे हम समझें।

और... **जब अंकुर ऐसा कह सकता है कि दासस्वामी मुझे आप में काकाजी दिखाई देते हैं, तो इतने वर्ष में मेरी क्या जिम्मेदारी होती है, वह मुझे विचारना है, हम सभी को विचार करना है...**

पू. किशोरभाई मास्टर्स (लंडन)

...प्रवीणभाई पहले से ही सर्वदेशीय हैं; काकाजी ने हमें यही सीख दी है कि सर्वदेशीय तुम्हें बनना ही पड़ेगा...

जब काकाजी लंडन आए थे, तो दो दिन पहले ही अश्विनभाई (पोपट) का फोन आया कि काकाजी आ रहे हैं, एक बड़ी सभा है तो आप आना... काकाजी का जोग हुआ। **काकाजी से मिलने पर ही 'लव एट फर्स्ट साईट' हुआ।** तब मुझे काकाजी का बहुत माहात्म्य नहीं था, इसलिए समझ नहीं पाया कि वे क्या कहना चाहते हैं? पर, **काकाजी जो बीज बोकर गए, तो मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे काकाजी के रूप में पप्पाजी, स्वामिजी, साहेब और मंच पर जो भी विराजमान हैं, वे मुझे मिले।** सभी का प्रेम मुझे अतिशय मिला है।

...सतीषभाई चटवाणी ने उपासना की बात की और साहेब दादा देश-विदेश में उपासना की बात फैला रहे हैं। उपासना समझने में बहुत समझदारी चाहिए। काकाजी के समय भी ऐसा था और आज भी वैसी बात है कि बहुत कम समझ पाते हैं। काकाजी और पप्पाजी के समय में बापा को कितनों ने पहचाना? वेरी फ्यू। शास्त्रीजी महाराज कह कर गए थे कि ***मैं यानि योगी, योगी यानि मैं।*** पर, उस समय भी कई कहते कि *योगीजी महाराज क्या कर पाएँगे?* **बेन** का दृष्टांत है–जींजा में काकाजी जब पहली बार आए, तो सब शास्त्रीजी महाराज को ही मानते थे। लेकिन, **काकाजी के कहने पर बेन ने एक्सॅप्ट कर लिया, तो वे गुणातीत स्थिति पर पहुँच गईं। सोनाबा ने शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी और पप्पाजी का सेवन किया।** अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना का यह एग्ज़ाम्पल है...

आज काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी के दिन प्रार्थना करते हैं–स्वामिजी, साहेब, दिनकरभाई, गुरुजी, अक्षरविहारीस्वामिजी के चरणों में कि हमें ऐसा बुद्धियोग दो कि हमें अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना सहजता से समझ आ जाए। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. बापु (शिकागो)

...**काकाजी** का एक सूत्र था–***धर्म और सनातन धर्म का मूल 'एकता' है, 'सुहृद्‌भाव' उसकी शक्ति है और आत्मीयता उसकी 'सौरभ' है।***

बापा ने भी हमें सूत्र दिया है–***'संप, सुहृद्‌भाव और एकता...'***

'सर्वं खल्विदं ब्रह्म...' कारियाणी 7 के मुताबिक 'वासुदेवः सर्वमिति' तक तो न पहुंचे, लेकिन इतना तो पहुंचे कि जिसने भगवान को प्रसन्न किया है, ऐसे स्वरूप के अंदर झांकने का मुझे कोई अधिकार नहीं है...

'एकता' ही काकाजी की तान है। काकाजी के साथ मैं तो 20 साल रहा। काकाजी बोलते–*मेरे वचन का पालन किया, तो मैं राजी। लेकिन, कांतिकाका को राजी किया तो मैं डबल राजी।* इस तरह वे हमें महिमा समझाते थे।

...काकाजी और पप्पाजी का संबंध हमें मालूम है। काकाजी, शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज के हाथ-पग बनकर आए थे, अनादि के थे। ***'मुझे बहनों का यह काम करना है और मेरा भाई आकर मेरा साथ देगा'*** – तब पप्पाजी (बाबुभाई) नहीं आए थे... काकाजी की समाधि का समाचार मिला, तो पप्पाजी से रहा नहीं गया। लोगों ने समाधि की अवस्था को इस तरह से फैलाया था कि *दादुभाई पागल हो गए हैं। साधु लोगों ने उनके ऊपर कुछ जादू-टोना कर दिया है, जंतर-मंतर कर दिया है और वे पागल हो गए हैं, सब उड़ा देंगे...* ऐसा बोलते थे। सो पप्पाजी, काकाजी को देखने के लिए आए थे। फिर उन्होंने काकाजी को सहयोग दिया।

काकाजी की समाधि आम समाधि नहीं थी, वो संपूर्ण रूपान्तरण था। स्वामिजी कहते हैं कि ***(काकाजी को) अक्षरब्रह्म का देह दे दिया, ऐसा अक्षरब्रह्म का देह पाकर भगवान को धार कर वे काम करते थे।***

काकाजी मुंबई पहुँचते नहीं थे कि उससे पहले बापा उन्हें बुला लेते थे। भक्तों के सुख-दुःख में शामिल होकर - भक्तों के सुहृद् बन कर जो समाज खड़ा किया, उसमें उन्होंने हमारी पहचान कराई... सभी के अंदर उन्होंने इतनी महिमा भरी कि **गुणातीत ज्योत बनी तब बहनों की सेवा करने के लिए ऐसे युवक भी तैयार रहे और हमें विमुख किया, तब संतों को कोई कमी न आए, इस हेतु उनका तैयार किया हुआ गुणातीत समाज अखंड सेवा में रहा।**

पप्पाजी की भी समझदारी कैसी कि जब विमुख किया, तब ऐसा बोले – ***'विमुख नारायण की जय!'***

काकाजी कहते थे–***धीस इज़ धी हॅपीएस्ट डे ऑफ माय लाईफ, क्योंकि बापा को हमारा विश्वास आया कि यह मेरा काम संभालेगा...***

हम बात करते हैं गुणातीत ज्ञान की, 'गुणातीत' होना है। अभी तो शब्दातीत नहीं हुए, शायद शब्दातीत हुए होंगे तो भावातीत नहीं हुए। तो फिर 'गुणातीत' की बात ही कहाँ? यह बहुत मुश्किल बात है...

प.पू. साहेबजी (ब्रह्मज्योति)

[‘बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव’ के दौरान पेरिस में प.पू. गुरुजी ने जब प.पू. साहेबजी के आशीर्वाद सुने, तो अगले ही दिन दिल्ली फोन पर प.पू. दीदी को मॅसेज भिजवा दिया कि मैं लौटूँ तब तक में प.पू. साहेबजी के आशीर्वाद वर्बेटीम टाईप करवा कर रखना...

और... प.पू. गुरुजी की आज्ञानुसार, 20 अगस्त को प.पू. गुरुजी के लौटने के बाद, उनकी थकान दूर होने की राह देख कर प.पू. दीदी ने 22 को ध्वनिमुद्रण से टाईप किया प.पू. साहेबजी का आशीर्वाद प.पू. गुरुजी को भिजवाया। प.पू. गुरुजी ने भी चॅक करके तुरंत लौटा दिया था। तब से लगातार सभी मुक्तों के उद्‌गार व स्वरूपों के आशीर्वाद ‘भगवत् कृपा’ में संकलित होते रहे। परंतु, दीवाली के बाद मंदिर की गतिविधियों में सभी खूब व्यस्त होने के कारण ‘भगवत् कृपा’ का नवंबर-दिसंबर अंक प्रकाशित ही नहीं हो पाया। तत्पश्चात् जनवरी-फरवरी के अंक में प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के आशीर्वाद द्वारा उनके अभिप्राय-रहस्य से उनके प्रागट्‌योत्सव की फलश्रुति पाई!

सभी स्वरूपों के मुख से अकसर सुनते हैं– ‘सब कुछ ब्रह्मनियंत्रित है...’ सो, अबकी बार पेरिस उत्सव की स्मृतियों की मानो पूर्णाहुति के रूप में, अनुक्रम से प.पू. साहेबजी के आशीर्वाद प्राप्त करने का जब अवसर आया है, तब ***16 मार्च को होली–अनादि महामुक्त भगतजी महाराज की प्राकट्‌य तिथि*** *और* ***17 मार्च को धुलेन्डी–प.पू. साहेब की प्राकट्‌य तिथि*** *हमें निहाल करने- आशिष बरसाने आ रही है।*

सच, ***प.पू. गुरुजी ने प.पू. साहेबजी के इस आशीर्वाद की खूब गरिमा बताई*** *और इसकी प्रूफ रीडिंग के बाद बोले भी कि* ***पुराने-नए हम सभी को इस आशीर्वाद का मनन-चिंतन करने जैसा है। कई बार मैं जो बात करना चाहता हूँ, वो मैं ठीक से नॅरेट नहीं कर पाता। वही बात साहेब सरल भाषा में बड़ी सचोटता से समझा देते हैं। यही फर्क होता है ‘पढ़े-लिखे, टॅलेन्टेड भगवत्स्वरूप संत और कॉमन लेवल के व्यक्ति के बीच...’***

सो, जब प.पू. गुरुजी ने प.पू. साहेबजी के इस आशीर्वाद पर इतना ज़ोर दिया है, तो ऐसे अनमोल आशीर्वाद में निहित आध्यात्मिक रहस्यों-प्रसंगों द्वारा स्वरूपों को राजी कर लेने की करामात तो हासिल करें ही, साथ ही गुणातीत स्वरूपों ने जिस हेतु हमें अपनी सेरेछाया दी-अपनाया उस मुद्दे को समझें।]

...सच में, दो दिन से प.पू. काकाजी-प.पू. पप्पाजी का शताब्दी महोत्सव बहुत अच्छा मनाया जा रहा है। आज पू. वशी ने शुरुआत की और पू. दिलीपभाई, सतीषभाई, दासस्वामी, महेन्द्र बापु–कइयों ने बहुत अच्छी बातें की; उसमें **सतीषभाई** को वाकई अभिनंदन!

गुणातीतानंदस्वामिजी ने कहा है–

आज का आया हुआ हो या कल का आया हुआ हो, सालों से सत्संग करता हो, हमारे साथ रहा हुआ हो या न रहा हो, लेकिन हमारे रहस्य को पाकर–हमारे रहस्य को जान कर जीवन जीता है, ऐसे मुक्तों पर हमारी प्रसन्नता बरसे बिना रहती नहीं।

पू. स्वामिजी के योग से सतीषभाई सत्संग में आए और ऐसे दिव्यभाव व निर्दोषभाव से सेवन किया कि काकाजी-पप्पाजी के साथ वे रहे नहीं हैं, काकाजी के दर्शन भी नहीं किए, फिर भी काकाजी-पप्पाजी जिन

बातों-जिस रहस्य के लिए जीवन जिए और हमें जो देना चाहते थे, उस बारे में खूब अच्छी बातें उन्होंने की। हमें यह पकड़ना है।

महाराज और गुणातीत अक्षरपुरुषोत्तम के साकार स्वरुप–ऐसे साधु के द्वारा प्रकट हैं और रहने वाले हैं। पर, जब वे प्रकट हों, तब उन्हें पहचान लें। वे जब प्रकट हों, तब उनकी प्रसन्नता प्राप्त कर लेनी – यह मेरी-तुम्हारी सभी की साधना है। काकाजी-पप्पाजी ऐसा जीवन जिए। स्वामिनारायण भगवान ने खूब कृपा की और... दोनों को एक ही घर में जन्म दिया। अपना कार्य करने के लिए दोनों को साथ में लेकर आए और हम उनका जीवन जानते हैं। दोनों को एक-दूजे के प्रति असाधारण प्रेम। एक-दूजे के लिए क्या न हो ? भ्रातृभाव का अद्‌भुत दर्शन! करमसद में प्रकट हुए। राजकीय क्षेत्र में भी ऐसी एक बंधुजोड़ी करमसद में प्रकट हुई थी –सरदार और विट्‌ठलभाई। उन्होंने भारत की राजनीति में अद्‌भुत कार्य किया। दोनों भाइयों ने एक-दूजे के पूरक बन कर अखंड भारत का सर्जन किया। इस तरह, **आध्यात्मिक क्षेत्र में काका और पप्पा दोनों सगे भाई के रूप में प्रकट हुए और व्यक्ति-व्यक्ति को मंदिर बनाने का व सभी को देहभाव से परे करके सुखी करने का महाराज और गुणातीत के संकल्प को साकार करने के लिए – सच काकाजी और पप्पाजी ने अपना जीवन शास्त्रीजी महाराज व योगीजी महाराज के पीछे याहोम कर दिया।**

मुझे तो पहले से बापा के प्रति असाधारण लगाव। मैं यह प्रसंग कई बार दोहराता हूँ। विद्यानगर में बापा पधारे थे। कॉलेज के हॉल में ऐसी बड़ी सभा रखी थी। कई विद्यार्थियों को बापा से 'वन टु वन' मिलना था। सो, मैंने बापा से बात की।

बापा ने कहा–*सभी को कल आणंद मंदिर में बुला लो।*

चालीस-पचास युवक आणंद मंदिर आ गए। आठ बजे आरती के बाद तुरंत एक-एक करके बापा मुलाकात के लिए बुलाने लगे। दस-साढ़े दस, ग्यारह बजे तक सभी से बात हो गई। अंत में मैं बापा के पास गया कि मुझे बात करनी है।

वे बोले–*तू तेरी बात छोड़, तू मेरी बात सुन।* बोले–*दादुभाई को बुलाओ।*

सो मैं दादुभाई को बुलाने के लिए जा रहा था।

तो बोले –*दादुभाई को बुलाने के लिए किसी लड़के को भेज, तू मेरे पास बैठ।*

एक लड़का गया। क्योंकि सभा हो चुकी थी और बापा ख़ानगी करने के लिए बैठे थे, सो सभी चले गए थे। काकाजी महंतस्वामी–मणीकाका के घर ठहरे थे। काकाजी को आने में पाँच-दस मिनिट लगे। बापा ने मुझे बैठा कर कहा– देखो, दादुभाई आएँगे तो तुम दादुभाई से ऐसा-ऐसा कहना – यूं बापा ने सिखाया। इतने में काकाजी आकर बैठे। योगीबापा जैसे दिव्य पुरुष बैठे हों, तो उनकी हाज़िरी में कैसे कुछ कह सकते हैं? बापा के सामने बैठ कर मैं तो दर्शन करता रहा। सो, बापा हँसे और **दादुभाई व मेरा हाथ पकड़ कर दोनों को इकट्‌ठा करके बापा बोले– *दादुभाई, अब इन युवकों का काम आप अपने हाथ में लो।***

तत्पश्चात् मैंने देखा कि काकाजी महीने में दो बार विद्यानगर आते। हमें बापा के प्रति असाधारण लगाव, बापा की सेवा करते, बापा के पास जाते और हरिप्रसादस्वामिजी का संग था। हरिप्रसादस्वामिजी ने योगी बापा

के माहात्म्य का सिंचन किया था; सो बापा को राजी करने के लिए हम हर प्रकार से सेवा करते। काकाजी का जोग हुआ, हरिप्रसादस्वामी ने भी दादुभाई की महिमा गाई थी।

काकाजी ने विद्यानगर आकर योगीजी महाराज की अपरंपार महिमा गाकर युवकों में ऐसा माहात्म्य भरा कि अश्विनभाई, शांतिभाई, रतिभाई जैसे अधिकतर युवकों को ऐसा हो गया कि *'बापा के लिए क्या न हो सके'*–ऐसा समर्पणभाव दादुकाका ने प्रगटाया। पढ़ने वाले टॅलन्टेड और शक्तिशाली लड़के थे; लेकिन सब कुछ छोड़ कर–कॅरियर छोड़ कर–***'बापा जो कहें, वो करना है'*** **ऐसा भाव दादुकाका के योग से, दादुकाका की बातें और साथ रहने से हुआ।**

काकाजी भी उनमें लीन थे–बापामय थे। छात्रालय का उद्‌घाटन हुआ और '**गुणातीत ज्योत**' का खातमुहूर्त हुआ। पप्पाजी रहने के लिए आए और काकाजी ने मुझे बुला कर कहा–*पप्पा यहाँ रहने वाले हैं, तुम सब उनकी आज्ञा में रहना।* बापा ने दादुभाई को सौंपा, दादुभाई ने पप्पाजी को सौंपा। उस समय कई कितनी बातें करते थे; मुझे आश्चर्य होता है।

भगवान को राजी करने का यदि हृदय में भाव हो और अपने ईष्टदेव-हम जिस गुरु से जुड़े हुए हैं, उनमें लयलीन होने की झंखना हो, तो हमें कुछ भी बाधारूप नहीं होता, परेशानी नहीं होती।

सभी कहते हैं कि काकाजी और पप्पाजी की रीति भिन्न थी, पर हमें ऐसा कभी नहीं लगा। बापा ने काका को सौंपा, तो उन्हें योगीजी महाराज का स्वरूप मान कर सौ प्रतिशत उनकी आज्ञा मानी और काकाजी ने पप्पाजी के पास रहने के लिए कहा, तो **सौ प्रतिशत योगी का स्वरूप मान कर, बापा के प्रति जो निर्दोषभाव था, वही काकाजी-पप्पाजी दोनों के प्रति भी अपने आप रहा। उन दोनों ने भी वैसे ही भाव से हमारा मार्गदर्शन किया।** वैसे ही भाव से हमारे साथ ही रहे।

दोनों का जीवन भी अद्‌भुत था। योगीजी महाराज भगवाधारी थे। काकाजी और पप्पाजी ने भगवा वस्त्र नहीं पहने थे। पर, बापा जो कि अक्षरपुरुषोत्तम का तात्त्विक स्वरूप थे, सो बापा के साथ रहने से जो आनंद मिलता, युवकों को उनके साथ रहने पर ऐसा लगा कि हम बापा के साथ ही हैं। हमें वे संसारी दिखते थे, पर संसार से उन्हें विरक्तभाव था। प्रार्थना करके 51 साधुओं में **अक्षरविहारीस्वामिजी** को साधु बनाया और दूसरे बेटे **प्रफुल्ल** को हम हमारे साथ ले गए। उनकी मम्मी को उससे खूब प्रेम, सो उनके लिए सब कुछ तैयार करके रखा था कि यदि शादी करे, तो घर-बार बसा सकें। पप्पाजी से पूछा। पप्पाजी बोले – *भगवान भजने के सिवा कुछ करने जैसा ही नहीं है।* यह हमारा असली साधु लड़का है। 'ब्रह्मज्योति' में रसोई की सेवा संभालता है, वहाँ से कहीं जाता ही नहीं। उसे पूछा कि तुझे आना है, तो मना कर दिया। अश्विनभाई ने अमेरिका से फोन किया कि इस फ्लाईट में तेरी बुकिंग कराई है, तो लंडन होकर पेरिस आ जाना। सो, स्वामी, किरण, पंकज सभी के साथ आ गया। ये व्रतधारी भाई अश्विनभाई व शांतिभाई के साथ सेना में जुड़ गया। दिखाई नहीं पड़ता, पर उसे पप्पाजी के प्रति असाधारण प्रेम। फिर भी, उसे पप्पाजी के साथ किसी भी दिन बैठा हुआ नहीं देखा होगा। पप्पाजी के प्रति बेहद्‌ असाधारण प्रेम। पप्पाजी ने जो कहा हो, उतना ही वो करे। **पप्पाजी** ने उसे कहा–***सेवक की अदा से रहना।*** नॉर्मली क्या होता है कि ऐसे बड़े पुरुष के बेटे का सभी मान-सम्मान बहुत करते हैं, पैर छुएँगे कि अहो! पप्पाजी का लड़का, पप्पाजी का लड़का। हमें कोई कह दे कि पप्पाजी के वारिसदार हो, काकाजी के वारिसदार हो, इतने

में तो फूले समाते नहीं। ये तो पप्पाजी का ख़ुद का बेटा है। लेकिन, पप्पाजी ने कहा –***गुणातीतभाव प्रगटाना हो, तो सेवक बन कर रहना।*** यह लड़का व्रतधारी भाइयों में याहोम हो गया है। **इसे पप्पाजी की प्रसन्नता का पात्र बनना कहा जाए।** पप्पाजी ने एक आज्ञा की, उस वचन से चिपके रहकर वह जीवन जी रहा है। इसलिए गीता या भागवत् की सप्ताह नहीं बिठानी पड़ती। यूँ, दोनों बेटों को उन्होंने भगवान के चरणों में रख दिया और अपना सब कुछ 'गुणातीत ज्योत' को सौंप दिया।

पहले तो पप्पाजी मुंबई रहते थे। एक बार बापा का कार्यक्रम खेड़ा के पास रढ़ु-पुरुषोत्तमपुरा गाँव में था। वहाँ मोटास्वामी के लड़के - रमणभाई और सब वहाँ रहते थे। बापा ने काकाजी से कहा–*आप और ये युवक पुरुषोत्तमपुरा आएँ।* सो, हम काकाजी के साथ पुरुषोत्तमपुरा गए। पप्पाजी अमदावाद आए हुए थे। पप्पाजी को वहाँ से पुरुषोत्तमपुरा बुलाया। पप्पाजी और काकाजी के मधर–दीवाळीबा ख़ूब बीमार थीं। कभी भी शरीर छोड़ दें, ऐसी हालत थी। बापा अंदर के कमरे में भोजन कर रहे थे। हम सब बाहर खाना खाने बैठे थे।

दादुभाई ने पप्पाजी से कहा –*दीवाळीबा इतने बीमार हैं, तो आप यहाँ क्यों आए ? आप वहाँ थे, इसलिए तो मैं यहाँ आया था।*

पप्पाजी ने कहा –*योगीबापा की मुझ पर डाक आई कि काग़ज़ मिलते ही तुम पुरुषोत्तमपुरा आ जाओ। सो, मैं तो निकल पड़ा।*

पप्पाजी ने पूछा –*पर, मियाँ तुम यहाँ क्यों आए थे ?*

दोनों का संबंध ऐसा था।

काका ने कहा–*मैं क्या करूँ? मैं अमदावाद से निकलने वाला ही था कि बापा ने कहा तुम हमारे साथ पुरुषोत्तमपुरा चलो, सो मैं यहाँ आ गया।*

पप्पाजी ने कहा–*दादुभाई, अक्षरधाम में दीवाळीबा को ले जाने वाले अंदर मज़े से भोजन कर रहे हैं। तो, हम भी मज़े से भोजन करें।*

तुम विचार करो कि अपनी माँ धाम में जाने वाली हो, तब कौन ऐसी बातें करे ? **देहभाव के संबंध छूट गए हों, देहभाव से परे जो वर्तता हो और सच में जो प्रभु रूप हो गया हो, वही ऐसी बातें कर सकता है।** वर्ना तो नहीं ही करे, यदि कोई ऐसा बीमार हुआ हो। पप्पाजी कहते थे कि आराम से लाडू खाएँ और... भोजन के तुरंत बार ख़बर आई कि दीवाळीबा ने देह छोड़ दिया है। इनके जीवन के ऐसे प्रसंगों से ख्याल पड़ता है कि उन्हें तनिक भी जगत चिपका नहीं था।

गुणातीतभाव किसे कहा जाए ? गुणातीतानंदस्वामी अक्षरधाम; और जिनमें भगवान अखंड रहे हैं ऐसे साधु मेरे रहने का धाम हैं, ऐसा महाराज ने कहा। बापा से किसी ने प्रश्न पूछा–*बापा, गुणातीत यानि गुणातीतानंदस्वामी या क्या ?* तो बोले–*गुणातीत 'भाव' है। सत्व, रज, तम से परे – तीन देह, तीन अवस्था, तीन गुण से परे जिसका जीवन हो, वह गुणातीतभाव है।*

काकाजी के साथ बहुत रहना मिला और पप्पाजी के साथ तो आख़िर तक रहा। उनमें अखंड गुणातीतभाव का दर्शन होता।

गुणातीतभाव का दर्शन यानि ? उसका रीज़ल्ट क्या ? मतलब कि जो उनके साथ जुड़े हों, उनकी आज्ञा पालते हुए उनके सिद्धांत के मुताबिक जीवन जिएँ, वे सभी गुणातीत हों जाएँ। योगीबापा पूछते– *पटेल का लड़का*

ब्राह्मण कहा जाए ? पटेल का लड़का पटेल, बनिये का लड़का बनिया, ब्राह्मण का लड़का ब्राह्मण। ऐसे ही **गुणातीत की प्रसन्नता का जो पात्र बने, वो गुणातीत हुए बिना रहे ही नहीं।** वह गुणातीत की प्रसन्नता। जैसे दासस्वामी ने कहा – *अंतर की प्रसन्नता कोई सस्ती नहीं, बाज़ार या हाट में मिलती नहीं।* लगता ऐसा है कि यह बात सभी के लिए है , पर याद रखना – गुणातीत पुरुष कभी कुराजी होते नहीं, अखंड राजी ही रहते हैं। तुम कुछ भी करो, फिर भी वो राजी, राजी और राजी। कुराजी तब होते हैं कि एक तो तुम भगवान को निराकार कहो और भक्तों के अभाव-अवगुण की बातें करो, तो कुराजी होते हैं। बाकी, तुम सारी दुनिया में उथल-पुथल मचा दो, तो भी भगवान कुराजी नहीं होते, राजी, राजी और राजी। **पर, इतने से जीव का दारिद्र नहीं जाएगा। उनके अंतर की प्रसन्नता यदि प्राप्त हो जाए, तो अपने भीतर का ढाँचा बदल जाए, ट्रांस्फॉर्मेशन हो जाए।** अंतर की वह प्रसन्नता कोई सस्ती नहीं है। उसके लिए मुझे और आपको याहोम हो जाना पड़े, समर्पित हो जाना पड़े। **काकाजी-पप्पाजी सच में बापा के वचन में याहोम हो गए, समर्पित हो गए। सब कुछ था, फिर भी कुछ भी नहीं था। मुझे मेरे प्रभु-मेरे इष्टदेव के सिवा कुछ नहीं– ऐसे भाव से जीवन जीते हुए हम सभी ने देखा है-दर्शन किया है। ऐसे उनके गुणातीतभाव के कारण गुणातीत समाज का सर्जन हुआ है।**

कल स्वामिजी ने संप, सुहृद्भाव और एकता की अद्‌भुत बात की। हम सभी को यदि संप, सुहृद्भाव, एकता रखनी हो, तो बापा ने उपाय भी बताया कि किसी भी झंझट में जाए बिना **जिस गुणातीत सत्पुरुष के साथ भगवान ने तुम्हें जोड़ा हो; याद रखें-अपने मन से उनके साथ जुड़ोगे वो नहीं चलेगा, काम नहीं आएगा। भीतर में तुम्हें 'क्लिक' होना चाहिए।** हम सभी को बापा के प्रति 'क्लिक' हुआ। बापा ने काकाजी को सौंपा, काकाजी ने पप्पाजी को सौंपा। यूँ, उनकी आज्ञा के मुताबिक संप, सुहृद्भाव, एकता से जीवन जीओगे **तो उनकी प्रसन्नता मिलेगी।**

सतीषभाई ने कहा वैसे–अन्य सभी पूज्यनीय हैं। किसी के साथ तुलना करोगे, तो तुम आऊट हो जाओगे, गए काम से। जिस संत के साथ तुम्हें लगाव है, गुणातीतभाव को पाए संत के साथ तुम जुड़े हो, दो हाथ जोड़ कर उनकी आज्ञा में रहना और 'स्वामिनारायण' के नाम मात्र के संबंध वाले सभी निर्दोष व दिव्य हैं–यह मानना। यह साधना है–बस। इतनी साधना से हम गुणातीतभाव को पा जाएँगे। लेकिन, व्यक्ति स्वयं–मैं और आप विचित्रता से भरे हुए हैं।

हम गिरनार में सिंह देखने के लिए गए थे। ये–विनुभाई और सभी इंग्लॅण्ड से आए थे। धारी-बापा का जन्मस्थान; हमने वहाँ कॉलेज बनाया है। तो हमें वहाँ के रेंजर ने खबर दी कि चार-पाँच सिंहों का टोला आया हुआ है, यदि आपको देखने के लिए आना हो तो। हम सभी तो गाड़ियाँ लेकर वहाँ गए। वहाँ सिंह आगे चल रहा था और पीछे गाड़ी में अंधेरा था। रेंजर सोटी लेकर चल रहा था।

मेरे पास आकर बोला–*साहेब, आप नीचे उतरो।*

मैंने कहा–*भई, देख लिया, क्या नीचे उतरना है ?*

उसने आग्रह करके नीचे उतारा। थोड़ी ही आगे सिंह और पीछे हम चल रहे थे। एक फर्लांग जितनी चले होंगे, इतने में सिंह झाड़ी में उतर गए।

फिर मैंने उसे बुलाया और कहा–*तूने हमें नीचे उतारा, अच्छा हुआ कि सिंह ने पीछे मुड़ कर देखा नहीं। यदि पीछे मुड़ कर देख लिया होता तो... भले ही वह सीधे-सीधे चला गया, पर तेरे पास खाली डंडा है और कुछ है नहीं; न तो राईफल, न ही रिवॉल्वर। फ़िजूल ही हमें उतारा। हम तो चले जाएँगे, आधे घंटे ही तेरे जंगल में हैं, पर तुझे तो पूरी रात जंगल में घूमना है। तो, तू सरकार से माँग कि तुझे राईफल या बंदूक दें। किसी दिन परेशान न होना पड़े।*

वह बोला– *साहेब, सच बात कहूँ?*

मैंने पूछा, *क्या?*

मैं चार साल से यहाँ नौकरी कर रहा हूँ, लेकिन आज तक मुझे किसी सिंह ने परेशान नहीं किया। मुझे सिंह का डर ही नहीं लगता। उसके साथ छेड़खानी करो, तो वह तुम पर वार करता है। वर्ना, तुम सीधे-सीधे चलो, तो सिंह तुम्हें देखेगा तक नहीं। फिर बोला – *पर, मैं 'धारी' गाँव में आता हूँ, तो लोगों से मुझे बहुत डर लगता है। किसी को कुछ लेना-देना नहीं होता, फिर भी बेकार में परेशान करते हैं।*

सिंह से भी ज्यादा हम विचित्र हैं, चैन ही नहीं, खामखाह क्यों ठुकाठुकी करते हो? भले लोग, भजन-भक्ति करा करो। अक्षरधाम का जीवन जीने का अद्भुत मौका मिला है। याद रखो, गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है–*गन्ने का बिचला हिस्सा है यह।* ऊपर के हिस्से में फूस है, सो रस नहीं है और नीचे के हिस्से में जड़ है, तो रस नहीं है। **हमें रस ज़्यादा मिला है और मिठास भी अधिक है। फिलहाल ऐसा समय मिला है। इसे लापरवाही में, बेकदरी में या ज्ञान-अज्ञान के अतिरेक में खो न दें। जिस सत्पुरुष के प्रति तुम्हें प्रेम हो, जिस सत्पुरुष में तुम्हें प्रतीति हुई है कि यह गुणातीत पुरुष हैं – मेरे लिए प्रभु का स्वरूप है, उससे चिपके रहना** –बिना किसी पंडित से पूछे। **और... दो हाथ जोड़ कर उसकी आज्ञा पालना व भगवान के भक्तों के प्रति निर्दोषभाव! तीन ही स्टेप हैं – जुड़े रहने के।**

* प्रभु ने स्वयं कृपा की और हमें मिल गए हैं, ढूंढने नहीं जाना।
* उनके प्रति प्रेम है, सो आज्ञा पालते हैं।

लेकिन, **तीसरा स्टेप –**

* **निर्दोषभाव और दिव्यभाव का मुश्किल है।**

इसे यदि **आसान करना हो, तो आत्मा को बल चाहिए** – ताक़त चाहिए।

फिलहाल तो इन्स्टन्ट का ज़माना है। तुम्हें पाँच वर्ष बाद बल मिले, ऐसा नहीं चलेगा। तुरंत बल चाहिए। **योगीजी महाराज कहते कि बल प्राप्त करने के लिए – मध्य 63वाँ वचनामृत है। जीव तत्काल बल को पा जाए। भगवान और भगवान के भक्त की संत के वचन से मन, कर्म, वचन से सेवा करो, तो जीव तत्काल बल प्राप्त कर ले।** मन से निर्दोष मानो, वचन से गुणगान और महिमा गाओ। उसके लिए कोई ज्ञान लेने जाने के लिए जाना पड़ता है क्या? तुम वचनामृत न पढ़ो या स्वामी की बातों का रॅफरेन्स पता न हो, तब भी कोई हर्ज़ नहीं। 'अहोहो, प्रवीणभाई धन्य हैं–प्रवीणभाई धन्य हैं–प्रवीणभाई धन्य हैं' इतना कहने को कोई मना करता है क्या? ठाकुरभाई और इन सभी का गुणगान गाओ। सभी का गुणगान और महिमा खुल कर गाओ, ज़्यादा गुण गाओगे, तब भी कोई प्रॉब्लॅम नहीं है। वचन से गुणगान और महिमा गाओ। कर्म से - देह से

सेवा करो और देह से सेवा न हो पाती हो, तो देह के परिश्रम से जो धन कमाते हो, उससे पाँच-दस प्रतिशत सेवा करो, तो हो गई सेवा। मन, कर्म, वचन से सेवा करने से जीव बल को पाएगा। फिर क्या कुश्ती करनी है? बल को पाओगे, सो भगवान और उनके भक्तों में निर्दोषभाव दृढ़ होता जाएगा।

याद रखना–जिसकी आत्मा कमज़ोर है, जो लोग गाभरु हैं, **जिनकी आत्मा में ताक़त नहीं है, वे लोग दूसरों का सुख देख-देख कर दुःखी होते हैं। फरियाद करता हो, ढीलाढाला रहता हो, बार-बार बुरा लग जाता हो, उन सभी को वीक आत्माएँ जानना। बल प्राप्त करने के लिए उन्हें फट से इन्जेक्शन लेना हो, तो मन, कर्म, वचन से सेवा करें। तो, ताक़त आ जाएगी, उसमें से निकल जाएँगे।** यह काम करना है।

अभी अमेरिका में एलनटाऊन मंदिर का दसवाँ पाटोत्सव मनाया; उसमें युवा लड़के-लड़कियों ने जो काम किया है, उसके आगे हम नतमस्तक हो जाते हैं। 'कहाँ जन्मे, कहाँ पले, कहाँ पढ़े'–उनका कल्चर वहीं का है। लेकिन, एक बात–अश्विनभाई और शांतिभाई के जोग से उन सब ने मिल जुलकर एक '**टीम स्पीरिट**' से पाँच दिन का उत्सव किया। हज़ारों लोग आए, लेकिन इतनी बढ़िया प्लानिंग–कल्चरल प्रोग्राम से लेकर सब कुछ–कि हमारा मस्तक नत हो जाए। बच्चों में यह कहाँ से आया? पूर्व के मुक्त! बस, एक ट्रेक पर चढ़ गए। किसी का देखे बिना–कोई काम करे या न करे, कोई आता है या नहीं आता–कुछ भी देखे बिना, मुझे भगवान को राजी करने के लिए जो करना है, वो करना है, लेकिन किसी की झंझट में पड़ना नहीं है। तो, अमेरिका जैसे देश में बच्चे नियम-धर्म में रहते हैं। इतना ही नहीं, एकादशी भी निर्जला करते हैं। अब भी एकादशी का व्रत सभी नहीं कर सकते। हमसे व्रत हो सकता है क्या? देखो, गुरुजी ना करते हैं। ये लड़के–युवा हैं। कुछ भी खाते हैं, तो पहले इन्ग्रेडियेन्ट्स पढ़ते हैं, फिर खाते हैं। यूँ वे नियम-धर्म तो पालते हैं; पर यह जो चीज उनमें आई, उगी वो सच में भगवान की कृपा है।

सायन्स की टॅकनोलॉजी से सारा युग बदल रहा है। याद रखो, हम सभी स्टेज पर बैठे सभी–तुम 'गुणातीत स्वरूपों' या जो भी टाईटल कहते हो–वह कहो, लेकिन हम इस मॉडर्न ज़माने में से एक्स्पॅल हो गए। मोबाईल चलाना हमें नहीं आता। फोन लगा कर देते हैं, तो बात करते हैं। स्वामी, बात सच या गलत? यह आई पॅड, ये फट्-फट् फोटो खींचते हैं। मैं तो पूछूँ कि तुम क्या कर रहे हो? सायन्स की टॅक्नोलोजी से सारा युग बदल गया है। इसी प्रकार, स्पीरीच्युअल सायन्स की टॅकनोलॉजी ने सब कुछ बदल दिया है।

हम पुराने ज़माने की बात करें, तो इसमें से (आपको) लेने की जरूरत नहीं। मॉर्डन बात पकड़ लो।

किसी गुणातीत स्वरूप से जुड़ जाओ,
दो हाथ जोड़ कर उनकी आज्ञा पालो,
किसी की खटपट, झंझट, निंदा किए बिना छूट से गुणगान गाओ।

बस, तुम मॉडर्न सायन्स में आ गए, हँसते-हँसते अक्षरधाम रूप हो जाओगे।

इन युवानों ने खूब अच्छा पकड़ा है और युवा ही पकड़ लेते हैं। जब कोई बदलाव आए, जैसे कि यह फोन बदलना हो, तो बड़े जल्दी नहीं बदल पाते कि हमें जमेगा नहीं; लेकिन ये युवा तुरंत फोन बदल देते हैं। इस तरह

अब ये यंगस्टर्स ऐसी बात पकड़ लेते हैं और इसी से उनका सारा ढाँचा बदलता जा रहा है। हम बहुत सुंदर युग में आ गए हैं। भगवान की अपरंपार कृपा है। तो हम यह बात लेकर जाएँ।

पूरी सायन्स टॅकनोलॉजी से जैसे सारा नवीनीकरण हुआ, यूँ काकाजी और पप्पाजी द्वारा योगीजी महाराज ने गुणातीतभाव प्राप्त करने के लिए नई डॅवलप्मेन्ट की है। सारा नया सायन्स उन्होंने खड़ा किया। उसमें से गुणातीत समाज का सर्जन हुआ। उस गुणातीत समाज में हम आए हैं। गुणातीत समाज में इस प्रकार एकता-सुहृद्भाव रख कर हम सभी मिलजुल कर काम करें। जहाँ हैं वहाँ एक गुरु के होकर प्रमाणिकता से उनका सेवन करें, उनकी आज्ञा पालते हुए संप, सुहृद्भाव रखें।

सच, फिर से प्रवीणभाई, मुकुंदभाई, ठाकोरभाई, बकुलेश एवं पेरिस मंडल के सभी भाइयों को, देश-परदेश के इतने अक्षरमुक्तों को इकट्ठे करके, ऐसा अद्भुत लाभ दिलवाने के लिए खूब अभिनंदन। (सत्संग की) बहुत अच्छी बातें हुईं। इसमें से जो अच्छा लगे, वह लेकर जाना। योगीबापा कहते–*हमें जो जँचे वो लेना, बाकी सब छोड़ देना। यही सच्ची साधना है।* सभी के हृदय में प्रभु को राजी करने का उत्साह-उमंग बढ़ता जाए और मिलजुल कर, एकमने होकर प्रभु की प्रसन्नता का पात्र बन कर, **काकाजी-पप्पाजी ने शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के परिश्रम को साकार करने के लिए जो तपस्या की है,** उस तपस्या में हमें हमारी ओर से जिस प्रकार की आहुति देनी हो, वह देकर हमारी भक्ति अदा करें। यह करने के लिए हम सभी को बल, बुद्धि, प्रेरणा दें।

गुरुजी, दिनकरभाई, भरतभाई ने सच में काकाजी का वारसा रखा। देखो, **गुरुजी** ने शून्य में से सर्जन किया। मुझे याद है–गुरुजी 1969 में पप्पाजी के आशीर्वाद लेने के लिए विद्यानगर आए थे। तो पप्पाजी ने कहा–*चलो, गुरुजी के लिए सभा करें।* दिल्ली जा रहे थे, सो सभा की और आशीर्वाद देकर पप्पाजी ने भेजा। गुरुजी ने कहा–*(मैं तो) काकाजी की आज्ञा से जा रहा हूँ, बस।* सो, पप्पाजी ने कहा–*'भगवान तेरे साथ ही हैं, तू निश्चिंत रहना।'* गुरुजी जब गए थे, तब कोई बड़ा भक्त - समाज नहीं था। ऐसा कहें कि कोई भक्त ही नहीं था। अकेले गुरुजी, प्रेमस्वामी और संत गए। गुणातीत सत्पुरुष के प्रति लगाव और प्रभु के भाव से उसमें जुड़ गए थे–सो आज्ञा पाली। कोई फैक्टर दिल्ली में सहायरूप नहीं था। वहाँ ठंड बहुत पड़ती थी। कोई हरिभक्त नहीं आता था, कोई सेवक भी नहीं था। ठंड खूब पड़ती थी और गुरुजी को तो नहाने के लिए गरम पानी चाहिए होता था। मुझे याद है हमारे प्रेमस्वामी ने गरम पानी लाकर दिया; गुरुजी ने पूछा–*लकड़ियाँ तो हैं नहीं, तो क्या जलाया?* उन्होंने बताया–*लाईब्रेरी की सारी किताबें जला दी।* नीचे लाईब्रेरी थी, उसकी सारी अलमारियाँ खाली कर दीं, लेकिन गुरुजी को नहलाया। ऐसी परिस्थिति में गुरुजी गए। फिलहाल हम हँसते हैं, पर सच में काकाजी के प्रति लगाव और उन्हें राजी कर लेने का भाव न हो, तो कोई रहे नहीं, पर वे रहे। एक साल, दो साल, पाँच-सात साल तक तो कोई भक्त ही दिखाई नहीं दिया। अब देखो **तो प्रसन्नता का अद्भुत पात्र बन कर काकाजी का स्वरुप बन गए** और दिल्ली मंडल के सभी भक्तों को देखोगे तो खुश हो जाओ। एक-एक भक्त नए ही हैं सभी, पर मुझे और आपको आश्चर्य में डाल दें, ऐसी समझ से भक्ति कर रहे हैं।

ऐसे ही **दिनकरभाई**–'73 में हम गए; काकाजी ने न्यूयॉर्क से फोन किया। हमारे रूपित का जन्म हुआ था, तो काकाजी ने कहा–*मैं आता हूँ।* उसकी छठी के दिन वहाँ पहुँचे। सुधा बहन से कहा–*तेरे रूपित का छठी*

का लेख लिखने के लिए आया हूँ, ला लिख दूँ। दिनकरभाई स्वामिनारायण के थे–वड़ताल के। वीरसद वाले ज्ञानजीस्वामी के आशीर्वाद लेकर वे गए थे। काकाजी पूर्व की आत्मा को पहचानते थे, सो उनके पीछे ही पड़ गए और दिनकरभाई के यहाँ वॉकिगन में मंदिर बनाया। **दिनकरभाई भी काकाजी के प्रति असाधारण लगाव से जुड़ कर, दो हाथ जोड़ कर काकाजी की आज्ञा पाल कर अब काकाजी रूप हो गए, उनका कार्य करते हो गए।** वहाँ कितना बड़ा समाज खड़ा किया है।

और... **भरतभाई तो** काकाजी के साथ ही रहे। **काकाजी की अनन्य प्रीति के पात्र।** भरतभाई–एकदम सेवकभाव! काकाजी जैसा कहें, वह वे दो हाथ जोड़ कर करें। **काकाजी ने** खुद **कहा है** कि ***यह भरत मन के बिना का है। भरत द्वारा वे प्रगट रहे।*** भरतभाई भी ऐसे अद्‌भुत। भरतभाई, वशीभाई, महेन्द्र बापु **हमारे पवई मंदिर के नौ योगेश्वर हैं।** इन **नौ योगेश्वरों ने सच में धूनी जगा कर सारे पवई की शक्ल बदल दी।** मुंबई जाएँ तो पवई मंदिर दर्शन करने योग्य जैसा है। फिलहाल अभी जैसा है, वैसा वहाँ कुछ था ही नहीं। गड्डों-टीलों के अलावा कुछ नहीं था। एक बार तो वशी के जन्मदिन पर मेरा वहाँ जाना हुआ और बरसात खूब हो रही थी। तो, दो मील तो चल कर जाना पड़ा। लेकिन, काकाजी तब कहते– *यह हमारा इन्टरनेशनल सेन्टर बनने वाला है।* तब काकाजी के प्रति प्रेम के कारण शंका नहीं करी; पर ऐसा तो होता था कि यह कब होगा? अब तुम वहाँ जाओ, तो अमेरिका देश में आए हो, ऐसा अद्‌भुत एरिया और अद्‌भुत मंदिर हो गया है। हमारे नव योगेश्वरों ने मिलकर यह बनाया है। उसमें भी एक गृहस्थ होते हुए भी साधु का जीवन जीता हमारा **घनश्याम**! इन सारे उत्सवों के पीछे–यहाँ, अमेरिका, पवई हो–इस समैया के पीछे यदि सच में किसी की जबरदस्त मेहनत और पुरुषार्थ हो, तो घनश्याम का। कल जो कल्चरल प्रोग्राम हुआ, उसमें **दर्शन** ने काकाजी का रोल अदा किया। सच, कइयों ने काकाजी के दर्शन नहीं किए या काकाजी के योग में नहीं आए होंगे, पर हम तो काकाजी के साथ रहे हैं; एग्ज़ेक्ट काकाजी की पूरी झांकी कराएँ, ऐसे उसके सारे एक्शन्स थे, वैसा ही दिखता था–सब कुछ। ऐसा कार्यक्रम यहाँ हुआ। और **स्वामिजी** तो–ऐसी तबियत है, फिर भी आए। **हमें जो काकाजी-पप्पाजी से प्रेम हुआ, उसका मूल कारण हैं स्वामिजी। स्वामिजी ने, सच में, हमारे गुरु के रूप में काम किया है। उन्होंने जो अद्‌भुत बातें की। उस समय काकाजी-पप्पाजी के गुण गाने या सुनने का कोई माहौल ही नहीं था। उस समय स्वामिजी ने युवक-प्रभुदास के रूप में इतने भाव से काकाजी-पप्पाजी को मान कर, सभी युवकों के समक्ष हृदय के भाव से गुणगान और महिमा गाई।** उससे हम जैसे कई युवकों को उस समय–बापा के समय ही काकाजी-पप्पाजी के प्रति इतना प्रेम और भाव हुआ।

ऐसे अद्‌भुत समाज में हम आ गए हैं। वह भक्ति अदा करने का हमें अद्‌भुत मौका मिला है; वह गवाँ न दें और जाग्रततापूर्वक मिलजुल कर, एक मन होकर सभी के गुणगान-महिमा गाकर और जिस सत्पुरुष के प्रति भाव है, उनकी आज्ञा में रहते हुए सुखी-सुखी हों–ऐसी आज काकाजी-पप्पाजी के शताब्दी पर्व की प्रार्थना–जय स्वामिनारायण!

પ.પૂ. સાહેબજી (બ્રહ્મજ્યોતિ)

['બંધુબેલડી શતાબ્દી મહોત્સવ' દરમ્યાન પેરિસમાં પ.પૂ. ગુરૂજીએ જ્યારે પ.પૂ. સાહેબના આશીર્વાદ સાંભળ્યા કે બીજે જ દિવસે ફોન ઉપર પ.પૂ. દીદીને સંદેશો મોકલાવી દીધેલો કે હું પાછો ફરૂં ત્યાં સુધીમાં પ.પૂ. સાહેબના આશીર્વાદ વર્બેટીમ ટાઇપ કરાવી રાખજો...

અને... ૨૦મી ઑગષ્ટે પ.પૂ. ગુરૂજીના આવ્યા પછી એમનો થાક ઊતરવાની રાહ જોઈને પ.પૂ. દીદીએ ૨૨મીએ ધ્વનિમુદ્રણ પરથી ટાઇપ કરેલા પ.પૂ. સાહેબના આશીર્વાદ પ.પૂ. ગુરૂજીને મોકલાવ્યા. પ.પૂ. ગુરૂજીએ પણ ચેક કરીને તરત પાછા મોકલી દીધાં હતા. ત્યારથી લગાતાર બધાં મુક્તોના ઉદ્દ્ગાર અને સ્વરૂપોના આશીર્વાદ 'ભગવત્ કૃપા'માં સંકલિત થતાં રહ્યાં. પણ, દીવાળી પછી સહુ મંદિરની ગતિવિધિઓમાં ખૂબ વ્યસ્ત હોવાથી 'ભગવત્ કૃપા'નો નવેંબર-ડીસેંબરનો અંક પ્રકાશિત થઈ શક્યો નહીં. પછી, જાન્યુઆરી-ફેબ્રુઆરીના અંકમાં પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ પ.પૂ. હરિપ્રસાદસ્વામિજીના આશીર્વાદ દ્વારા સહુ એમના અભિપ્રાય-રહસ્યને એમના પ્રાગટ્યોત્સવની ફળ શ્રુતિરૂપે પામ્યા!

*સહુ સ્વરૂપોના મોઢે ઘણી વાર સાંભળીએ છીએ કે – 'બધું બ્રહ્મનિયંત્રિત છે...' એ પ્રમાણે આ વખતે પેરિસ ઉત્સવની સ્મૃતિઓની જાણે પૂર્ણાહુતિરૂપે અનુક્રમે પ.પૂ. સાહેબના આશીર્વાદ પ્રાપ્ત કરવાનો જ્યારે લ્હાવો આવ્યો, ત્યારે **૧૬મી માર્ચે હોળી – અનાદિ મહામુક્ત ભગતજી મહારાજની પ્રાકટ્યતિથિ અને ૧૭મી માર્ચે ધુળેટી – પ.પૂ. સાહેબની પ્રાકટ્યતિથિ** આપણને ન્યાલ કરવા-આશિષ વરસાવવા આવી રહી છે.*

ખરેખર, પ.પૂ. ગુરૂજીએ પ.પૂ. સાહેબના આ આશીર્વાદને ખૂબ બિરદાવ્યા અને એના પ્રૂફ રીડિંગ પછી બોલ્યા ય –

જૂના-નવા આપણે સહુએ આ આશીર્વાદનું મનન-ચિંતવન કરવા જેવું છે. ઘણીવાર હું જે વાત કહેવા માંગું છું, એ સરખી રીતે રજૂ નથી કરી શકતો. એજ વાત સાહેબ સરળ ભાષામાં ખૂબ સચોટતાથી સમજાવી દે છે. આ જ ફરક છે 'બ્રાહ્મીસ્થિતિને પામેલા ભણેલા-ગણેલા ટૅલેન્ટેડ સંત અને કૉમન લેવલની વ્યક્તિ વચ્ચે...'

અને... જ્યારે પ.પૂ. ગુરૂજીએ પ.પૂ. સાહેબના આ આશીર્વાદ ઉપર આટલો ભાર મૂક્યો છે, તો આવા અણમોલ આશીર્વાદમાં સમાએલા આધ્યાત્મિક રહસ્યો-પ્રસંગો દ્વારા સ્વરૂપોને રાજી કરી લેવાની કરામત તો હાંસલ કરીએ જ, સાથોસાથ ગુણાતીત સ્વરૂપોએ જે હેતુસર આપણને પોતાની નિ શ્રામાં રાખ્યા-અપનાવ્યા એ મુદ્દો સમજીએ.]

મૂળ ગુજરાતી :

ખરેખર, બે દિવસથી પ.પૂ. કાકાજી-પ.પૂ. પપ્પાજીના શતાબ્દી મહોત્સવની ખૂબ સુંદર ઊજવણી થઈ રહી છે. આજે પૂ. વશીએ શરૂઆત કરી ને પૂ. દિલીપભાઈ, પૂ. સતીષભાઈ, પૂ. દાસસ્વામી, પૂ. મહેન્દ્ર બાપુ – ઘણાં બધાંએ ખૂબ સુદંર વાતો કરી; એમાં સતીષભાઈને ખરેખર અભિનંદન! **ગુણાતીતાનંદસ્વામી**એ કહ્યું છે –

આજનો આવેલો હોય કે જૂનો હોય, વર્ષોથી સત્સંગ કરતો હોય, અમારી સાથે રહ્યો હોય કે ન રહ્યો હોય, પણ અમારાં રહસ્યને પામીને – અમારાં રહસ્યને જાણીને જીવન જીવે છે, એવા મુક્તો પર અમારી પ્રસન્નતા વરસ્યા વગર રહેતી નથી.

પૂ. સ્વામિજીના યોગથી સતીષભાઈ સત્સંગમાં આવ્યા અને એવા દિવ્યભાવ ને નિર્દોષભાવથી સેવન કર્યું કે કાકાજી-પપ્પાજી સાથે એવા એ રહ્યા નથી, કાકાજીના દર્શને ય કર્યા નથી, છતાં કાકાજી-પપ્પાજી જે વાત – જે રહસ્ય સારુ જીવન જીવ્યા ને જે આપણને આપવા માંગતા'તા એની કેટલી સરસ વાતો એમણે કરી. આપણે આ પકડવાનું છે.

મહારાજ ને ગુણાતીત અક્ષરપુરૂષોત્તમના સાકાર સ્વરૂપો – એવા સાધુ દ્વારા પ્રગટ છે અને રહેવાના છે. પણ, એ જ્યારે પ્રગટ હોય ત્યારે એમને ઓળખી લેવાના. એ જ્યારે પ્રગટ હોય ત્યારે એમની પ્રસન્નતા પ્રાપ્ત કરી લેવી, એ મારા-તમારા સર્વની સાધના છે. કાકાજી ને પપ્પાજી એવું જીવન જીવ્યા. સ્વામિનારાયણ ભગવાને ખૂબ કૃપા કરી ને... બન્ને એક ઘરમાં જન્મ્યા. પોતાનું કાર્ય કરવા માટે બન્નેને સાથે લાવ્યા ને આપણે જાણીએ છીએ એમનું જીવન. બન્નેને અરસ-પરસ અસાધારણ હેત, એક-બીજાં માટે શું ન થાય? ભ્રાતૃભાવનું અદ્‌ભુત દર્શન! કરમસદમાં પ્રગટ થયાં. કરમસદમાં રાજકીય ક્ષેત્રે એવી એક બંધુબેલડી પ્રગટ થઈ – સરદાર ને વિઠ્ઠલભાઈ. એમણે ભારતના રાજકારણ ક્ષેત્રમાં અદ્‌ભુત કાર્ય કર્યા. બન્ને ભાઈઓએ એક-બીજાંના પૂરક બનીને, અખંડ ભારતનું સર્જન કર્યું. એમ **આધ્યાત્મિક ક્ષેત્રે કરમસદની ધરતી પર કાકા ને પપ્પા બન્ને ભાઈઓ તરીકે પ્રગટ થયા અને માનવે-માનવે મંદિર બનાવવાનો અને સર્વને દેહભાવથી પર કરીને સુખી કરવાનો મહારાજ ને ગુણાતીતનો સંકલ્પ સાકાર કરવા ખરેખર કાકા-પપ્પાએ પોતાનું જીવન શાસ્ત્રીજી મહારાજ ને યોગીજી મહારાજની પાછળ હોમી દીધું.**

મને તો પહેલેથી બાપા સાથે અસાધારણ હેત. હું આ પ્રસંગ ઘણી વખત કહું છું. વિદ્યાનગરમાં યોગીજી મહારાજ પધારેલા. કૉલેજના હૉલમાં આવી મોટી સભા હતી. ઘણાં બધાં વિદ્યાર્થીઓને બાપા સાથે 'વન ટુ વન' મળવું હતું ને બાપાને મેં વાત કરી.

બાપા કહે – *બધાંને આવતી કાલે આણંદ મંદિરે બોલાવો.*

ચાલીસ-પચાસ યુવાનો આણંદ મંદિરે પહોંચ્યા. આઠ વાગે આરતી પછી તરત દરેકને બાપા મુલાકાત માટે બોલાવવા મંડયા. દસ, સાડા દસ-અગિયારે બધાં છોકરાઓ પતી ગયા. હું બાપા પાસે છેલ્લો ગયો કે મારે વાત કરવી છે.

તો કહે – *તું, તારી વાત નહીં, તું મારી વાત સાંભળ. કહે – દાદુભાઈને બોલાવીએ.*

એટલે હું દાદુકાકાને બોલાવવા જતો'તો.

તો કહે – *દાદુભાઈને બોલાવવા કોઈ છોકરાને મોકલ, તું મારી પાસે બેસ.*

એક છોકરો ગયો. સભા પતી ગઈ હતી ને બાપા મુલાકાતમાં હતાં, તેથી બધાં ઘરે ગયા'તા. કાકાનો

ઉતારો મહંતસ્વામી-મણીકાકાના ઘરે હતો. કાકાને આવતા પાંચ-દસ મિનિટ થઈ. બાપા મને બેસાડીને કહે–જો, દાદુભાઈ આવશે, તો તારે દાદુભાઈને આવું-આવું કહેવાનું; એમ બાપાએ શીખવાડયું. એટલામાં કાકા આવ્યા ને બેઠા. યોગીબાપા જેવા દિવ્ય પુરૂષ હોય, તો એમની હાજરીમાં કંઈ ડહાપણ થાય ? બાપા સામે બેસીને હું તો દર્શન કરતો રહ્યો. એટલે બાપા હસ્યા અને **દાદુભાઈનો હાથ લીધો ને મ્હારો હાથ લીધો; બે હાથ ભેગા કરીને બાપા બોલ્યા–** ***દાદુભાઈ, હવે આ યુવાનોનું કામ તમે હાથમાં લ્યો.***

ત્યાર પછી મેં જોયું છે કે કાકા મહિનામાં બે વખત વિદ્યાનગર આવતા. અમને બાપા સાથે અસાધારણ હેત, બાપાની સેવા કરતા, બાપા પાસે જતા, હરિપ્રસાદસ્વામીનો સમાગમ. હરિપ્રસાદસ્વામીએ યોગીજી મહારાજનું માહાત્મ્ય સીંચેલું. એટલે બાપાને રાજી કરવા બધી રીતે બધાં સેવાઓ કરતા. કાકાજીનો યોગ થયો, હરિપ્રસાદસ્વામીએ પણ દાદુકાકાનો મહિમા ગાયેલો. **કાકાએ વિદ્યાનગર આવીને યોગીજી મહારાજનો અપરંપાર મહિમા ગાઈ યુવાનોમાં માહાત્મ્ય એવું રેડ્યું કે** અશ્વિનભાઈ, શાંતિભાઈ, રતિભાઈ જેવા **અમારાં મોટા ભાગના યુવાનોમાં** ***'બાપા માટે શું ન થાય'*** **એવો સમર્પણભાવ જે પ્રગટાવ્યો - એ દાદુકાકાએ.** ભણતા'તા, ટૅલન્ટેડ હતાં, શકિતશાળી છોકરાંઓ હતાં. બધું મૂકીને– કૅરિયર મૂકીને– ***'બાપા કહે એવું કરવું છે'*** **એવો ભાવ દાદુકાકાના યોગથી, દાદુકાકાની વાતોથી, દાદુકાકાની સાથે રહેવાથી થયો.**

કાકા પણ એ મય હતાં–બાપામય હતાં. છાત્રાલયનું ઉદ્‌ઘાટન થયું ને **'ગુણાતીત જ્યોત'**ના પાયાનું ખાતમુહૂર્ત થયું. પપ્પાજી રહેવા આવ્યા. કાકાએ અમને બોલાવીને મને કહ્યું કે– *પપ્પાજી અહીં રહેવાના છે, તમે બધાં પપ્પાજીની આજ્ઞામાં રહેજો.* બાપાએ દાદુકાકા પાસે મૂક્યા, દાદુકાકાએ પપ્પા પાસે મૂક્યા. તે વખતે ઘણાં બધાં ઘણી બધી વાતો કરતાં; મને આશ્ચર્ય લાગે છે.

ભગવાનને રાજી કરવાનો આપણને જો ભાવ હોય અને પોતાના ઈષ્ટદેવને–પોતે જે ગુરૂને વળગ્યા છીએ, એ ગુરૂમય થવાની તાલાવેલી હોય, તો બીજાં કોઈ ફૅક્ટર્સ આપણને નડતા નથી, મુશ્કેલી ઊભી નથી કરતા.

બધાં કહે કે કાકાજી ને પપ્પાજીની રીતિ આખી ભિન્ન હતી, પણ અમને કોઈ દિવસ લાગ્યું નથી. બાપાએ કાકા પાસે મૂકયા હતાં, કાકાને યોગીજી મહારાજનું સ્વરૂપ માનીને હન્ડ્રૅડ પરસેન્ટ આજ્ઞા પાળી અને કાકાજીએ કહ્યું કે પપ્પાજી પાસે રહો, તો **હન્ડ્રૅડ પરસેન્ટ યોગીજી મહારાજનું સ્વરૂપ માનીને, બાપાને વિષે જે નિર્દોષભાવ હતો, તો કાકાજી-પપ્પાજી બન્ને વચ્ચે આપોઆપ નિર્દોષભાવ રહ્યો. બન્ને પણ એ જ ભાવથી અમને હૂંફ આપતા.** એટલા જ ભાવથી અમારી સાથે એ રહેતા.

બન્નેનું જીવન પણ અદ્‌ભુત હતું. યોગીજી મહારાજ ભગવાધારી હતાં. કાકા ને પપ્પા ભગવા ન્હોતા પહેરતા, પણ બાપાનું જે તત્ત્વ–'અક્ષરપુરૂષોત્તમ'–જે એમની સાથે રહેવાથી, બાપા સાથે રહેવાથી જે આનંદ આવતો; બધાં છોકરાંઓને થતું કે આપણે બાપા સાથે જ છીએ. આપણને

સંસારી લાગે, પણ સંસારથી વિરક્તભાવ હતો. પ્રાર્થના કરીને ૫૧માં—અક્ષરવિહારીસ્વામીને સાધુ બનાયા અને બીજા દીકરા **પ્રફુલ્લ**ને અમે લઈ આવ્યા. એમના મમ્મીને બહુ પ્રેમ કે આ છોકરો—તો એને માટે બધું તૈયાર કરી રાખેલું કે લગ્ન કરે તો ઘર-બર વસાવવાનું બધું. એમણે પપ્પાજીને પૂછ્યું. પપ્પાજી કહે કે ભગવાન ભજવા સિવાય કંઈ કરવા જેવું નથી. **એ અમારો અસલ સાધુ છોકરો છે. 'બ્રહ્મજ્યોતિ'માં અમારૂં બધું રસોડું સંભાળે છે, ત્યાંથી કશે જાય જ નહીં.** એને પૂછ્યું કે તારે આવવું છે, તો ના પાડી. અશ્વિનભાઈએ અમેરિકાથી ફોન કર્યો કે તારી આ ફ્લાઈટમાં બુકિંગ કર્યું છે, તો લંડન થઈને પેરિસ આવી જજે. તો, સ્વામી, કિરણ, પંકજ બધાં જોડે આવી ગયો.

આ વ્રતધારી સાધુ અશ્વિનભાઈ, શાંતિભાઈ સાથે સેનામાં જોડાઈ ગયા. એને પપ્પાજી માટે અસાધારણ હેત, દેખાય નહીં તમને. એ પપ્પાજી સાથે કોઈ દિવસ બેઠેલો જોવા નહીં મળ્યો હોય. અસાધારણ હેત, એટલે તમે વાત ન પૂછો, એટલું બધું હેત એને. **પપ્પાજી કહે** એટલું જ કરવાનું. એને કહ્યું કે—***સેવક તરીકે રહેજે.*** નૉર્મલી શું થાય કે આવા મોટા પુરૂષના દીકરા હોય, એનું બધાં માન-સમ્માન બહુ કરે, પગે લાગે કે ઓહો પપ્પાજીના દીકરા છો—પપ્પાજીના દીકરા છો. આપણને ખાલી કહે કે પપ્પાજીના વારસદાર છો, કાકાજીના વારસદાર છો, એટલામાં ઊંચા થઈ જઈએ. આ તો પપ્પાજીનો પોતાનો દીકરો હતો, પણ કહ્યું કે— ***ગુણાતીતભાવ પ્રગટાવવો હોય તો સેવક થઈને રહેજે.*** એ છોકરો હોમાઈ ગયો છે—હોમાઈ ગયો વ્રતધારી ભાઈઓમાં. **આ પપ્પાજીની પ્રસન્નતાનું પાત્ર થયું કહેવાય.** પપ્પાજીએ એક આજ્ઞા કરી, એક વચન કહ્યું, તો એને વળગીને જીવન જીવી રહ્યો છે. એના માટે ગીતા કે ભાગવતના મોટા પારાયણ નથી કરવા પડતા. આમ બન્ને દીકરાઓને એમણે ભગવાનના ચરણે ધર્યા. પોતાનું જે સર્વસ્વ હતું 'ગુણાતીત જ્યોત'ને સોંપ્યુ.

પહેલા તો પપ્પાજી મુંબઈ રહેતા. એક વખત બાપાનો કાર્યક્રમ ખેડા પાસે ગામ રઢુ—પુરૂષોત્તમપુરા હતો. મોટાસ્વામીના દીકરા રમણભાઈ ને એ લોકો ત્યાં હતાં. બાપાએ કાકાને કહ્યું કે—*તમે ને આ યુવકો પુરૂષોત્તમપુરા આવો.* એટલે કાકા સાથે અમે પુરૂષોત્તમપુરા ગયા. પપ્પાજી અમદાવાદ આવેલા. તો પપ્પાજીને અમદાવાદથી પુરૂષોત્તમપુરા બોલાવ્યા. પપ્પાજી ને કાકાના મધર—દિવાળીબા ખૂબ બીમાર હતાં. ગમે ત્યારે દેહ છોડી દે, એવી બીમારી હતી. અંદરના રૂમમાં બાપા જમતા'તા, ત્યાં બ્હાર અમે બેઠેલા. કાકા ને અમે ભાઈઓ સામ-સામે જમવા બેઠા હતાં.

એટલે દાદુભાઈએ પપ્પાજીને કહ્યું : *દિવાળીબા આટલા બધા બીમાર છે, તો તમે શું કામ અહીં આવ્યા ? તમે ત્યાં હતાં, એટલે હું અહીં હતો.*

પપ્પાજી કહે કે— *જુઓ, મને બાપાની ટપાલ આવી કે કાગળ મળતા તમે પુરૂષોત્તમપુરા આવી જાઓ. એટલે આપણે તો બેસી ગયા.*

પપ્પાજી કહે કે—*પણ, તમે મિયાં અહીં કેમ આવ્યા'તા ?*

બેયનો સંબંધ એવો હતો.

કાકા કહે—*હું શું કરૂં ? હું અમદાવાદથી નીકળવાનો હતો, પણ બાપા કહે તમે અમારી સાથે ચલો*

પુરૂષોત્તમપુરા, એટલે અહીં આવી ગયો.

પપ્પાજી કહે – *દાદુભાઈ, દીવાળીબાને અક્ષરધામમાં લેવા જનારા અંદર ટૅસથી જમે છે; તો આપણે શું કામ વિચારવાનું ? આપણે ટેસથી જમીએ.*

તમે વિચાર કરો, પોતાના બા ધામમાં જવાના હોય, કોણ આવી વાતો કરે ? **દેહભાવના સંબંધો છૂટી ગયા હોય, દેહભાવથી પર એ વર્તતો હોય અને જો ખરેખર પ્રભુરૂપ હોય એ જ આવી વાતો કરી શકે.** નહીં તો ન કરી શકે, જો આવું કોઈ બીમાર પડયું હોય. પપ્પાજી કહે છે આપણે ટૅસથી લાડુ જમીએ અને જમ્યા પછી તરત સમાચાર આવ્યા કે દિવાળીબાએ દેહ મૂકી દીધો. એમના જીવનના આવા પ્રસંગો સાંભળ્યા પછી આપણને થાય કે એમને કશું ય વળગ્યું ન્હોતું બિલકુલ.

ગુણાતીતભાવ કોને કહેવાય ? ગુણાતીતાનંદસ્વામી અક્ષરધામ; અને જેમાં ભગવાન અખંડ રહ્યા છે આવા સાધુ અમારા રહેવાનું ધામ છે, એવું મહારાજે કહ્યું. તો, બાપાને કોઈએ પ્રશ્ન પૂછયો કે *બાપા, ગુણાતીત એટલે ગુણાતીતાનંદસ્વામી કે શું ?* તો કહે કે – *ગુણાતીતભાવ છે. સત્ત્વ, રજ ને તમથી પર – ત્રણ દેહ, ત્રણ અવસ્થા, ત્રણ ગુણથી પર જેનું જીવન હોય, એ ગુણાતીત'ભાવ' છે.* **કાકાજી સાથે બહુ રહેવાનું થયું અને પપ્પાજી સાથે તો ઠેઠ સુધી રહ્યો. એમાં અખંડ ગુણાતીતભાવનું દર્શન થાય.**

ગુણાતીતભાવનું દર્શન એટલે – એનું રિઝલ્ટ શું ? કે – એમાં જોડાયેલા રહેતાં, એમની આજ્ઞા પાળતા, એમના સિદ્ધાંત પ્રમાણે જીવન જીવે એ સહુ ગુણાતીત થાય. યોગીજી મહારાજ પૂછતા કે *પટેલના દીકરા બ્રાહ્મણ કહેવાય ?* પટેલનો દીકરો પટેલ, વાણિયાનો દીકરો વાણિયો, બ્રાહ્મણનો દીકરો બ્રાહ્મણ. એમ **ગુણાતીતની પ્રસન્નતાનું પાત્ર બને, એ ગુણાતીત થયા વિના રહે જ નહીં.** એ ગુણાતીતની પ્રસન્નતા. જેમ દાસસ્વામીએ કહ્યું – *અંતરની પ્રસન્નતા કંઈ સસ્તી નથી, બજારે કે હાટે એ મળતી નથી.* લાગે છે બધાં ઉપર ; યાદ રાખો – ગુણાતીત પુરૂષ કદી કુરાજી થાય નહીં, એ અંખડ રાજી હોય. ગમે એટલું કરો, તોય રાજી, રાજી ને રાજી. કુરાજી ક્યારે થાય છે, કે એક તમે નિરાકાર કહો, તો કુરાજી થાય. બીજું, ભગવાનના ભક્તોની માથાકૂટ કરો, તો કુરાજી થાય. બાકી તમે આખી દુનિયાની ઉથલ-પાથલ કરો, તોય ભગવાન કુરાજી થતા નથી; રાજી, રાજી ને રાજી. **પણ, એનાથી આપણું દળદર ન ફીટે. એમની અંતરની પ્રસન્નતા જો પ્રાપ્ત થાય, તો આપણું અંદરનું કલેવર બદલાય**, ટ્રાન્સ્ફૉર્મેશન થાય. એ અંતરની પ્રસન્નતા સસ્તી નથી. એના માટે મારે ને તમારે હોમાઈ જવું પડે, સમર્પિત થઈ જવું પડે. **કાકાજી-પપ્પાજી ખરેખર બાપાના વચને હોમાઈ ગયા, સમર્પિત થઈ ગયા. બધું જ હતું, છતાં બધું જ ન્હોતું. મારે મારા પ્રભુ-ઈષ્ટદેવ સિવાય કંઈ નથી – એ ભાવમાં જીવન જીવતા આપણે બધાંએ જોયા છે, દર્શન કર્યા છે. એવા એમના ગુણાતીતભાવને લીધે ગુણાતીત સમાજનું સર્જન થયું છે.**

કાલે સ્વામિજીએ ભાર મૂકીને સંપ, સુહૃદ્‌ભાવ, એકતાની અદ્‌ભુત વાત કરી. આપણે બધાંએ સંપ, સુહૃદ્‌ભાવ ને એકતા રાખવા હોય, તો બાપાએ ઉપાય પણ બતાડયો કે કોઈ પણ લપછપ કર્યા

સિવાય જે **ગુણાતીત સત્પુરૂષને વિષે ભગવાને જોડયા છે**, યાદ રાખો – **(પોતાની મેળે – પોતાના મનથી) જોડાશો નહીં ચાલે, કોઈ શક્કરવાર નહીં વળે. અંદરથી તમને ક્લિક થવું જોઈએ.** અમને બધાંને બાપા જોડે ક્લિક થયું. બાપાએ કાકાને સોંપ્યા, કાકાએ પછી પપ્પાને સોંપ્યા. એમ એમની આજ્ઞા પ્રમાણે સંપ, સુહૃદભાવ, એકતા રાખીને જીવન જીવશો તો એમની પ્રસન્નતા મળશે.

સતીષભાઈએ કહ્યું એમ બીજાં બધાં પૂજનીય છે. બીજાંની સરખામણીમાં પડશો તો આઉટ, ગયા તમે. જે સત્પુરૂષને વિષે હેત છે, જે ગુણાતીતભાવને પામેલા સંતને વિષે તમે જોડાયેલા છો, એની બે હાથ જોડીને આજ્ઞા પાળજો અને 'સ્વામિનારાયણ' નામ માત્રના સંબંધવાળા સહુ નિર્દોષ ને દિવ્ય છે – એ માનજો. આ સાધના છે – બસ. આટલી સાધનામાં આપણે ગુણાતીતભાવને પામી જશું. પણ, માણસ પોતે – હું અને તમે વિચિત્રતાથી ભરેલા છીએ.

અમે ગિરનારમાં સિંહ જોવા ગયેલા. આ – વિનુભાઈ ને બધાં ઇંગ્લેન્ડથી આવ્યા'તા. ધારી – બાપાનું જન્મસ્થાન ; આપણે કૉલેજો કરી છે ત્યાં. પછી ત્યાંના રેન્જરે ખબર આપી કે ચાર-પાંચ સિંહનું ટોળું અહીં આવેલું છે, જો તમારે જોવા આવવું હોય તો. અમે તો ગાડી લઈને ઉપડયા. ત્યાં સિંહ આગળ ચાલે, પાછળ ગાડીમાં અંધારૂં હતું. પેલો રેન્જર સોટી લઈને ચાલતો'તો.

મારી પાસે આવીને કહે – *સાહેબ, તમે નીચે ઊતરો.*

મેં કહ્યું – *અલ્યા, જોઈ લીધાં, શું નીચે ઊતરૂં ?*

તો કહે – *ના, નીચે ઊતરો તમે.*

આગ્રહ કરીને નીચે ઉતાર્યા. થોડે દૂર જ આગળ સિંહ અને પાછળ અમે ચાલીએ. એક ફર્લાંગ જેટલું ચાલ્યા, પછી સિંહ ઝાડીમાં ઊતરી ગયા.

પછી પેલાને બોલાવી મેં કહ્યું – *આ તેં અમને નીચે ઊતાર્યા, સારૂં છે કે સિંહે પાછળ વળીને જોયું નહીં. જો પાછળ વળીને જોયું હોત તો... ભલે સીધો ચાલ્યો ગયો, પણ તારી પાસે સોટી છે, બીજું કશું છે જ નહીં ; નથી રાઈફલ ને રીવૉલ્વર. ખોટું અમને ઉતાર્યા. અમે તો જતા રહીશું, અડધો કલાક જ તારા જંગલમાં છીએ, પણ તારે આખી રાત જંગલમાં ફરવાનું છે. તો, તું સરકાર પાસે માંગણી કર કે તને રાઈફલ કે બંદૂક આપે. કોઈ દા'ડો હેરાન ન થવાય.* તો કહે – *સાહેબ, સાચી વાત કહું ?*

મેં કહ્યું, *શું ?*

ચાર વરસ થયા, આ ગિરનાર જંગલમાં નોકરી કરૂં છુ, પણ આજની તારીખ સુધી કોઈ સિંહે મને હેરાન કર્યો હોય એવું મેં નથી અનુભવ્યું. મને ડર જ નથી લાગતો સિંહનો. એને તમે સળી કરો, તો તમારા ઊપર ઘા કરે. બાકી તમે સીધા-સીધા ચાલો, તો સિંહ નવરો જ નથી, તમારી સામે જોવાને. પણ, પછી કહે કે ધારી ગામ આવું છું, તો મને માણસોની બહુ બીક લાગે છે. બધાં વગર મફતના હેરાન કરે છે, નહીં લેવા-દેવા હોય તોય.

આવા વિચિત્ર આપણે છીએ, સિંહ કરતાં ય – જંપ જ નહીં. નહીં લેવા-દેવા, તો શું કામ ઠોકાઠોક કરો છો? માળા ફેરવો ને ભક્તિ કરો તમે. અક્ષરધામનું જીવન જીવવાની અદ્‌ભુત તક મળી છે. યાદ રાખો, ગુણાતીતાનંદસ્વામીએ કહ્યું કે *શેરડીના સાઠાનો વચલો ભાગ છે આ.* ઉપર ચૂચવા છે એટલે રસ નથી, નીચે મૂળિયા છે એટલે રસ નથી. **આપણે રસ ઝાઝો છે અને ગળપણે ય વધારે છે. એવો અત્યારે સમય મળ્યો છે. એને ગાફલાઈમાં, બેદરકારીમાં, વધુ પડતા જ્ઞાન-અજ્ઞાનમાં વેડફી ન નાખીએ. જે સત્પુરૂષને વિષે પ્રેમ હોય, જે સત્પુરૂષના વિષે તમને પ્રતીતિ થયેલી હોય કે આ ગુણાતીત પુરૂષ છે, મારા માટે પ્રભુનું સ્વરૂપ છે, વળગી જ પડો એને** – કોઈ બામણને પૂછયા વગર. **અને બે હાથ જોડી એની આજ્ઞા પાળજો. અને ભગવાનના ભક્તોમાં નિર્દોષભાવ. ત્રણ જ સ્ટૅપ છે – વળગી પડવાના.**

* ભગવાને કૃપા કરી કે આપણને મળી ગયા, શોધવા નથી જવાનું.
* એના વિષે પ્રેમ છે, એટલે આજ્ઞા પળે.

 પણ, **ત્રીજું સ્ટેપ –**

* **નિર્દોષભાવ ને દિવ્યભાવનું મુશ્કેલ છે.**

એ જો **સહેલું કરવું હોય તો આત્માનું બળ જોઈશે** – તાકાત જોઈશે.

અત્યારે તો ઇન્સ્ટન્ટનો જમાનો છે. તમને પાંચ વરસે બળ મળે, એવું ન ચાલે. તરત બળ જોઈએ. તો, **બળ પમાડવા માટે યોગી મહારાજ કહેતા મધ્ય ૬૩ વચનામૃત. તત્કાળ જીવ બળને પામી જાય – તત્કાળ. ભગવાન ને ભગવાનના ભક્તની સંતના વચનથી મન, કર્મ, વચને સેવા કરો, તો જીવ તત્કાળ બળને પામી જાય.** મને કરીને નિર્દોષ માનો, વચને કરીને ગુણગાન ને મહિમા ગાઓ. એમાં કોઈ જ્ઞાન લેવા જવું પડે છે? તમે વચનામૃત ન વાંચો, સ્વામીની વાતોનો રેફરેન્સ ન હોય – તોય વાંધો નહીં. 'ઓહોહો, પ્રવીણભાઈને ધન્ય છે – પ્રવીણભાઈને ધન્ય છે – પ્રવીણભાઈને ધન્ય છે' એટલું કહેવામાં કોઈ ના પાડે છે? ઠાકોરભાઈ ને આ બધાં ભાઈઓના ગુણગાન ગાવા. બધાંના ગુણગાન ને મહિમા છૂટથી ગાઓ ; વધારે ગુણ ગાશો તોય પ્રૉબ્લૅમ નથી. વચને કરીને ગુણગાન ને મહિમા ગાઓ. કર્મે કરીને – દેહે કરીને સેવા કરો અને દેહથી સેવા નહીં થતી હોય, તો જે દેહ વાપરીને ધન કમાઈએ છીએ, પાંચ-દસ ટકા એનાથી સેવા કરો. થઈ ગઈ સેવા. મન, કર્મ, વચને સેવા કરવાથી જીવ બળને પામશે. તો, શું પછી કુસ્તી કરવાની? બળને પમાશે એટલે ભગવાન ને ભગવાનના ભક્તમાં નિર્દોષભાવ થતો જશે.

યાદ રાખો, જેનો આત્મા નબળો છે ; જે માણસો બીકણ છે, **જે માણસોના આત્મામાં તાકાત નથી, એ લોકો બીજાંના સુખ જોઈ-જોઈને દુઃખી થાય છે. ફરિયાદો કર્યા કરતા હોય, ઢીલાઢપ રહેતા હોય, વારે-વારે ખોટું લાગી જતું હોય, એ બધાં – માનજો કે વીક આત્માઓ છે. એમણે બળ માટે ફટ્ દઈને ઇન્જેક્શન લેવું હોય, તો મન, કર્મ, વચને કરીને સેવા કરે. તો, તાકાત આવી જશે, એમાંથી નીકળી જશે.** આ વસ્તુ કરવાની છે.

અમેરિકામાં હમણા એલનટાઉન મંદિરનો દસમો પાટોત્સવ ઊજવ્યો, એમાં જુવાન દીકરા-

દીકરીઓએ જે કામ કર્યું છે, એથી મસ્તક નમી જાય. 'ક્યાં જન્મ્યા, ક્યાં ઊછર્યા, ક્યાં ભણ્યા'– ત્યાંનું જ બધું કલ્ચર છે એમનું. પણ એક વસ્તુ – કે અશ્વિનભાઈ અને શાંતિભાઈના જોગે કરીને, હળીમળીને એકમના થઈને **'ટીમ સ્પીરિટ'**થી એમણે પાંચ દિવસનો ઉત્સવ કર્યો. હજારો માણસ આવ્યા, પણ એટલું બેસ્ટ પ્લાનીંગ – કલ્ચરલ પ્રોગ્રામથી માંડીને બધું કે આપણું મસ્તક નમી જાય. આ છોકરાઓમાં આવ્યું ક્યાંથી ? પૂર્વના મુક્તો ! બસ, એક ટ્રેક પર ચઢી ગયા. કોઈનું જોયા વગર – કોઈ કામ કરે, કોઈ નથી કરતો, કોઈ આવે છે કે નથી આવતો – કાંઈ જોયા વગર, મારે ભગવાનને રાજી કરવા માટે જે કરવાનું છે તે કરવું છે. પણ કોઈની લપછપમાં પડવું નથી. તો અમેરિકા જેવા દેશમાં છોકરાઓ નિયમ-ધર્મ પાળે છે. એટલું જ નહીં, એકાદશીઓ પણ નિર્જળા કરે છે. હજુ એકાદશીનું વ્રત બધાં નથી કરી શકતા. થાય છે આપણાથી ઉપવાસ ? જુઓ, ગુરૂજી ના પાડે છે. આ છોકરાઓ – જુવાન છોકરાઓ. કોઈ પણ વસ્તુ ખાય તો ઈન્ગ્રેડિયેન્ટ્સ વાંચે, પછી જ ખાય. એ નિયમ-ધર્મ તો પાળે છે ; પણ આ જે વસ્તુ એમાં આવી, ઊગી એ ખરેખર ભગવાનની કૃપા.

આવો સાયન્સની ટૅક્નોલૉજીથી આખો યુગ બદલાઈ રહ્યો છે. યાદ રાખો, અમે સ્ટેજ પર બેઠા બધાં – તમે 'ગુણાતીત સ્વરૂપ' કે જે ટાઈટલ કહેતાં હોય એ કહો, પણ અમે આ મૉડર્ન જમાનામાંથી બ્હાર નીકળી ગયા. મોબાઈલ ચલાવતા નથી આવડતો અમને. ફોન કરી આપે તો અમે ફોન કરીએ. સ્વામી, વાત સાચી કે ખોટી ? અમને આ આઈ પેડ, આ ફટ્-ફટ્ ફોટા પાડે. હું પૂછુ કે શું કરો છો તમે આ ? આખો યુગ બદલાઈ ગયો છે, સાયન્સની ટૅક્નોલૉજીથી. એમ સ્પીરીચ્યુઅલ સાયન્સની ટૅક્નોલૉજીએ બધું બદલી નાખ્યું છે.

અમે જૂના જમાનાની વાત કરીએ, તો એમાંથી (તમારે) લેવાની જરૂર નથી. **મૉડર્ન પકડી લ્યો.**

કોઈ ગુણાતીત સ્વરૂપમાં વળગો,
બે હાથ જોડીને એની આજ્ઞા પાળો,
કોઈની ખટપટ, માથાકૂટ, નિંદા વગર ગુણગાન છૂટથી ગાઓ.

બસ, તમે મૉડર્ન સાયન્સમાં આવી ગયા, અક્ષરધામરૂપ થઈ જશો, હસતા-હસતા.

એટલું સરસ આજે આ જુવાનિયાઓએ પકડયું અને આમ જુવાનિયા જ પકડી લે. પણ જ્યારે નવું આવે, જેમ કે – આ ફોન બદલવાનો હોય, તો મોટું માણસ ઝટ ન બદલે કે નહીં ફાવે. આ જુવાનિયા ફટાફટ ફોન બદલી નાખે. એમ **આ યંગસ્ટર્સ આવી વાતને પકડી લે છે અત્યારે** અને એમાં ખરેખર એમનું આખું કલેવર બદલાતું જાય છે. આપણે ખૂબ સુદંર યુગમાં આવ્યા છીએ. ભગવાનની અપરંપાર કૃપા છે. તો, આપણે આ વસ્તુ લઈને જઈએ.

આખી સાયન્સની ટૅક્નોલૉજીએ જેમ નવીનતા કરી, એમ કાકાજી ને પપ્પાજી દ્વારા યોગીજી મહારાજે ગુણાતીતભાવને પામવા માટે નવીનતા ડૅવલપ કરી. આખું નવું સાયન્સ એમણે ઊભું કર્યું-એમના દ્વારા. એમાંથી ગુણાતીત સમાજનું સર્જન થયું. એ ગુણાતીત સમાજમાં આપણે આવ્યા છીએ. ગુણાતીત

સમાજમાં આ રીતે એકતા-સુહૃદ્‌ભાવ રાખીને આપણે બધાંય હળીમળીને કામ કરીએ. જ્યાં છીએ ત્યાં એક ગુરૂના થઈને પ્રમાણિકતાથી એમને સેવીએ, એમની આજ્ઞા પાળીએ, સંપ, સુહૃદ્‌ભાવ રાખીએ.

ખરેખર, ફરીથી પ્રવીણભાઈ, મુકુંદભાઈ, ઠાકોરભાઈ, બકુલેશ ને પેરિસ મંડળના બધાં ભાઈઓને, દેશ-પરદેશથી આટલાં અક્ષરમુક્તોને ભેગા કરી, આવો અદ્‌ભુત લાભ અપાવવા બદલ ખૂબ અભિનંદન. ખૂબ સુંદર વાતો થઈ. આમાંથી જે સારૂં છે એ લઈને જવું. યોગી બાપા કહે–*આપણને જે ગમ્યું હોય એ લઈ, બાકી બધું છોડીને જવું, એ સાચી સાધના છે.* સહુના હૃદયમાં પ્રભુને રાજી કરવાનો ઉમંગ-ઉત્સાહ વધતો જાય ને હળીમળીને, એકમના થઈને પ્રભુની પ્રસન્નતાનું પાત્ર બની, **કાકાજી-પપ્પાજીએ, શાસ્ત્રીજી મહારાજ ને યોગીજી મહારાજના દાખડાને સાકાર કરવા માટે જે તપશ્ચર્યા કરી છે,** એ તપશ્ચર્યામાં આપણે આપણાં તરફથી જે રીતે આહુતિ આપવાની હોય, એ આપીને આપણી ભક્તિ અદા કરીએ. એ કરવા માટે સર્વને બળ, બુદ્ધિ ને પ્રેરણા આપે.

ગુરૂજી, દિનકરભાઈ, ભરતભાઈએ ખરેખર કાકાજીનો વારસો રાખ્યો. જુઓ, **ગુરૂજી**એ દિલ્હીમાં ખરેખર શૂન્યમાંથી સર્જન કર્યું. મને યાદ છે–ગુરૂજી ૧૯૬૯માં વિદ્યાનગર પપ્પાજીના આશીર્વાદ લેવા આવ્યા'તા. તો પપ્પાજી કહે–*ચાલો, આપણે ગુરૂજીની સભા કરીએ.* દિલ્હી જાય છે એટલે સભા કરી, આશીર્વાદ આપીને પપ્પાએ મોકલ્યા. ગુરૂજી કહે–(હું તો) *કાકાજીની આજ્ઞાથી જાઉં છું, બસ.* એટલે પપ્પાજી કહે કે– *'ભગવાન તારી સાથે છે, તું નિશ્ચિંત રહેજે.'* ગુરૂજી ગયા ત્યાં, ત્યારે કોઈ મોટો ભક્ત સમાજ ન્હોતો. કોઈ ભગત જ ન્હોતા, એમ કહીએ તોય ચાલે. પણ કાકાજીના વચને એકલા ગુરૂજી, પ્રેમસ્વામી ને સંતો ગયા. ગુણાતીત સત્પુરૂષને વિષે હેત ને પ્રભુના ભાવથી એમાં જોડાએલા–એટલે આજ્ઞા પાળી. કોઈ ફૅક્ટર્સ દિલ્હીમાં મદદરૂપ ન્હોતા. ત્યાં ઠંડી બહુ પડે. કોઈ હરિભક્તે ય ન આવે, કોઈ સેવકે ય ન હોય. એટલી બધી ઠંડી પડે અને ગુરૂજીને ન્હાવા માટે ગરમ પાણી જોઈએ. મને યાદ છે કે અમારાં પ્રેમસ્વામીએ ગરમ પાણી લાઈને આપ્યું, ગુરૂજી પૂછે કે *લાકડાં તો છે નહીં, ક્યાંથી સળગાવ્યું?* તો કહે કે *લાઈબ્રેરીની બધી ચોપડીઓ હતી, એ બધી સળગાવી દીધી.* નીચે લાઈબ્રેરી હતી, એના કબાટો ખાલી કરી નાખ્યા! પણ પ્રેમસ્વામીએ ગુરૂજીને નવડાવ્યા. આવી પરિસ્થિતિમાં ગુરૂજી ગયા. અત્યારે આપણે હસીએ, પણ ખરેખર કાકાનું હેત ને કાકાને રાજી કરવાનો ભાવ ન હોય, તો કોઈ રહે નહીં; પણ એ રહ્યા. એક વરસ, બે વરસ, અરે પાંચ-સાત વરસ સુધી કોઈ ભગત જ દેખાય નહીં. અત્યારે તમે જુઓ **તો પ્રસન્નતાનું અદ્‌ભુત પાત્ર બની, કાકાનું સ્વરૂપ બની ગયા** અને દિલ્હી મંડળના બધાં ભક્તોને તમે જુઓ તો ખુશ થઈ જાઓ. એક-એક ભક્ત નવા જ છે બધાં, પણ મને ને તમને આશ્ચર્ય થાય એવી સમજણથી ભક્તિ કરી રહ્યા છે.

એવું **દિનકરભાઈ**–'૭૩માં અમે ગયા; કાકાએ ન્યૂયૉર્કથી ફોન કર્યો. આપણાં રૂપિતનો જન્મ થયેલો, તો કાકા કહે કે *હું આવું.* અમે છઠ્ઠે દહાડે પહોંચ્યા. સુધાબેનને કહે કે *તારા રૂપિતના છઠ્ઠીના*

લેખ લખવા આવ્યો છું, લાવ લખી દઉં હં. દિનકરભાઈ સ્વામિનારાયણના હતાં—વરતાલના. વિરસદવાળા જ્ઞાનજીસ્વામીના આશીર્વાદ લઈને એ ગયેલા. કાકા પૂર્વના આત્માને ઓળખે, એટલે પાછળ જ પડી ગયા અને દિનકરભાઈને ત્યાં વૉકિંગનમાં મંદિર કર્યું. **દિનકરભાઈ પણ કાકા સાથે અસાધારણ હેતથી જોડાઈ, કાકાજીની આજ્ઞા બે હાથ જોડી પાળી, અત્યારે કાકારૂપ થઈ ગયા, કાકાનું કામ કરતા થઈ ગયા.** ત્યાં કેટલો બ્હોળો સમાજ ઊભો કર્યો છે.

અને... **ભરતભાઈ તો** કાકાજી સાથે જ રહ્યા છે. **કાકાજીની અનન્ય પ્રીતિનું પાત્ર.** ભરતભાઈ—એકદમ સેવકભાવ! બે હાથ જોડીને કાકા કહે, એમ કરે. **કાકાએ** પોતે **કહ્યું છે** કે ***આ ભરત મન વગરનો છે. ભરત દ્વારા પ્રગટ રહ્યા.*** ભરતભાઈ પણ એવા અદ્‌ભુત. ભરતભાઈ, વશીભાઈ, મહેન્દ્ર બાપુ **અમારાં પવઈ મંદિરે નવ યોગેશ્વરો છે.** એ **નવ યોગેશ્વરોએ ધૂણી ધખાવી ને આખી પવઈની શકલ બદલી નાખી.** મુંબઈ જઈએ તો પવઈ મંદિર દર્શન કરવા જેવું છે. અત્યારે છે, એવું ત્યાં કંઈ હતું જ નહીં. ખાડા-ટેકરા, ડુંગરા સિવાય કાંઈ નહીં. એક વાર વશીના જન્મદિવસે મારે જવાનું થયું, ને એટલો બધો વરસાદ હતો, તો બે માઈલ તો ચાલીને જવું પડયું. પણ ત્યારે કાકાજી કહેતા— *આ અમારું ઇન્ટરનેશનલ સેન્ટર બનવાનું છે.* કાકા માટે પ્રેમ, એટલે શંકા ન કરીએ; પણ એમ થાય કે ક્યારે થશે? અત્યારે તમે જાઓ તો અમેરિકા દેશમાં આવ્યા હોઈએ એવો અદ્‌ભુત એરિયા અને મંદિર થઈ ગયું છે. આ અમારાં નવ યોગેશ્વરોએ ભેગા થઈને બનાવ્યું. એમાં ગૃહસ્થ થકાં સાધુનું જીવન જીવતો **ઘનશ્યામ**. આ બધાં સમૈયા પાછળ—અહીં લ્યો, અમેરિકા લ્યો, પવઈ લ્યો—એ સમૈયા પાછળ જો ખરેખર કોઈની જબરજસ્ત મહેનત ને પુરૂષાર્થ હોય તો ઘનશ્યામનો. કાલે જે કલ્ચરલ પ્રોગ્રામ થયેલો, કાકાજીનું પાત્ર ભજવ્યું એ **દર્શન**. ખરેખર, કેટલાકે કાકાજીના દર્શન નથી કર્યા કે કાકાજીના યોગમાં નથી આવ્યા, પણ અમે તો કાકાજીની સાથે રહેલા; એગ્ઝૅક્ટ કાકાની ઝાંખી કરાવે, એવી બધી એકશન્સ હતી, એવો દેખાવ-બધું જ. આવા કાર્યક્રમે ય થયા. અને **સ્વામિજી** તો—આવી તબિયત છે, છતાં આવ્યા. **અમે બધાં જ કાકાજી-પપ્પાજીના પ્રેમમાં જો પડયા હોય, તો એનું મૂળ કારણ છે હરિપ્રસાદસ્વામી. હરિપ્રસાદસ્વામીએ ખરેખર અમારાં ગુરૂ તરીકે કામ કર્યું છે. એમણે અમને જે અદ્‌ભુત વાતો કરી, તે વખતે કાકાજી-પપ્પાજીના ગુણગાન ગાવાનો કે સાંભળવાનો કંઈ માહોલ જ ન્હોતો. એ વખતે હરિપ્રસાદસ્વામીએ યુવક તરીકે—પ્રભુદાસ તરીકે એટલા બધાં ભાવથી કાકા-પપ્પાને માની, બધાં જુવાનો પાસે હૃદયના ભાવથી ગુણગાન ને મહિમા ગાયા.** એમાં અમારાં ઘણાં યુવાનોને તે સમયે-બાપાના વખતે કાકા-પપ્પાને વિષે પ્રેમ ને ભાવ થયેલો.

આવા અદ્‌ભુત સમાજમાં આપણે આવી ગયા છીએ. એ ભક્તિ અદા કરવાની આપણને અદ્‌ભુત તક મળી છે; એ વેડફી ન નાખીએ ને જાગ્રતતાપૂર્વક હળીમળીને એકમના થઈને સર્વના ગુણગાન મહિમા ગાઈ અને જે સત્પુરૂષના વિષે ભાવ છે, એની આજ્ઞા પાળી જીવન જીવી સુખિયા-સુખિયા થઈએ—એવી કાકા-પપ્પાના શતાબ્દી પર્વે પ્રાર્થના—જય સ્વામિનારાયણ.

14 अगस्त, 2013 सायं – 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव', पेरिस

प.पू. भरतभाई (पवई)

...शताब्दी महोत्सव का प्रथम चरण बहुत-बहुत उल्लास, उमंग एवं भक्तिभाव से मनाने का अवसर हमें प्राप्त हुआ। अक्षरविहारीस्वामिजी यहाँ आने वाले थे, लेकिन पासपोर्ट की कुछ प्रॉब्लॅम की वज़ह से उनका आना संभव नहीं हो सका। पर, उन्होंने बताया कि वे वलसाड़ के नज़दीक एक शिविर रखेंगे और ये तीन दिन जैसा पेरिस में उत्सव मनाएँगे, वैसा हम यहां मनायेंगे। तो वहां भी तीन दिन सब भक्त लोग इकट्ठे होकर ये आनंद कर रहे हैं।

...काकाजी और पप्पाजी का माहात्म्य हम क्या गाएँगे ? मगर **हम अपने आपको धन्य करने के लिए यह फंक्शन मना रहे हैं...** जो भी कसर है, वो माहात्म्य की है...

काकाजी के पास हम जब शुरुआत में आए थे, तो काकाजी के लिए एक लेटर आया था। वो एग्री ओरियन्ट इण्डस्ट्रीज के डायरेक्टर के लिए लेटर था। काकाजी ने वह लेटर खोला, तो उसमें लिखा था कि–*यू हॅव टु पे वन लॅख सेवन्टी फाइव थाउज़न्ड रुपीज़ ऐज़ एन एरियर।* इन्कम टेक्स से डायरेक्ट एनक्रोच्मेंट नोटिस था, एटैचमेंट जैसा था। वशीभाई उस समय सी.ए की पढ़ाई कर रहे थे। नोटिस पढ़ कर काकाजी वशीभाई से बोले–*यह जो 'तुमड़े' ऑफिसर है, हमें उसका कल्याण करने के लिए जाना है !* हमें सिर्फ नोटिस ही आए, तो घबरा जाते हैं।

एक भक्त काकाजी के पास आकर रोने लगा था कि *काकाजी, मुझे इन्कम टेक्स का नोटिस आया है। 10,000 हज़ार रुपये भरने के लिए कह रहे हैं।* वह बोला–*काकाजी मैं दस हज़ार क्या, 100 रुपए भी नहीं कमाता हूँ, अब मैं क्या करूं ? मैं तो मर गया। खाना खाने का मन नहीं करता।* काकाजी ने उसे बताया कि *यह टाइपोग्राफिकल एरर है। तुम जाओ और उसे कहो कि तुमने यह क्या भेजा है ?* वे वहाँ गए, तो इन्कमटेक्स अफसर ने बताया कि *भाई सॉरी, यह तो टाइपोग्राफिकल एरर है। बीच में पॉइंट लगाना रह गया है, 100 रुपये हैं।* **काकाजी ऐसे पुरुष थे, जिन्हें सब कुछ दिखाई पड़ता था।** उन्हें मालूम था कि मैं इन्कम टेक्स आफिसर का कल्याण करने वाला हूँ। हक़ीक़त में उसे सत्संगी बनाया। ऐसे पुरुष के संबंध से नॉन-सत्संगियों को भी भगवान ले लेते हैं। तो हम तो उनके संबंध में आए हुए हैं, हमें कितना कैफ़ होना चाहिए।

काकाजी की छोटी से छोटी क्रिया के पीछे कुछ रहस्य होता था। 1981 में राजुभाई भट्ट काकाजी के साथ 'पंचयज्ञ' किताब का काम कर रहे थे। काकाजी ने इंगलिश में लिख कर पूरी बुक तैयार करवाई। पेज वगैरह सब फिक्स हो गए। लास्ट में काकाजी बोले–*इसमें हमें गुलज़ारीलाल नंदाजी का रिव्यु लेना है।* तो राजुभाई ने कहा– *एक पेज बढ़ाएँगे, तो चार पेज बढ़ाने पड़ेंगे।* काकाजी ने कहा–*भले चार पेज बढ़ाने पड़ें, मगर उनका रिव्यु आना चाहिए।* फिर काकाजी ने गुलज़ारीलाल नंदाजी से बात करके मॅटर किताब में एड भी कर दिया। राजुभाई ने बोला भी–*काकाजी, अननेसेसरी एक पेज के लिए चार पेज एड हो जाते हैं और फिर बुक की कीमत बढ़ती है।* वे काकाजी के साथ अमेरिका जा रहे थे, तो बुक भी साथ लेकर गए थे।

...अमेरिका में एक दिन अपने चंद्रकांतभाई का बड़ा लड़का काकाजी के साथ बहुत बहस करने लगा। बहुत इन्क्वायरी की और क्वेश्चन पर क्वेश्चन करने लगा। काकाजी ने उसे अपनी वह बुक दी। काकाजी ने कहा–*तुम यह बुक पढ़ लो, तुम्हारे सब क्वेश्चन्स का आन्सर मिल जाएगा।* उसने वो बुक ले ली और बोलता है–*मैं ऐसी बुक पढ़ता नहीं हूँ। जिस बुक में फर्स्ट पर्सन का रिव्यु होगा, फॉरवर्ड होगा उसे ही मैं पढ़ता हूँ।* काकाजी ने पूछा–*अमेरिका में फर्स्ट पर्सन कौन है ?* वह बोला–*प्रेसिडेंट।* काकाजी बोले–*इंडिया में फर्स्ट पर्सन किसे कहते हैं ?* वो बोला–*प्राइम मिनिस्टर।* काकाजी बोले–*इसमें गुलज़ारीलाल नंदा – एक्स प्राइम मिनिस्टर का रिव्यु है।* तो उसने बुक तुरंत ले ली। उस समय राजुभाई भी साथ में ही खड़े थे। तब राजुभाई को पता चला कि काकाजी को कितना वीज़न था कि कौन यह बुक लेने वाला है और किसकी रिक्वायरमेंट क्या है। यूँ, उनकी सब क्रियाओं के पीछे कुछ रहस्य होता था, जो हमें समझ नहीं आता है।

काकाजी हमेशा कहते थे–*आप मेरे साथ सिर्फ दो बार भजन में बैठो, बाकी सब मैं करूंगा।* ऐसे गुणातीत पुरुष कहां मिलेंगे जो ऐसा कहें। पर, वो भी करना हमारे लिए आसान नहीं था। लेकिन, काकाजी के साथ ऐसा प्रेम था, तो सुबह-शाम बैठ जाते थे। उससे ही जीव को बल प्राप्त हुआ। ऐसे काकाजी पर-गरजु थे; पर-गरजु मतलब किसी की भी हेल्प करनी।

हम अपनी विशिष्टता, अपनी सुविधा देखते हैं, सामने वाले की सुविधा नहीं देखते। एक बार काकाजी ट्रेन में ट्रावल कर रहे थे और फर्स्ट क्लास में उनकी लोअर बर्थ थी। उनके साथ वाले व्यक्ति की अपर बर्थ थी। वह सोच रहा था कि मैं ऊपर चढ़ नहीं सकता हूँ, मुझे लोअर बर्थ चाहिए। काकाजी उसके मन को जानकर बोले–*आपको क्या तकलीफ है ?* वो बोला–*मुझे लोअर बर्थ चाहिए।* पर, वो काकाजी की तरफ देखकर बोला–*आप कैसे चढ़ोगे ?* काकाजी तो कुछ सुने बिना ही ऊपर चढ़ गए और बोले मैं यहाँ ऊपर सो जाता हूँ, तुम नीचे सो जाओ। बाद में जब स्टेशन पर उतरे तो उसने पूछा–*आप कौन हो ? मैं अपनी जिन्दगी में ऐसा दूसरा व्यक्ति देख रहा हूँ, जो दूसरे को इस प्रकार से हेल्प करता हैं और अपना गिनता नहीं है।* फिर उसने बताया–*ऐसे एक योगीजी महाराज थे और दूसरे मैंने आपको देखा !* फिर काकाजी ने बताया–***मैं उन्हीं योगीजी महाराज का शिष्य हूँ।*** **ऐसे पुरुष हमें मिले, वो बहुत-बहुत भाग्य की बात है।**

पप्पाजी का एक प्रसंग मुझे बहुत पसंद है, वो इसलिए कि पप्पाजी एकदम स्पष्ट थे। उन्हें एक भक्त ने पूछा–*पप्पाजी, आप बैठे हो और आपके ऊपर आपकी मूर्ति बैठी है। इन दोनों में फर्क क्या है ?* पप्पाजी ने एकदम सहजता से कहा– *इस मूर्ति में कभी मनुष्यभाव नहीं आएगा और मैं जो बैठा हूँ, उसमें कभी दिव्यभाव नहीं रहेगा, इतना फर्क है।* तो, **जिस रूप में हमें प्रभु मिले हैं, उनमें अखंड दिव्यभाव और अखंड महिमा से जीवन जीना, वो काकाजी और पप्पाजी की दृष्टि थी, वो दृष्टि वे हमें देना चाहते थे।**

जब काकाजी को साक्षात्कार हुआ, तब कोई भी उनके पास आता, तो वे उसे योगीजी महाराज के पास भेजते थे व एक दर्शन और एक दृष्टि देते थे कि–आप योगीजी महाराज के पास जा रहे हो, तो आपको किस दृष्टि से दर्शन करना है। उनके पास हमेशा 'हाँ' कहना, उनके पास हमेशा हाथ जोड़ना। वे सामान्य व्यक्ति नहीं हैं। वे भगवान के-साक्षात् अक्षरपुरुषोत्तम के स्वरूप हैं। तो, वे जो कहें उसमें आप 'हाँ' करना। इससे बहुत लोगों को लाभ हुआ।

गोरधनकाका का ऐसा प्रसंग है। पहले ही दिन से काकाजी ने उन्हें कहा–*आप बापा के पास जाओगे, तो 'हाँ' बोलना।* बापा सबकी श्रावण महीने की सेवा लिखवाते थे। गोरधनकाका जब बापा के पास गए तो बापा ने कहा– *आपकी श्रावण महीने की सेवा।* फिर बापा बोले–*आपकी सेवा 2 हज़ार रुपये लिखवाओ।* उस समय उनकी 250 रुपया तनखाह थी; उसमें दो हज़ार रुपया सेवा? मतलब, पूरे साल की तनखाह देनी पड़े। पर, गोरधनकाका को काकाजी का पूरा भरोसा था। काकाजी तो उन्हें यहां तक कहते–*आप योगीजी महाराज को 'ना' नहीं कहना, 'हाँ' ही कहना। आपसे यदि नहीं हो सके, तो मुझे कहना, आपकी ओर से वो मैं कर दूंगा। मगर योगीजी महाराज को 'ना' नहीं कहना।* ऐसे पुरुष जब हमें प्राप्त हुए हैं, तो हम उनका और तो क्या गुणगान गाएँगे?

'जेवा में निरख्या रे' में ऐसे सारे प्रसंग बताए हैं। एक भक्त ने मुझे कहा था कि हमने सब प्रसंगों की कम से कम 15-20 बार पारायण की है और बार-बार पारायण करता हूँ। बुक पढ़ कर इन सब प्रसंगों में हमें डूबना है। **स्वामिजी** हमेशा कहते हैं कि ***ऐसे गुणातीत पुरुषों और ऐसे प्रसंगों में जब हम डूबेंगे, तो हम में वो महिमा जाग्रत होगी।*** बार-बार याद करते रहना है।

हमारे जीवन में भी ऐसे कई प्रसंग है। काकाजी हमेशा बात करते थे–*शास्त्रीजी महाराज ने मेरी प्लेन में रक्षा करी। सामान्य प्रसंग है कि प्लेन में दर्शन दिया। प्लेन जल जाने वाला था, हम उतर गए, रक्षा की।* पर, यह प्रसंग काकाजी के मुख से हमने 100 बार सभा में सुना होगा। यह प्रसंग वे इतने माहात्म्य से बताते थे कि *शास्त्रीजी महाराज ने ऐसी हमारी रक्षा की। शास्त्रीजी महाराज ने दर्शन दिया। हमने नहीं माना, तो भी शास्त्रीजी महाराज ने दूसरी बार दर्शन दिया और मेरी रक्षा की।* भगवान हमारी भी हमेशा रक्षा करते हैं। पर, हम उन्हें इस तरह याद नहीं करते। हम भूल जाते हैं कि भगवान ने हमारी रक्षा की। **ऐसे गुणातीत पुरुषों के प्रसंग याद करने से हमें पता चलता है कि–हमें कैसा जीवन जीना है और ये प्रसंग हमारे लिए, हमारे रूपान्तर के लिए, हमें बल देने के लिए हैं और वो हमारा प्रसंग है।** तो, इस तरह से हम इन पुरुषों के प्रसंगों में डूबें। आज के दिन हमें यह संकल्प करना है...

आज **साहेबजी** ने भी सुबह चाबी बता दी–***आपको यदि प्रोग्रेस करनी है, तो कुछ करो मत। आप जहां हो, जिसके साथ भी जुड़े हो उसके पास दो हाथ जोड़कर वे जैसा कहते हैं, वैसा करने लगो। किसी की खटपट में – माथा कूट में मत पड़ो और महिमा व गुणगान गाते रहो। आप अक्षरधाम का सुख यहीं ले पाओगे।*** साहेब ने एकदम सिम्पल–ये जो नवनीत बोलते हैं न, अर्क बताया। तो आज हम यही प्रार्थना करेंगे।

आज सुबह हम बस में आ रहे थे। जब बस चलनी शुरू होती है, तो सत्संग, भजन, धुन इत्यादि कराते हैं और बाद में हम हर रोज एक सूत्र बताते हैं। आज सूत्र बताया कि इस समैया में से आपको जो भी अच्छा लगा हो, वैसे 25 मुद्दे लिखो और हर रोज उसे पढ़ो कि–यह प्रसंग अच्छा लगा, साहेबजी ने हमें ऐसा आनंद कराया, दिनकरभाई ने यह बात की थी, गुरुजी ने ऐसी बात की थी, स्वामिजी ने ऐसी बातें करी थी। क्योंकि हमारा नेचर है भूलना। हम भूल जाएँगे कि आज यह बात हुई थी और बाद में जब दोबारा ऐसा प्रसंग आएगा, दोबारा इन पुरुषों को यह याद कराना पड़ता है।

तो, ऐसे गुणातीत पुरुषों की हम पर बहुत-बहुत करूणा है कि ऐसे महोत्सव मनाने का हमें अवसर देते हैं... आज हमारा पूरा गुणातीत समाज जिस उत्साह और उमंग से जीवन जी रहा है, उसके आनंद में झूलना है। आज भी हमें ऐसे सत्पुरुषों का संग दिया है और उनके प्रति हमारा यही भाव हमेशा बना रहे कि हम तो आपके बालक हैं–आपके भुल्के हैं। इसी तरह से माहात्म्य की दृष्टि से उन्हें देखें, यही आज के दिन प्रार्थना करनी है...

जब दिल्ली में पप्पाजी की मूर्ति स्थापित कर रहे थे, तब गुरुजी ने दिनकरभाई से कहा था कि *आप अभी शाश्वत् पर्व में गए थे, फिर पप्पाजी के अस्थि विसर्जन के लिए हरिद्वार और फिर एक ही महीने के बाद ये मूर्ति प्रतिष्ठा का महोत्सव है। तो, फिर से दिल्ली तक कैसे आएँगे?* उस समय **दिनकरभाई** ने बताया था – ***ऐसे प्रसंग होते हैं, तो मैं अगर अक्षरधाम में गया होऊंगा, तो वहां से भी वापिस ऐसे प्रसंग मनाने के लिए आऊंगा और आना चाहिए।***

ऐसी बात वहां कही तो पूरा माहौल बदल गया और उस समय पप्पाजी की मूर्ति प्रतिष्ठा के समय बहुत भक्त लोगों ने तै कर दिया कि हमें फिर आना ही है, ऐसा यह महोत्सव है। **काकाजी और पप्पाजी का शताब्दी महोत्सव जब-जब मनाया जाए, तब हमें ऐसी इच्छा रखनी चाहिए कि मुझे इस उत्सव में जाना है और मुझे इस उत्सव में भाग लेना है। मुझे इस उत्सव का दर्शन करना है।** हम सभी में ऐसी भावना बनी रहे कि हम अगर अक्षरधाम में भी जाएँ, तो इस उत्सव का लाभ लेने के लिए वापिस आना है और काकाजी-पप्पाजी का यत्किंचित ऋण अदा करने हमेशा कटिबद्ध बनें, उनकी पहचान बनें–यही प्रार्थना।

पू. अमितभाई (शिकागो)

...स्वामिजी का एक प्रसंग मुझे दासस्वामिजी ने बताया था। काकाजी ने पार्थिव देह का त्याग किया, उसके बाद स्वामिजी फर्स्ट टाइम ताड़देव आए थे। ताड़देव में जो नव योगेश्वर हैं, उनमें से एक रमेशभाई भी थे। उन्हें ऐसा भाव था कि काकाजी ने पार्थिव शरीर त्याग दिया है, लेकिन अब काकाजी स्वामिजी के रूप में आ रहे हैं, तो क्यों न हम स्वामिजी को काकाजी के सोफे पर बिठाएँ? स्वामिजी 84 स्टॅप्स चढ़कर ऊपर आए और ऊपर आने पर वहां दंडवत् किया। वहां सोफे के ऊपर रखी काकाजी की मूर्ति हटा ली थी और स्वामिजी से प्रार्थना की कि आप यहां आसन ग्रहण करो। स्वामिजी ने तो पहले नेचरली 'ना' कही कि नहीं-नहीं ऐसे हम नहीं बैठे सकते। फिर ज्यादा आग्रह किया तो स्वामिजी ने कहा कि *यह सोफा शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की प्रसादी का भी है, हम इस पर नहीं बैठ सकते।* लेकिन, रमेशभाई का आग्रह बहुत था, सब भाइयों का आग्रह बहुत था कि आप आसन ग्रहण करो ही करो। स्वामिजी को पकड़ कर बिठाया। पर, स्वामिजी अनकम्फर्टेबली बैठे रहे और फिर थोड़ी ही देर में खड़े हो गए। फिर स्वामिजी ने आशीर्वाद देते हुए रहस्यमय बात की–

आप लोग ऐसा सोचते हो कि मैं यहां नहीं बैठता हूँ, यह एक विवेक है। लेकिन यह आपकी स्थूल दृष्टि है। मैं इस सोफे पर इसलिए नहीं बैठ रहा हूँ, क्योंकि ***आप ऐसा मानते हो कि काकाजी चले गए हैं, लेकिन मैं ऐसा मानता हूँ कि काकाजी सोफे पर अभी भी बैठे हैं और जब आपने मुझे बिठा ही दिया, तो अब मैं ऐसा सोच रहा हूँ कि मैं काकाजी की गोद में बैठा हूँ...***

प.पू. दिनकरभाई (शिकागो)

कल स्वामिजी हम पर इतना बरसे कि पप्पाजी और काकाजी का जो सिद्धांत है, उसे बार-बार दोहरा कर हृदय में बिठाएँ। योगीजी महाराज का पहला सिद्धांत था–संप, सुहृदभाव और एकता; दूसरा–संकल्प, भाव और क्रिया। ये 6 चीज बहुत बड़ी हैं, बहुत पवित्र हैं...

सुहृदभाव का पहला अर्थ है–सु और हृद। हृद का अर्थ हृदय और सु उसके साथ अच्छी भावना, सरसता, सुन्दरता बताने वाला शब्द है। यह गुण काकाजी और पप्पाजी के अंदर अखंड दिखाई देता था।

काकाजी पहली बार जब 1973 में अमेरिका आए, तो साथ में साहेब दादा और हर्षदभाई भट्ट को लेकर आए थे। उस यात्रा में काकाजी **हर चीज में साहेब दादा और हर्षदभाई को ही आगे रखते थे... यूं काकाजी में हमें सुहृदभाव का बड़ा दर्शन होता है।**

वैसे ही पप्पाजी जब भी अमेरिका आते थे, तो हम पप्पाजी के साथ थोड़ा घूमने-चलने के लिए जाते थे। वॉकीगन मंदिर में पप्पाजी शाम को 4 बजे के बाद वॉक करते थे। एक बार वॉक करते हुए पप्पाजी को पांव में थोड़ा दर्द हुआ, तो थोड़ा चक्कर लगा कर कुर्सी मंगवाकर बैठ गए। फिर पप्पाजी ने एक बात बताई–*हम अपने संबंधियों के साथ सुहृद्भाव रखते हैं। हम अपने हरिभक्तों के साथ सुहृद्भाव रखते हैं, मगर मुझे यह दर्द हो रहा था, तो मैं अपने शरीर के साथ भी सुहृद्भाव रखता हूँ। शरीर में थोड़ा सिग्नल आया कि अब थोड़ा आराम करना है। तो शरीर को मैं ज्यादा तकलीफ नहीं देता हूँ और इधर बैठ गया हूँ। शरीर के साथ जितना फ्रेंडशिप रखेंगे, वो उतना अच्छा काम देगा...*

हम हमारे कुटुंब में, हमारी फेमिली में सुहृद्भाव से जीते हैं। एक-दूसरे के लिए हम सह सकते हैं। सुहृद्भाव बढ़ाना है। **हमारे आस-पास के सत्संगियों के साथ भी सुहृद्भाव बढ़े, हरेक की क्रिया हमें अच्छी लगे। हरेक के प्रति हमें पॉजेटिव विचार आएँ, तो नेचरली बड़े पुरुष बहुत राजी हो जाएँगे। बड़े पुरुष के साथ का हमारा संबंध ज्यादा बढ़ जाएगा...**

एक-दूसरे की क्रिया हम संप से कर लें। एक-दूसरे की क्रिया में हम जुड़ जाएँ। उसे सुहृद्भाव कहा जाता है। पप्पाजी एक बार अमेरिका आए थे और करीब 40 बहनों का एक मंडल यूरोप से यात्रा करके अमेरिका आ रहा था। उनकी फ्लाईट अमेरिका में लगभग सुबह 6.00 बजे पहुँचने वाली थी, तो यहाँ सब बहनों ने सोचा कि हम सब एयरपोर्ट पर बहनों के लिए नाश्ता लेकर जाएं। पप्पाजी को पता चला कि कल सब नयी-नयी साधक बहनें आ रही हैं, तो पप्पाजी ने कहा कि *मैं भी आऊंगा...*

सब बहनों ने पप्पाजी से प्रार्थना की– *पप्पाजी आप मत जाना, आपको हम अंतर से लेकर जाएँगे और आप आराम करना।* पप्पाजी ने कहा– *मैं जाऊंगा।* फिर भी बहनों में से आया कि आपको नहीं जाना है। पप्पाजी ने बात ज्यादा आगे नहीं बढ़ने दी। कुछ बोले ही नहीं। पर सुबह 4.00 बजे उठ गए। तैयार होकर दरवाज़े के पास चेयर रखवा कर लकड़ी लेकर बैठ गए। सब बहनें उठीं तो बोलीं कि *पप्पाजी आपको नहीं जाना है।* पप्पाजी कुछ बोले नहीं, बैठे रहे। जब जाने का समय हुआ, तो पप्पाजी खड़े हो गए और बोले–*चलो,*

आपकी गाड़ी में मैं आता हूँ और... पप्पाजी भी उधर आए। उधर बहनों के लिए खूब नाश्ता आया, बहुत आनंद आया था। यूँ, **बड़े पुरुष** इतनी उम्र होने पर भी ऐसे **सुहृद्‌भाव का हमें दर्शन करवाते हैं। शरीर की कोई परवाह नहीं करते हैं।**

स्वामिजी की आज इतनी उम्र है। अमेरिका से खास इस समैया के लिए इधर आए। लास्ट इयर प्रवीणभाई और उनके सब साथीदारों ने जर्मनी जाकर स्वामिजी से प्रार्थना की थी कि *स्वामिजी, काकाजी और पप्पाजी की शताब्दी हम पेरिस में मनाने वाले हैं। तो आपसे प्रार्थना करने के लिए आए हैं और आप जो कहेंगे, वो करेंगे। आप बोलेंगे कि आएंगे तो भी बहुत बढ़िया और आप किसी कारण से नहीं आ सकोगे, तो भी हमारे दिल में आप इधर आए हो ऐसा ही लगेगा।* तुरंत ही स्वामिजी ने अशोकभाई से कह दिया– *मेरा प्लान इधर जाने का कर दो...* और सब प्रोग्राम एडजेस्ट करके स्वामिजी कल यहाँ पधारे। मुझे ऐसा ख्याल था कि यहाँ से स्वामिजी भारत जाएँगे और यहाँ की जर्नी पार्ट ऑफ धी जर्नी होगी। पर, आज अशोकभाई से मैंने सुना कि स्वामिजी वापिस अमेरिका जा रहे हैं। उधर गुजरात कल्चर का कोई प्रोग्राम है और हर साल स्वामिजी एटेंड करते हैं। यह **कितना डीप लेवल का सुहृद्‌भाव है? स्वामिजी अपनी तबियत की कोई परवाह नहीं करते हैं। कल स्वामिजी बार-बार हमें ये संप, सुहृद्‌भाव और एकता व संकल्प, भाव और क्रिया की बात बता रहे थे। इसमें से कोई छोटा-सा भी प्रसंग हमारे दिल में बैठ जाए और यह चीज हमारे लिए कायम के लिए हो जाए, तो बहुत बड़ा कल्याण हो जाएगा। हमारा यहां आने का परिश्रम सफल हो जाएगा...**

आप जो जी रहे हैं और आपके जो-जो एक्शन्स हैं, जो प्रवृत्तियाँ हैं वे हमें भगवान के नज़दीक ले जा रही हैं, प्रभु के पास ले जा रही हैं। उन प्रवृत्तिओं का हम भाव से दर्शन करें-अपने अंतर में उतारेंगे, तो आप जरूर अपनी गोद में बिठाओगे...

પ.પૂ. ગુરૂજી

સવારની સભામાં **શાંતિભાઈ સાહેબે** વાત કરી કે– ***શાસ્ત્રોનું ગૂઢ જ્ઞાન, એના રહસ્યો, એના મર્મો કાકાજી-પપ્પાજીએ ખૂબ સરળ કરીને આપણને આપ્યા.*** આપણે ય કેટલી વાર બધું વાંચ્યું હશે, પણ ગઈ કાલે જેમ સાહેબે વાત કરી કે– *અક્ષરપુરૂષોત્તમનું જ્ઞાન આપવા માટે શાસ્ત્રીજી મહારાજે મંદિરો બનાવ્યા, યુગલ ઉપાસના પ્રવર્તાવી, પણ એની પાછળનો મૂળ હેતુ કે બ્રહ્મસ્વરૂપ સંતના સંબંધે ભગવાનના અખંડ ધારક બનીએ, એ માટે ભગવાન સ્વામિનારાયણે એવું બ્રહ્મતત્ત્વ પ્રગટ રાખ્યું છે, એ મર્મ–અક્ષરપુરૂષોત્તમની ઉપાસનાનો–'પ્રગટ'ની ઉપાસનાનો હતો.* ૪૪ વર્ષ શાસ્ત્રીજી મહારાજે વાતો કરી પણ એ મર્મ પકડાયો નહીં. સાહેબે વાત કરી ૪૪ વર્ષ પ્રગટની ઉપાસનાનું રહસ્ય નથી પકડાયું! વચનામૃતમાં આ વાત બહુ માર્મિક રીતે મહારાજે કરી જ છે–પ્રગટની ઉપાસનાની.

એકાદશીનું વચનામૃત છે–મધ્ય ૮. એમાં એક વાક્ય આવે છે – ***જે કથા-કીર્તનને વિષે ભગવાનનો સંબંધ ના હોય, એ માયિકગુણે યુક્ત છે.*** મારી પાસે નાના ફૉન્ટવાળું એક વચનામૃત હંમેશાં રહેતું હતું. રામકૃષ્ણ મિશનમાં આપણે પહેલાં શિબિર કરતાં હતાં. તે કંઈ આગલે દિવસે જ એકાદશી હશે ને એ વાંચ્યું ને મને એકદમ વિચાર આવ્યો કે 'કથા-કીર્તન' ને ભગવાનનો સંબંધ

ના હોય એ બને જ કેવી રીતે ? ભલે માતા, મહાદેવ, રામ, કૃષ્ણ, ગમે તે – કોઈ પણ ભગવાન, જેને માનતા હોય એનો સંબંધ હોય તો જ કથા-કીર્તન કહેવાય, નહીંતર તો ગ્રામ્યવાર્તા કે ગાયન કહેવાય. મહારાજે આ શબ્દો કેમના વાપર્યા હશે. હું એના વિચારમાં હતો. અને... કાકા ઘણીવાર કહેતા કે ***આપણા ભગવાન તો પ્રગટ છે જ, આપણું જ્ઞાન પણ પ્રગટ છે ; ગમે ત્યાં પ્રગટ થઈ શકે એમ છે.*** તે દિવસે સવારની સભામાં અમે ગયા ; શાંતિભાઈને યાદ હોય તો – આ અંગે ગોરધનકાકાએ વાત કરેલી... મહારાજે જે આ વચનામૃતમાં લખ્યું કે જે કથા-કીર્તનને વિષે ભગવાનનો સંબંધ ના હોય, એ માયિકગુણે યુક્ત છે; એ મહારાજે **'પ્રગટ'**ની વાત કરી છે કે જે કથા - કીર્તનને વિષે **'પ્રગટ ભગવાન'**નો સંબંધ ના હોય એ માયિકગુણે યુક્ત છે. આમ વચનામૃતમાં આ વાત લખેલી જ છે, પણ શાસ્ત્રોના શબ્દો – જેમ સમુદ્રમાં અગાધ પાણી છે, પણ એ પી શકાતું નથી ; ને આપણે આપણી જાતે એમાંથી લેવા જઈશું તો આપણી રીતનો જ ભાંગરો વાટીશું. એવા સત્પુરૂષ દ્વારા જો સમજીશું, જેમ સમુદ્રનું પાણી વાદળ દ્વારા પાછું આવે તો એ પીવાય, એમ એનું એ જ જ્ઞાન યથાર્થ સમજાશે. આ વાત વચનામૃતમાં જ કહી છે એવું નથી. ગીતામાં પણ શ્લોક છે –*જન્મ કર્મ ચ મે દિવ્યં, યોવેત્તિ તત્ત્વતઃ...* આ શ્લોકનો અર્થ તો એ જ છે ને કે – મારા જન્મ અને કર્મને જે દિવ્ય માનીને ગાશે, એ માયા ને તરી જશે. આજે ઠેર-ઠેર ભાગવતની, રામાયણની કથા થાય છે, એમાં બીજું તો કંઈ છે જ નહીં ; ભગવાન કૃષ્ણના ચરિત્રો દિવ્ય માનીને એ વક્તા આપણને સંભળાવે છે, ગાય છે ; આપણે ય સાંભળી છીએ. પણ કોઈને પણ, એ વકતાને કે સાંભળનારાને સાત દિવસની સપ્તાહ પછી પરિક્ષિતની જેમ મોક્ષની પ્રતીતિ નહીં થઈ હોય. એ શ્લોક તો ખોટો ના હોઈ શકે. કાંતિભાઈ દેસાઈએ મને કહેલું કે – *ગુરૂજી, એના પછી જ તરત જ શ્લોક છે – યદા યદા હી ધર્મસ્ય... સંભવામિ યુગે યુગે...* શાસ્ત્રો ગમે એમ હાફાઝાર્ડ નથી. દાસસ્વામીને ખબર હશે, એક 'આનુપૂર્વી સંબંધ' કહેવાય છે. પાછલા શ્લોક સાથે આગલાનો સંબંધ હોય. ગીતાકાર કહેવા એ માંગે છે કે – ***જે વખતે જે રૂપે ભગવાન પ્રગટ હોય, એ વખતનો તત્કાલીન સમાજ જો એ વિભૂતિના જન્મ અને કર્મ દિવ્ય માનીને ગાશે, એ માયાને તરશે.*** આમ આ પણ પ્રગટની ઉપાસનાની વાત છે. અને પાછા આશીર્વાદ આપ્યા કે – *યુગે યુગે હું પ્રગટ રહીશ.*

મહારાજ એથી આગળ ગયા કે **ભરતખંડને વિષે ભગવાન કે ભગવાનના સાધુ હંમેશાં વિચરતા હોય.** કેવા ભવ્ય આશીર્વાદ આપ્યા! **આપણે સહુ જો ખાટી ગયા હોઈએ તો આ આશીર્વાદમાં-આ વરદાનમાં ખાટી ગયા.** સાથે કહ્યું કે – *એની જો કોઈ જીવને* ***ઓળખાણ*** *થાય, તો એ 'ભકત' થાય – 'ભકત' કહેવાય.* 'ઓળખાણ' શબ્દનો અહીં રેફરન્સ જૂદો પડે છે. કાકા એને સમજાવતા હતા – *જાણવું એક વસ્તુ છે, ઓળખાણ જુદી.* તમારે પ્રાઈમ મિનિસ્ટર જોડે ઓળખાણ એટલે એક સંબંધ છે. બીજું, મેં સ્વામીની વાત વાંચેલી કે *સત્સંગ ખૂબ વધશે, પણ આ સાધુ નહીં મળે.* જૂનાગઢમાં છેલ્લે બધી જે વાતો કરી છે એ આ ટાઈપની જ છે. બીજી બાજુ આપણે એ પણ સાંભળ્યું છે કે ગુણાતીત પુરૂષ તો કોઈ દિવસ જવાના જ નથી. એ પરંપરા તો અખંડિત જ રહેવાની છે. **સ્વામીએ** પોતે પણ **કહ્યું** કે ***'તમારા બધાંના'*** *દેહ તો થોડા વખતમાં પડી જશે અને હું તો ચિરંજીવ છું.* એમને પોતાની કેટલી પ્રતીતિ હશે ? સ્વામીએ એમ નહીં કહ્યું કે **'આપણા બધાનાં'** દેહ પડી જવાનાં છે.

સ્વામીએ બહુ સ્પષ્ટ કહ્યું કે *'તમારા બધાનાં' દેહ તો આવરદા આવશે ને પડી જશે, હું તો ચિરંજીવ છું.* મને એમ થયેલું કે એક તરફ એવું કહે છે કે અખંડ રહેવાના છે. મહારાજે આશીર્વાદ આપ્યા છે અને બીજી બાજુ સ્વામી એવું પણ કહે છે કે આ સાધુ નહીં મળે. પછી એકવાર મેં **કાકા**ને પૂછ્યુ કે *આ વાતમાં વિરોધાભાસ નથી? કે પછી જૂનાગઢમાં કોઈ એવી વ્યક્તિ સામે બેઠી હશે?* તો કાકા કહે કે– *તારા ભેજામાં ફરક છે.* ***અહીં જે કહે છે કે 'નહીં મળે' એનો અર્થ એ છે કે એ 'નહીં જડે – નહીં ઓળખાય'.*** અત્યારે મળી ગયા છે – એટલે કે ઓળખાયા છે, તો એને સંબંધે પૂરૂં કરી લો. એટલે કે જ્યારે આવી વિભૂતિઓ હોય, જે સાહેબે વાત કરી– બહુ સરસ વાત કરી કે જ્યારે જે વિભૂતિ હોય, જેમાં આપણે જોડાયેલા હોઈએ, મહારાજે જોડી આપ્યા હોય...

એક વાત ખૂબ ધ્યાનમાં રાખીએ, **સાધુ શોધવાથી મળતા નથી. પ્રભુ કૃપાથી જ મળે છે.** આપણા પર ખરેખર મહારાજની એટલી બધી કૃપા – હું તો મારી જ વાત કરૂં છું કે અહોહો! **આ મહારાજે કહી દો, બાપાએ કહી દો કે મને કાકાજી પાસે બેસાડી દીધો – એ બહુ મોટું કામ કર્યું.** નહીં તો આપણે શું કરતા હોત અહીંયા? અહીંયાં તો હોત જ ક્યાંથી? તો આપણને જે જોગ આપ્યો છે, એ સાધુની સાથે એવા જોડાઈ જઈએ. પણ, આપણે ખોટું માનીએ જ છીએ કે – અમે જોડાયેલા છીએ.

ખ્યાલ હોય તો કાકા વારે-વારે પૂછતા. ધ્યાનમાંથી ઉઠાડે પછી પૂછે – *તમે કોણ? તમે કોના? એ કેવા?* એનો અર્થ હું એવું માનતો કે તમે કોના છો, એ પહેલા નક્કી કરી લો. કોઈ પણ એકના થઈને જીવો. એ સંબંધ આપણે રાખવો જ પડે. **આવા પુરૂષના સંબંધ વગર આપણો કોઈ શક્કરવાર નહીં વળે, ગમે તેવા સદ્‌ગુણ હશે, એ ગુણની કોઈ કિંમત જ નથી.** સદ્‌ગુણ હોય, દુર્ગુણ હોય – બધાં કાખના મુવાળા સરખા જ છે. **અલ્ટીમેટ્‌લી 'સંબંધ' કામ કરવાનો છે.** સંબંધ વગર આપણે ગમે એટલી મેહનત કરીશું, કોઈ આપણું સાંભળશે જ નહીં. ભગવાન પણ એની સાથેના સંબંધે જ આપણને વશ રહેવાના છે. સ્વામીએ એક જગ્યાએ કહ્યું કે ***રક્ષા કરવાનો ભગવાનનો સ્વભાવ છે.*** ભગવાનનો સ્વભાવ જ છે કે ભક્તોની રક્ષા કરવી. આપણે ઘણીવાર એવું માનતા હોઈએ છીએ કે આપણે આવા છીએ, આપણી પ્રાર્થના સાંભળશે કે નહીં સાંભળે? આપણી રક્ષા થશે કે નહીં થશે? એવું નથી. જો આપણા ગુણ જોઈને એ આપણી રક્ષા કરવાના કે ન કરવાના હોય, તો એનું બિરૂદ ખોટું પડે. **પણ આપણે એના હોવા જોઈએ.** ઘણીવાર બધાં કહે છે કે **ભગવાન તો સમદર્શી છે.** ભગવાન હકીકતમાં સમદર્શી નથી. **ભગવાન કેવળ એના ભક્તોના જ છે.** વર્ષો પહેલાં સ્વામી આ વાત કરતા. ગીતામાં શ્લોક છે – *ન મે ભક્તઃ પ્રણશ્યતિ* – **'મારા'** ભક્તનો નાશ નહીં થાય. કેવું સ્પષ્ટ વાક્ય છે? મારા ભક્તનો નાશ નહીં થાય, બીજાં બધાનું જે થવાનું હોય એ થાય. એમ નહીં કે બીજાં બધાનું બગડજો. બીજાં બધાનું સત્યાનાશ થજો – એવું પણ નથી. જગત આખું કાળ, કર્મ અને માયાને સોંપી દીધું છે. જેવા કર્મ કરો એવું ભોગવો. કાળ આવે કે સામેથી જાઓ, ખાઈ જ જશે. માયામાં જશો, ફસાશો જ. પણ **એના ભક્ત માટે એ 'આઉટ ઑફ ધી વે' જઈને પણ** – ભક્તના ગુણ, દોષ જોયા વગર પણ – ધાપોટવો હશે તો મહારાજ પોતે ધાપોટશે, પણ – કાળ, કર્મ અને માયાનું એના પર ચાલવા દેશે નહીં. **એ સંબંધ આપણે કરી લેવો પડે.** પછી એ મધુરભાવે હોય, દાસભાવે હોય,

સખાભાવે હોય, ગમે તે ભાવે હોય ; પણ **એ સંબંધ પાછો 'અનન્યભાવે' હોવો જોઈએ.** કોઈ એકના જ થઈને રહેવું પડે. આ પ્રણાલી કાકાએ ને પપ્પાજીએ આપણે માટે ખોલી આપી.

સાહેબે આજે સવારે કેવું શૉર્ટમાં સમજાવ્યું કે—*જેને વળગ્યા છો એની આજ્ઞામાં રહો, એના મુક્તો સાથે સુહૃદ્ભાવ રાખો.* કાકા કહેતા કે *અમે એક વ્યવસ્થા કરી છે*—એ વ્યવસ્થા શું કરી એ સાહેબે આપણને સમજાવ્યું.

કાકા પૂછતા — *તમે કોના ?* ખરેખર જ ભગવાનના હોઈએ—આપણે દાવો તો કરીએ છીએ કે અમે તમારા છીએ. કાકા એની ત્રણ કલમ બતાવતા. એક—સહજ જ એને પ્રભુ સાંભરે, એકચિત્તે પ્રભુને સંભારી શકે. આપણે પણ સંભારીએ છીએ, પણ એક ચિત્તે નહીં સંભારી શકતા હોઈએ. જે ખરેખરો ભગવાનનો હોય એ લય અને લીન થઈને, પછી એ પ્રેમભાવે થાય, ડરના માર્યા થાય કે ગરજે કરીને થાય. ત્રણ પ્રકારે એકાગ્રચિત્ત થવાય—

ક્યાં તો એવા પ્રેમમાં થવાય. કંઈ ભાન જ ના પડે—એને જોઈને.

ક્યાં કોઈ ભય આવે તો, એકદમ ચાલુ થઈ જાય—એક ચિત્તે, મરી ગયા હવે!

અને... ક્યાં તો એવી ગરજ હોય ત્યારે થાય.

એ વગર નહીં કરતા હોઈએ. પણ 'નથી થતુ'—એ મનનાં બહાના છે. આપણે કરવું નથી.

અમે લંડન જ્યોતમાં ગયેલા. ત્યાં જાનબાઈની વાત કરી કે એ છાણાં થાપતી હતી, એ છાણાં ચોરાઈ જતા હતા. પછી એણે નામદેવજીને વાત કરી કે મારા છાણાં ચોરાઈ જાય છે. નામદેવજીને ખ્યાલ હશે કે જે છાણાં ચોરાઈ જાય છે એ ફલાણે ઠેકાણે પડયા હોય છે. એણે કહ્યું કે—*છાણાં તો છે બધાં, પણ તારા છે એ કેવી રીતે ખબર પડશે ?* તો કહે—*જે છાણા મારા હશે એ તમે કાન ઉપર લગાડજો ; એમાંથી 'વિઠોબા-વિઠોબા' અવાજ આવશે.* એણે જે ભજન કર્યું, એની એકાગ્રતાની એને કેટલી બધી સચોટતા હશે ? મેં આ વાત કરી. મને બીજે દિવસે એક ભાઈએ પૂછયું કે *કામ કરતા-કરતા બીજી જગ્યાએ કોઈ એવું (એકાગ્ર) થોડું થાય ?* ત્યાં મને જ એકદમ વિચાર આવ્યો કે આપણે આરતીમાં ઊભા હોઈચે છીએ, ત્યારે તો જઈએ છીએ—આરતીમાં દર્શન કરવા માટે ; પણ ક્યાં-ક્યાં ફરી આવતા હોઈચે છીએ. બીજે કેવા ખોવાઈ જતા હશું કે આરતી પૂરી થઈ જાય તોય આપણને ખબર ના પડે કે હવે શ્લોક ચાલુ થઈ ગયા. આમ જો આપણે આરતીમાં હોવા છતાં બીજે એકાગ્ર થઈ શકીએ છીએ, તો બીજું કરતા-કરતા ભગવાનમાં એકાગ્ર ના થઈ શકાય ? પણ મેં કહ્યું ને કે કરવું નથી કે એવા હેતે કરીને જોડાયા નથી કે એવો ડર આવ્યો નથી. બાકી, આ એક સાયન્સ જ છે. ઘણીવાર કોઈ પિક્ચરોમાં બતાવે છે કે છોકરાએ ચીસ પાડી ને ત્યાં એની માને હૈયે ધક્કો લાગ્યો—એના હૈયામાં ધ્રાસ્કો પડયો કે એના છોકરાને કંઈ થયું. એ શું ? કે—એ છોકરામાં એવી એકાગ્રતા આવી હશે કે એના વેવ્ઝ એકદમ પ્હોંચી ગયા. એ એકાગ્રતા ગમે તે—કોઈ પણ કરે, ગમે તે ભાવે કરે. એ પ્હોંચે જ.

ભરતભાઈએ મને સરસ વાત કરી. અમે પેલા રામ નામના પત્થરની વાત કરતા'તા કે ***રામનામે પત્થર તર્યા.*** એટલે સુધીની વાત આપણે બધાંએ સાંભળેલી.

ભરતભાઈ કહે કે એનાથી પણ આગળ વાત છે.

મેં પૂછ્યું – *શું ?*

*તો કહે – આ વાત લંકામાં પ્હોંચી કે આવી રીતે ત્યાં પત્થર સમુદ્રમાં તરે છે અને પુલ બાંધશે ને રામજીની સેના તો આવી જવાની. બધા રાક્ષસો પ્હોંચ્યા રાવણ પાસે. રાવણને પણ એક વાર તો ધ્રાસ્કો બેસી ગયો. એ પણ ડર્યો. પણ, જો રાજા જ ડરી જાય, તો બધું જ પડી ભાંગે. એટલે એના સૈન્યને મૉરલ સપોર્ટ રહે, તેથી એણે કહ્યું કે તમો નકામા ગભરાવ છો. એ કરી શકે, તો આપણે પણ કરી શકીએ. હું પણ કરી શકું. પછી કહે ચાલો સમુદ્ર કિનારે. એ લઈ ગયો બધાંને સમુદ્ર કિનારે. પત્થર ઉપાડયો અને હતો તો કલાકાર. પાછો હતો શિવ ભક્ત. એણે પત્થર ઊપર પોતાનું નામ લખાવી, પત્થર ઉપાડીને મંત્ર માર્યા અને નાંખ્યો સમુદ્રમાં. તો એ તર્યો ! એવા દસ-પંદર પત્થર નાંખ્યા, તો એ તરવા લાગ્યા. એટલે સહુને થયું કે હવે ડરવાની જરૂર નથી. આ તો આપણે પણ કરી શકીએ. આ વાત મહેલમાં મંદોદરી પાસે પ્હોંચી. એને થયું કે – **'રાવણના નામે પત્થર તરે'**, એ તો કોઈ દિવસ બને જ નહીં.*

એણે એને બહુ પૂછ્યું કે – તમે કર્યું શું ?

તો કહે કે – મેં મારી વિદ્યા અજમાવી.

*મંદોદરીને થયું કે સાચી વાત એ બોલતા નથી. બહુ પાછળ પડી, ત્યારે એણે કહ્યું – **હું દરેક પત્થર આગળ બોલતો'તો કે જો તું ન તર્યો ને, તો તને રામની સોગંદ છે. એટલે પત્થર તરી ગયા છે.** પણ, હવે આ વાત કોઈને કહેતી નહીં.*

જુઓ, ડરના માર્યે, ભયથી પણ એ રામને સંભાર્યા તો કરતો'તો, તો એના કામ થતાં'તા. જો આપણે ભક્તિભાવથી ભગવાનને સંભારીએ, તો આપણાં કેમ કામ ન થાય ?

આવો એક પ્રસંગ કુંભકર્ણનો છે.

કુંભકર્ણે કહ્યું કે – *ઊંઘમાંથી શું કામ ઉઠાડયો ?*

રાવણે આખી વાત સમજાવી.

તો કુંભકર્ણે કહ્યું કે – *તું સીતાને લઈ જ આવ્યો છે, તો એને પટાવી લે. એની આગળ કંઈ પ્રપોઝલ તો મૂક.*

તો એ (રાવણ) કહે કે – *મારી સામે એ જોતી જ નથી.*

તો (કુંભકર્ણ) કહે – *તું એક કામ કર, એ રામ સિવાય કોઈને જોશે નહીં. તું રામનું રૂપ લે.*

રાક્ષસો તો માયાવી રૂપ લઈ શકે છે.

તો (રાવણ) કહે કે – *એ પણ કરી જોયું. પણ, રામનું રૂપ લઉં છું, તો મારામાંથી કામનાનો એ ભાવ જ જતો રહે છે.*

રાવણમાંથી, રામનું ધ્યાન કરવાથી એ વાસના ટળી જતી હોય, તો આપણે દાવો કરીએ કે આપણા તો પ્રભુ પ્રગટ ને સર્વોપરિ. આપણને તો કેવી પ્રાપ્તિ થવી જોઈએ કે સ્થિતિ થવી જોઈએ. એટલે સવારે સાહેબે વાત કરી એ પ્રમાણે આ પેરિસના સમૈયાથી, આપણે તદ્દન **'નવો ઉઠાવ'** લઈએ. એ

નવો ઉઠાવ શું? પ્લૅ પછી **સ્વામી**એ જે આશીર્વાદ આપ્યા – એ કેટલી વાર બોલ્યા કે – ***'આ તમને ચોથી વાર કહું છું'*** – ચોથી વારનું એ વાક્ય પણ સત્તર વાર બોલ્યા હશે. આપણે વિચાર કરીએ કે સ્વામીને મગજમાં એ કેવું બેસી જ ગયું હશે કે તમે બધા હવે આ રીતે શરૂ કરો, આ રીતે શરૂ કરો, આ રીતે શરૂ કરો. એમના વાક્યમાં વારંવાર આવતું'તુ – ***'ખેંચંખેંચ'*** *ન કરતાં...* આપણે બધા આવી કથાવાર્તા સાંભળીએ છીએ. જેમ મેં વાત કરી કે જે **'કથા-કીર્તન'**ને વિષે ભગવાનનો સંબંધ ન હોય... આપણે એ વચનામૃત વાંચી ગયા, પણ વિચાર જ ન કર્યો. એમ 'ખેંચંખેંચ' કેમની કરીએ છીએ – એ આપણને પણ ખબર હોતી નથી. આપણા અવ્યક્ત રાગો એવા હોય છે કે આપણને પરાણે ઘસડી જાય છે.

એક પ્રસંગ છે, ખેંચંખેંચનો. હું ક્યારનો વિચાર કરતો'તો કે સભામાં કહું કે ન કહું. પણ, થયું કે સ્વામીએ જ્યારે આટલી હદે ખોલીને વાત કરી છે કે 'ખેંચંખેંચ' ન કરતા, તો આપણને ખ્યાલ તો પડવો જોઈએ કે આપણે આ જ ધંધો કરતા હોઈએ છીએ.

સરસ પ્રસંગ કહું છું – દિલ્હીમાં પપ્પાજીની મૂર્તિ પધરાવી. તમે બધાં જાણો છો કે દિલ્હીમાં પહેલાં કાકાની એકની મૂર્તિ હતી. જો કે મારે મન આ પહેલેથી નક્કી હતું. એટલા ખાતર મેં કાકાજીની મૂર્તિ પહેલેથી ફિક્સ કરાવી જ ન્હોતી. મને હતું કે જ્યારે પપ્પાજીની મૂકીશું, ત્યારે આ ખસેડવી પડશે અને બીજું કેવું કે જ્યાં સુધી પપ્પાજી સ્થૂળરૂપે વિરાજમાન છે, ત્યારે એમની મૂર્તિ મૂકીએ તો ત્યાંના સમાજને બેસશે નહીં. એટલે પપ્પાજીએ જ્યારે શરીર છોડયું, પછી અમે નક્કી કર્યું કે હવે અહીં પપ્પાજીની મૂર્તિ મૂકીએ. એની પાછળ **ત્રણ કારણ** હતાં.

- મને પપ્પા ભલે પહેલાં ગમતા ન્હોતા, પણ પહેલેથી કાકાને લઈને એમની જોડે હેત હતું – એમનો મહિમા હતો.
- બીજી વસ્તુ, એકવાર પપ્પાજી દિલ્હી આવેલા, ત્યારે કાકાની મૂર્તિની બાજુમાં ઊભા રહ્યા. એ મૂર્તિના ખભે હાથ મૂક્યો અને ફોટોગ્રાફરને કહ્યું કે – *એ ફોટોગ્રાફર, આ ફોટો લઈ લો.* ત્યારથી મારા મગજમાં બેસી ગયેલું કે પપ્પાએ મને આ ઇશારો કર્યો છે.
- ત્રીજી વસ્તુ, એકવાર મારા જન્મદિવસે પધારવાના હતાં, પણ બિમારી ગ્રહણ કરી ને એ આવી શક્યા નહીં. ત્યારે એમણે મને કાગળ લખીને મોકલ્યો કે *મારે બહુ આવવું જ હતું, પણ હવે હું આવવા ખૂબ ઇચ્છું, તો પણ આ વખતે આવી શકું એમ છું જ નહીં, પણ* ***ત્યાં જ્યારે કાયમ માટે આવી જઈશ****, ત્યારે સોનામાં સુગંધ ભળશે.*

ત્યારે બહુ ન્હોતા લખી શકતા'તા, એટલે વાંકા-ચૂંકા અક્ષર છે.
આ ત્રણ વસ્તુ મારા મગજમાં હતી. એટલે મને થયું કે આપણે દિલ્હીમાં પપ્પાની મૂર્તિ બેસાડવી જ છે.

થોડા વખત પહેલાં ત્યાં એક ભાઈ આવ્યા, ઘણાં વખતે આવેલા. પપ્પાજી સાથે જ જોડાયેલા છે. આઉટ રાઈટ પપ્પાજી સાથે. મને કહે – *ગુરૂજી, તમે આ બહુ સરસ કામ કર્યું. તમને નથી લાગતું કે પપ્પાની મૂર્તિ બેસાડી, પછી તમારે ત્યાં જાહોજલાલી, સમૃદ્ધિ વધી.*
સ્વામી જે કહે છે, *ખેંચાંખેંચ* – એ આ!

આપણે કોઈનો મહિમા ગાઈએ, કો'કને ઊતારી પાડવા.

આપણે મહિમા ગાઈએ કોઈને વિષે ઓરોભાવ લાવવા માટે.

જુઓ, આપણે આ ધંધો કરતાં હોઈએ છીએ. એ ગાતા હતા તો પપ્પાનો મહિમા જ, ના નથી. પણ, એને કેવી રીતે સમજાઉં કે તું જેટલો પપ્પાનો મહિમા સમજતો હશે, એના કરતાં હું વધારે સમજુ છું. હું દાવાથી કહું છું કે એને જેટલું પપ્પા સાથે હેત હશે, એના કરતાં મને વધારે છે.

આપણને કહ્યું છે કે ભગવાનની મૂર્તિ કરતાં એનું નામ વિશેષ; એના નામ કરતાં પણ એની મરજી અને સિદ્ધાંત પ્રમાણે—જે ગઈ કાલે સ્વામિજીએ વાત કરી કે *આપણે એવી **'એકતા'**થી*—જેમ સાહેબજી બોલ્યા છે *બધાં **'એકમના'** થઈને...*

અને **કાકા**એ તો એનું **અલ્ટીમેટમ્** આપેલું છે. એક કાગળમાં મને લખીને મોકલેલું કે—

જે ભેદ રાખશે, એને અંતે મુંઝવણ રહેવાની છે.

મારો મિજાજ આમ સ્વતંત્ર, પણ ડરપોક છું. તેથી, મેં જ્યારે આ વાંચ્યું—કાકાના ધામમાં ગયા પછી બધાં કાગળો ખોલીને વાંચતો'તો—એમાં મેં નોંધ્યું. મને થયું, આમે ય આપણા સ્વભાવની મુંઝવણ કંઈ ઓછી નથી કે ભેદભાવ રાખીને આ નવી લઈને બેસીએ. નક્કી જ કરી દીધું કે સ્વામિજી, કાકાજી, પપ્પાજી, સાહેબ—તે વખતે આ એટલા હતાં. એમને જે કરવું હોય, એ કર્યા કરે. અને... ગોપાળાનંદસ્વામી—ગુણાતીતાનંદસ્વામીના વખતથી આ તો ચાલ્યું આવે છે. તેથી ગુણાતીતાનંદસ્વામીએ પણ કહેવું પડેલું કે— *એ મોટા કે હું મોટો એ અમે ફોડી લઈશું, તું માથાકૂટ ના કરીશ.* **સાહેબ પણ આપણને એ જ કહી ગયા. સ્વામિજી પણ એના માટે ભાર મૂકે છે.** તો, **એ રસ્તે ચાલીએ અને એવી ખરેખરી 'ગુણાતીત અસ્મિતા' આપણી અંદર પ્રગટાવીએ.**

એક વસ્તુ ખૂબ ધ્યાન રાખજો, બે શબ્દો છે **'અંતર્દૃષ્ટિ'** અને **'બાહ્યદૃષ્ટિ'**. 'અંતર્દૃષ્ટિ' એટલે—આપણે પોતાનો દોષ જોયા કરીએ કે—*'હું આવો છું, આવો છું'*. મહારાજે અંતર્દૃષ્ટિનો અર્થ બીજો પણ બતાવ્યો કે બ્હાર બેઠેલી મૂર્તિના દર્શન કર્યા કરવા, એ પણ 'અંતર્દૃષ્ટિ' છે. અંદર જોવા એ પણ અંતર્દૃષ્ટિ છે. બ્હાર **બધે જોવા** એ પણ અંતર્દૃષ્ટિ છે.

મેં કાકાને એક વાર પૂછ્યું કે— *આ તો મહારાજ કહી ગયા, પણ તમે પણ ઘણીવાર નવી - નવી વાતો લાવો છો. અંતર્દૃષ્ટિ અને બાહ્યદૃષ્ટિ માટે આથી વિશેષ કોઈ અર્થ છે?*

કાકા હસ્યા અને મને **કહે**—*(આપણે માટે) છે.*

મેં કહ્યું—*શું?*

તો કહે કે ***આપણે જે એકતાની વાત કરીએ છીએ, એમાં જે (પ્રસિદ્ધિ માટે કે પ્રચાર હેતુ) બ્હાર એકતા કરવાની વાત છે, એ 'બાહ્યદૃષ્ટિ' છે. આપણે અંદરો-અંદર એકતા કરવાની છે—એ 'અંતર્દૃષ્ટિ'. બાહ્યદૃષ્ટિવાળાની સમજણ વૃથા છે! ગુણાતીત સમાજમાં અંદરોઅંદર એકતા રાખવી એ (આપણે માટે) ખરેખરી 'અંતર્દૃષ્ટિ' છે.***

એ અમે બધા સિદ્ધ કરીએ. સ્વામી એવા આશીર્વાદ આપે કે ખરેખર અમારાં ભેજાં બદલાય ને અમે આપની રીતે ચાલી શકીએ—એટલી પ્રાર્થના.

प.पू. स्वामिजी (हरिधाम)

...समग्र गुणातीत समाज के प्राणाधार पुरुष काकाजी और पप्पाजी ने अद्भुत गुणातीत समाज का सर्जन किया। उनका जितना उपकार मानें, उतना कम है। काकाजी बात-बात में कहते ही थे– *संप, सुहृद्भाव, एकता से जीयो।* **पप्पाजी** दूसरी रीति से बात कहते – *संकल्प, भाव और क्रिया से सेवन करो।* दोनों का अर्थ एक जैसा था।

योगीजी महाराज ने संप का अद्भुत अर्थ बताया है। **संप** यानि एक-दूसरे के प्रति मनुष्यभाव नहीं। **सुहृद्भाव** यानि सहज भगवद्भाव! तुम्हारे हृदय में कभी भी भगवान या गुणातीत के संबंध में आने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए सुहृद्भाव कम नहीं होना चाहिए। सुहृद्भाव हमारे लिए प्राण समान है। योगीजी महाराज ने बार-बार इस सूत्र को कहा ही है। अक्षरधाम में अनंत मुक्त हैं। सभी में प्रभु वास करते हैं और सभी में प्रभु का आकार है। हम सभी का परम पवित्र फर्ज़ है कि **हमारे संकल्प, विकल्प और भाव ऐसे होने चाहिए, जिसके फलस्वरूप काकाजी और पप्पाजी के हृदय को चोट न लगे, अरुचि न हो। हमारी ओर उनकी मीठी नज़र हमेशा रहे।** हर एक केन्द्र में अच्छे लीडर दिए हैं। **दिल्ली में गुरुजी, शिकागो में दिनकरभाई, साहेब, बापु, भरत, वशी हर एक केन्द्र में ऐसे अद्भुत गुणातीत बालक हमें काकाजी और पप्पाजी देकर गए हैं।** हम **जैसे-जैसे संप से रहते हो जाएँगे, सुहृद्भाव से जीते जाएँगे, एक-दूसरे के साथ-सहकार से आनंद प्राप्त करते रहेंगे, वैसे-वैसे काकाजी और पप्पाजी की हम सब पर एक मीठी दृष्टि निरंतर रहेगी।** उनके बल से जीएँ, उन्हें आगे रख कर जीएँ।

...हमें निमित्त बनना है। उनके ही आधार और बल से जिएँगे, तो उसमें शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज आ जाते हैं और शास्त्रीजी महाराज व योगीजी महाराज आए, तो स्वामी और नारायण आ गए। भगवान स्वामिनारायण ने हमें क्या नहीं दिया? कैसा सुंदर वचनामृत, कैसी सुंदर बातें, कैसा सुंदर पुरुषोत्तम बोल्या प्रीते! महाराज और स्वामी से इससे अधिक क्या अपेक्षा रखें? शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज ने सनातन शुद्ध उपासना स्थापी...

प्रभु दो सूत्र देकर गए। *निजात्मानं ब्रह्मरूपं...* कैसा अद्भुत सूत्र दे दिया... स्थूल, सूक्ष्म और कारण से अलग होकर ब्रह्मभाव से भजन किया करो, किया करो। हेत और दासत्व के अंग वाले के लिए उन्होंने दूसरा सूत्र दे दिया। दास का दास होकर जो रहेगा सत्संग में, भक्ति उसकी भली मान कर राचूँगा उसके रंग में। हमें खूब विचार करना है। *दास नहीं, दास के दास का दास...!* दोनों सूत्रों का भाव और प्राप्ति एक है। या तो ब्रह्मभाव से भजन करो या दासभाव से। गुणातीतानंदस्वामी दास के भी दास होकर रहे। जागास्वामी भी दास के दास के भी दास बन कर रहे। जूनागढ़ की धरती से भगतजी महाराज को सौ-सवा सौ बार बाहर निकाल दिया गया। महुवा जाते और वापिस आते। जागास्वामी को कमरे में बंद जैसा रखा। बाहर ही नहीं निकलना था, सिर्फ भोजन करने के लिए बाहर आना होता था। शास्त्रीजी महाराज ने इन सबका अद्भुत सेवन किया। भगतजी

महाराज, जागास्वामी और कृष्णजी अदा का आशीर्वाद लिया। योगीजी महाराज ने एक सुंदर जीवन का दर्शन करवाया। साढ़े अट्ठारह वर्ष तक विज्ञानस्वामी का स्वीकार किया। विज्ञानस्वामी में निर्दोषबुद्धि से लय हो गए। हमारे लिए तो अभी घी-केला है। **बापा का सारा जीवन देखें, तो हमारे लिए कोई तकलीफ है ही नहीं। सरसता से अद्‌भुत समाज में बिठा दिया है।** साढ़े अट्ठारह वर्ष विज्ञानस्वामी का ताप यानि क्या?

आज के समाज को यह ख्याल नहीं है, इसलिए सहज बात कर रहा हूँ... उन्होंने बहुत कृपा करके काकाजी और पप्पाजी को हमें दिया। **आज हम मौज कर रहे हैं। काकाजी-पप्पाजी ने बापा का सूत्र रखने के लिए खूब परिश्रम किया...** बापा का सनातन सूत्र व्यापक रूप से घर-घर में, व्यक्ति-व्यक्ति में बांटा... समग्र गुणातीत समाज को मल्टीडायमेन्शनली डॅवलप करने के लिए काकाजी और पप्पाजी ने खूब परिश्रम किया... हमें तो हमारे संकल्पों का ही पता नहीं कि कितने उठे और कितने नहीं। पर, काकाजी और पप्पाजी तो अद्‌भुत जीवन जी गए, कल्पना भी नहीं कर सकते। मेरा हर एक संकल्प प्रभु की मरजी के मुताबिक हो। मेरी हर एक क्रिया, हलन-चलन आपकी मरजी के मुताबिक, आपके बल से, मेरा एक-एक भाव आपकी मरजी के मुताबिक निरंतर बहता ही रहे...

हमारी जीवन नैया का रथ ऐसे पुरुषों के हाथ में रहे, हर एक सैकण्ड वे हमारे माँ-बाप बने रहें, प्रेरणामूर्ति बने रहें। काकाजी-पप्पाजी को जब रथ पर बिठा कर सुंदर दर्शन कराया है, तब आज हम सबको संकल्प करना है कि किसी तरह, किसी भी संजोग में दोनों की मरजी के मुताबिक जीना है...

जहाँ हों वहाँ। दिल्ली में हो तो गुरुजी के नेतृत्व में, मुंबई में भरतभाई, वशीभाई, शिकागो–परदेस में दिनकरभाई और सभी हैं। **जहाँ-जहाँ केन्द्र हैं, वहाँ ऐसे पुरुषों को आगे रख कर उनकी मरजी के मुताबिक जीना है...** हमारा हलन-चलन स्वभाव के आधीन है। पप्पाजी हमें ऐसा सिखा गए हैं–मेरा एक-एक संकल्प प्रभु की मरजी के मुताबिक गुणातीतभाव में रह कर... सात्त्विकभाव से भी जीना नहीं है। सात्त्विकभाव से भी किसी की अरुचि में पड़ना नहीं। सात्त्विकभाव से किसी के मूल्यांकन में जाना नहीं। काकाजी-पप्पाजी 'संबंध' दे गए। ताड़देव में कोई भी अल्प संबंध वाला–मंदबुद्धि हो या कुछ पता ही न हो, ऐसे कई भक्त आते। दोनों भाइयों ने निर्दोषभाव से सेवन किया। उनके दास के दास होकर रहे। हम राजकोट जाते थे, वहाँ पाँच-सात वडील थे। धन्यवाद हो बापा को वे इतना बखान करते। उनकी रीति से वर्तते। राजकोट के पाँच-सात सद्‌गुरुओं के सामने **योगीजी महाराज ज़ीरो होकर**, उनकी मरजी के मुताबिक, **स्वयं को खोकर दास का दास होकर वर्ते।** इसी प्रकार गुणातीत समाज में धन्य हो काकाजी, पप्पाजी को कि बापा का अद्‌भुत सेवन करके, सेवन यानि–तू दिव्य, तेरे संबंध वाले दिव्य। तू हितकारी, तू मंगलकारी, तू कर्ता-हर्ता। कर्ता-हर्ता शब्द बहुत भारी है। सारा तंत्र उनकी मरजी के मुताबिक वर्ते, तब सच में कर्ता-हर्ता माना कहा जाए। वचनामृत प्रथम 27 की पहली ही पंक्ति है कि– *'जिसकी ऐसी समझ हो, उसके हृदय में भगवान सभी प्रकार से निवास करके रहते हैं।'* एक निष्ठा के बल से जीना। **हम सभी को निष्ठा के बल से जीना है।** इसलिए इन्हें रथ

पर बिठा दिया है... **दोनों भाइयों ने गुणातीत समाज का रथ हाँका है।** दिल से मानता हूँ कि **दोनों भाइयों के कारण हम हैं। हमारे लिए वे सर्वस्व हैं।** उनकी मरजी के मुताबिक जीवन जीना हमारी साधना है। उन्हें क्या जँचता है? – इतना विचार करना है। दोनों भाइयों ने हमारे लिए साधना सुगम कर दी। मुझे काकाजी-पप्पाजी इसलिए खूब पसंद हैं...

आज के शुभ मंगलकारी दिन शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी और पप्पाजी के चरणारविंद में एक ही प्रार्थना, हमें ऐसा बल दो कि हम हमारी रीति से बोलें नहीं, खाएँ नहीं, पीए नहीं, हलन-चलन न करें। आपकी मरजी के बिना एक कदम भी न चलें... **हर रोज लेखा-जोखा निकाल कर सोना...**

चित्त आपकी मरजी के मुताबिक ही चिंतन करे। बुद्धि आपकी मरजी के मुताबिक निर्णय ले। आपके कारण ही 'मैं' हूँ, ऐसे भाव से जीए। वी आर एब्सॉल्यूट्ली जीरों बीफोर धी सुप्रीम। पर, अब संबंध वाले के आगे टोटल ज़ीरो बन कर जीना है... तू राजी हो, ऐसी भावना से पूरा समाज लगा हुआ है। बाप रे बाप, ऐसे समाज का क्या वर्णन करें? कल का आया हो, उससे भी भगवद्‌भाव से बात करनी है...

हमारे जैसा कोई भाग्यशाली नहीं है। **अनंत ब्रह्मांड में भाग्यशाली नहीं।** अक्षरधाम तक कोई भाग्यशाली नहीं है। बहुत अद्‌भुत-अलग बात करता हूँ। पागल हो जाएँ, ऐसी बात करता हूँ। **अक्षरधाम तक हम जैसा कोई भाग्यशाली नहीं!** सो, चौबीस घंटे आनंद में रहना। **तैंतीस करोड़ देवी-देवता हमारे जैसे भाग्यशाली नहीं हैं...** काकाजी-पप्पाजी की मरजी मुताबिक गुरुजी, दिनकरभाई, भरत-वशी वर्तते हैं। बहनें भी वर्तती हैं, सभी को धन्यवाद। हम भूल जाते हैं कि **अक्षरब्रह्म हमारा शरीर है। यह शरीर नहीं, मैं गुणातीत हूँ...**

आज के शुभ मंगलकारी दिन स्टेज पर विराजमान जीवन मुक्त हमें काकाजी-पप्पाजी की गोद में बिठाने के लिए तैयार कर दें, संपूर्ण तैयार कर दें। फलस्वरूप **समग्र तंत्र के साथ काकाजी और पप्पाजी में लय हो जाएँ** – यही प्रार्थना।

Statement about ownership and other particulars about newspaper — 'भगवत् कृपा' (Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
2. Periodicity of its Publication	:	Bi-Monthly
3. Printer's Name	:	Prabhaker Rao
4. Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
5. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
7. Owner's Name	:	Yogi Divine Society
Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKER RAO
Signature of Publisher

Date: 27 February, 2014

'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' – द्वितीय चरण के संग रंगे सभी 'योगेश्वर हीरक महोत्सव' के रंग...

पिछले वर्ष यूरोप की धरती पर चुटकीभर पेरिस के मुक्तों ने मानो 'वीधआऊट ऐनी प्लॅटफॉर्म' **'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव'** के प्रथम चरण से ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की शताब्दी का उद्घोष करके भक्ति अदा की। इस वर्ष **1 से 3 फरवरी 2014, मुंबई–पवई 'अक्षरधाम' मंदिर** में द्वितीय चरण के रूप में आयोजित किया गया और... उसी के साथ ताड़देव के नौ भाइयों में से **प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई** एवं **प.पू. अरुणभाई** का हीरक प्राकट्योत्सव **'योगेश्वर हीरक महोत्सव'** के रूप में मनाने के लिए सभी एकत्रित हुए।

मंच कलात्मक रूप में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज एवं गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों से सुशोभित था। प्रसंगानुसार विविध मूर्तियों इत्यादि का दर्शन कराने के हेतु से बीचोंबीच स्क्रीन लगाई थी। पंडाल की दोनों तरफ भगवान स्वामिनारायण, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप काकाजी, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी, प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. सोनाबा, प.पू. साहेब एवं प.पू. गुरुजी की मूर्ति के नीचे उनके मार्मिक सूत्र लिखे थे।

1 फरवरी की सायं **6:00 बजे 'भजन संध्या'** से महोत्सव का प्रारंभ हुआ। दो घंटे की भजन संध्या में गायक वृंद ने सभी को भगवान स्वामिनारायण एवं सभी गुणातीत स्वरूपों की स्मृतियों में डुबो दिया। पवई मंदिर की **मूर्ति प्रतिष्ठा** हुए इस वर्ष **दस साल** पूर्ण हुए। सो, भजन संध्या के अंत में **प.भ. घनश्यामभाई** एवं साथियों द्वारा तैयार की गई की जो विडियो देखी, उससे गुणातीत समाज के पुराने-नए सभी को भीतर में एहसास हुआ कि सिर्फ **पवई मंदिर ही नहीं, बल्कि गुणातीत समाज के जो भी केन्द्र हैं, उन सभी का प्रारंभ ब्रह्मस्वरूप काकाजी की बदौलत और प.पू. पप्पाजी के साथ से ही हुआ है।** साथ ही, खूब अपनेपन से पवई मंदिर को अपना घर मान कर सेवा करते कुछ मुक्तों को सम्मानित किया गया।

ब्रह्मस्वरूप काकाजी की स्थूल हाज़िरी में, उन्हीं की आज्ञा से प.पू. बापु, प.पू. रमेशभाई और प.पू. राजुभाई ने युवाओं को खूब प्रोत्साहित किया। पहले ताड़देव और फिर पवई में होती **'युवा सभा' को** भी इस वर्ष **25 साल पूरे हुए**, सो **2 फरवरी** की **सुबह 9:00 बजे 'युवा अधिवेशन'** का आयोजन था। आज की युवा पीढ़ी किन समस्याओं से झूझ रही है, उसका दर्शन **प.पू. वशीभाई** ने स्वयं 'पी.पी.डी.' तैयार करवा कर कराया। साथ ही, जीवन की विभिन्न चेतावनियों, दुविधाओं, समस्याओं से युवा पीढ़ी किस प्रकार बाहर निकल सकती है और संतों के समागम से जगत व संसार में रहते हुए किस प्रकार प्रभु प्राप्ति के परम पवित्र मार्ग पर अग्रसर होकर जीवन धन्य बना सकती है, यह मार्गदर्शन देते हुए आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् , प.पू. गुरुजी की आज्ञा से दिल्ली मंदिर से जुड़े **पू. रवि आर्टिस्ट** द्वारा **बहनों के लिए भगवान भजने**

की राह के मानो प्रणेता – ब्रह्मस्वरूप काकाजी की 'पुश पिन' मूर्ति प.पू. दीदी ने प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई और प.पू. अरुणभाई को **हीरक प्रागट्योत्सव** निमित्त **भेंट** दी।

'युवा सभा' द्वारा पवई मंदिर के भाइयों के साथ अपनेपन का संबंध करके किस प्रकार सत्संग के युवाओं ने अपना जीवन संवारा और जो सच्ची व सही दिशा पाई है, वह पू. वंदनभाई, पू. विराटभाई, पू. दर्शनभाई अमीन, पू. आनंद भगत, पू. अंकुरभाई (पेरिस), पू. निरंजन जागीरदार, औरंगाबाद के नरेश मोळे, पू. सागरभाई भिवंडीवाला, पू. अर्जुनभाई और पू. मिलाप इंजीनियर जैसे मुक्तों के अनुभवों एवं संवाद से जाना। इनके **अनुभवों ने एहसास दिलाया कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी के मानसपुत्रों ने किस प्रकार उन्हें जीवंत रखा है और उनके कार्य को गतिशील किया है।**

गुणातीत ज्योत के **पू. ईलेशभाई** ने माहात्म्य दर्शन कराया और **प.पू. दिनकरभाई** एवं **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद दिया। सत्संग के मुक्तों के **'शौर्य नृत्य'** से 'युवा अधिवेशन' का समापन हुआ। 'शौर्य नृत्य' के भजन की पंक्तियों – *जब हों, हमारे हाथ गुरु के दोनों पावन हाथ, मानना दो ही नहीं हैं, कई हज़ारों हाथ* – ने मौजूद सभी को भव्य प्राप्ति की खुमारी से भर दिया!

सायं 5:00 बजे **'योगेश्वर हीरक महोत्सव'** मनाने के लिए सभी एकत्रित हुए। **पू. हेमंतभाई मर्चंट** ने मंच पर विराजमान सभी स्वरूपों एवं महानुभावों का स्वागत किया और... इस विशिष्ट सभा की शुरुआत में सर्वप्रथम **प.पू. अरुणभाई** के गुणों को दर्शाता भजन सभी ने सुना और पू. संकेतभाई मियाणी, पू. भावेशभाई (शिकागो) ने प्रासंगिक उद्बोधन किया।

तत्पश्चात् **प.पू. वशीभाई** द्वारा मिले प्रेम की अभिव्यक्ति भजन द्वारा की गई और पू. पियुषभाई मिश्रा व प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी ने माहात्म्य दर्शन कराया। इसी प्रकार, भजन द्वारा **प.पू. भरतभाई** से पल-पल मिलते आत्मा की खुराक के लिए धन्यवाद देते हुए पू. पियुषभाई खोरसिया तथा पू. दीपकभाई जागीरदार ने अंतर के भाव व्यक्त किए।

तत्पश्चात् **औरंगाबाद मंडल** के मुक्तों ने संवाद द्वारा तीन-चार प्रसंगों से दर्शाया कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी इन भाइयों द्वारा प्रगट रह कर उनकी कैसी परवरिश कर रहे हैं। **पवई** मंदिर से जुड़े **युवक-युवतियों** की ओर से **प.पू. भरतभाई को** जंगम मंदिर के प्रतीक रूप **चाँदी का मंदिर** अर्पण किया गया। जिनकी महापूजा में सभी स्वरूप साक्षात् हाज़िर होते हैं, ऐसे **प.पू. वशीभाई को चांदी की महापूजा** अर्पण की और दासत्वभक्ति के मूर्तस्वरूप **प.पू. अरुणभाई को चांदी की फ्रेम में** श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति के नीचे ब्रह्मस्वरूप काकाजी के साथ प.पू. अरुणभाई की **मूर्ति** इस भावना से अर्पण की कि–जैसे भगवान स्वामिनारायण को मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का दासत्व खूब पसंद था, इसी प्रकार, ब्रह्मस्वरूप काकाजी को प.पू. अरुणभाई की दासत्वभक्ति जँचती थी। मुक्तों की भावना थी कि चाँदी जैसा चमकदार हमारा अंतर हो जाए, इस हेतु हर एक स्मृति भेंट चाँदी की बनाई थी। साथ ही – सभी गुणातीत स्वरूपों के स्वहस्तों से तीनों भाइयों को लिखित आशीर्वाद की एक अल्बम और प.पू. भरतभाई की विभिन्न मूर्तियों एवं माहात्म्यदर्शन कराती अल्बम स्मृति भेंट के रूप में अर्पण की गई।

तत्पश्चात् **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने

आशीर्वाद दिया। तबियत नादुरुस्त होने के कारण प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी नहीं आने वाले थे, लेकिन ब्रह्मस्वरूप काकाजी के ऐसे लाड़ले योगेश्वरों के प्रति अत्यंत लगाव के वश वे सिर्फ इस उत्सव के लिए सायं तो सांकरदा से आए और मध्य सभा तक दर्शन व आशीर्वाद देकर रात की फ्लाईट से लौट गए। प.पू. वशीभाई वर्षों से जिस 'मॅसो' कंपनी में जॉब करते हैं, उसके ऑनर के बेटे **प.भ. केतनभाई सेठ** ने प.पू. वशीभाई के प्रति अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा– *मेरी कंपनी ही क्या, मेरी फॅमिली भी वशीभाई के बिना अधूरी है...*

प.भ. केतनभाई के वक्तव्य के बाद मंच पर विराजमान स्वरूपों ने 'योगेश्वर हीरक महोत्सव' के प्रतीक के आकार की केक कटिंग की और साथ-साथ पूरे पंडाल में उपस्थित सभी मुक्तों को केक का प्रसाद वितरित किया गया। केक का प्रसाद लेने के बाद तीनों योगेश्वरों ने हार एवं स्मृति भेंट के रूप में सभी केन्द्रों एवं हरिभक्तों की भावना ग्रहण की। हार-स्मृति भेंट अर्पण के बाद सत्संग के युवाओं ने *'केम विसरीए वालम तारा व्हालने...'* भजन पर भावनृत्य प्रस्तुत करते हुए अंत में अनोखी स्मृति यह दी कि नौ चौकोर टुकड़ों को जोड़ते हुए ब्रह्मस्वरूप काकाजी की मूर्ति बनाई और उसे जब दूसरी ओर मोड़ा, तो नौ टुकड़ों में ब्रह्मस्वरूप काकाजी के नौ योगेश्वरों की मूर्तियों का दर्शन किया। युवाओं के इस जॅस्चर ने महोत्सव की निराली स्मृति दे दी।

भावनृत्य के बाद **पू. अरुणभाई, पू. दासस्वामिजी, प.पू. महेन्द्र बापु** एवं **प.पू. कोठारीस्वामिजी** ने माहात्म्य प्रसंगों द्वारा आशीर्वाद दिया। **प.पू. साहेबजी के कहे अनुसार ब्रह्मस्वरूप काकाजी कॉस्मोपॉलिटन साधु थे**, तो मुंबई जैसे शहर में हर प्रांत व भाषा के मुक्त पूर्व के संबंध के कारण जोग में आते हैं। यूँ, ऐसे कई भक्त हैं जो तामिलनाडू के हैं। गुरुहरि योगीजी महाराज के **'सुनृत'** (योगी गीता) के मुद्दे गुणातीत समाज से जुड़े सभी मुक्तों के लिए जीवनधारा के समान हैं। पवई मंदिर से जुड़ी तामिलनाडू की **सौ. लक्ष्मी दीदी** ने तमिल भाषा में उसका अनुवाद करके तमिल मुक्तों के लिए बहुत बड़ी सेवा की है। सो, इस सभा में डिवाईन लाइफ मिशन के **पू. विश्वासानंदजी** ने उसका अनावरण किया। अंत में– मानो ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं बह्मस्वरूप पप्पाजी अपने दिव्य परिवार पर प्रसन्न होकर– *'खुश रहो, खुश रहो, भक्तजनों खुश रहो'* –की आशिष दे रहे हों, ऐसी भावभरी पंक्तियों पर सुधबुध खोकर उपस्थित सभी मुक्तों ने गुजरात का प्रख्यात **'सनेडो'** किया और इसी के साथ 'योगेश्वर हीरक आनंदोत्सव' की पूर्णाहुति हुई।

अगले दिन **3 फरवरी – ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का 62वाँ साक्षात्कार दिन** था। 20 वर्ष पूर्व इसी दिन **दिल्ली मंदिर में** मूर्ति प्रतिष्ठा हुई थी, सो **प.पू. गुरुजी की दिव्य रूप से हाज़िरी मानते हुए पू. सुहृद्स्वामी ने दिल्ली में पाटोत्सव निमित्त महापूजा संपन्न की** और... **पवई मंदिर में** हुई मूर्ति प्रतिष्ठा के भी इस वर्ष 10 साल पूर्ण हुए। सो, सुबह 7:00 बजे **प.भ. विनोदभाई पुरोहित ने गुणातीत स्वरूपों, संतों एवं मुक्तों द्वारा विधिवत् पाटोत्सव कराया।** तत्पश्चात् **प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. शास्त्रीस्वामिजी** एवं **प.पू. कोठारीस्वामिजी** ने आशीर्वाद दिया।

अल्पाहार करने के बाद करीब साढ़े नौ बजे

ब्रह्मस्वरूप काकाजी के 62वें साक्षात्कार दिन की सभा का शुभारंभ हुआ। ब्रह्मस्वरूप काकाजी की मूर्ति एवं सभी स्वरूपों को स्वागत हार अर्पण के बाद प.भ. गिरीशभाई एवं प.भ. प्रवीणभाई लाड (पेरिस) ने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया।

इस वर्ष **पू. दासस्वामिजी** को दीक्षा लिए हुए पचास वर्ष पूर्ण हो रहे हैं, यह ज़ाहिर करते हुए उन्हें जब हार व शाल अर्पण किया, तो प.पू. दिनकरभाई ने ख्याल देते हुए कहा कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने जिन संतों को **'स्नेहल मंडल'** कह कर नवाज़ा, वे सभी आज हाज़िर हैं। फिर तो उन सभी संतों– प.पू. कोठारीस्वामिजी, प.पू. गुरुजी, पू. शास्त्रीस्वामिजी, पू. प्रेमस्वामी एवं पू. दासस्वामी–को स्टेज पर एक साथ दर्शन देने के लिए प्रार्थना हुई। तब, उत्तर भारत के मुक्तों को सहज ही दो वर्ष पहले दिल्ली मंदिर में हुए 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' की स्मृति ईदम् हो गई, क्योंकि तब भी 5 फरवरी 2012 की सायं इस 'स्नेहल मंडल' का एक साथ दर्शन हुआ था।

इस अद्‌भुत दर्शन को और यादगार बनाने के लिए प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, प.पू. अरुणभाई, पू. ज्ञानस्वरूपस्वामी, पू. विज्ञानस्वामी, पू. माधवस्वामी, पू. घनश्यामस्वामी इत्यादि भी साथ में एकत्रित हो गए। मुक्तों ने तालियों बजा कर एवं हर्षाश्रु से अंतर में प्रार्थना की कि सभी स्वरूप, संत-मुक्त लंबे अरसे तक निरामय रह कर ऐसे दर्शन का सुख देते रहें। अनोखी स्मृति के बाद **प.पू. हर्षदभाई (अनुपम मिशन)**, **प.पू. भरतभाई** एवं **प.पू. प्रेमस्वामिजी** ने आशीर्वाद दिया।

जो मुक्त जिस स्वरूप से जुड़ा हो और जब उसके गुरु का प्राकट्य पर्व मनाया जा रहा हो, तो उसके भीतर में अपने भाव प्रगट करने की इच्छा स्वाभाविक ही होती है। इसी प्रकार प.पू. वशीभाई के संपर्क में आए **प्रो. चंद्रदेवजी** ने **'जादू'** की कला से अपना भाव अर्पण किया। सभा के अंत में **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद दिया और **पू. घनश्यामप्रसादस्वामिजी** द्वारा ढूँढ निकाला **ब्रह्मस्वरूप काकाजी द्वारा 3 फरवरी 1982 को लिखित आशीर्वाद पत्र★ प.पू. वशीभाई** ने पढ़ा, जिसे महोत्सव की फलश्रुति ही कहा जाए–

परम साक्षात्कार –3 फरवरी का

3-2-'82

दिव्य संदेश

– सभी श्रेयार्थी साधकवर्ग के लिये–

साधना की पूर्णाहुति का

1. *केवल सार्वभौम सर्वोपरि परब्रह्म सत्ता ही सर्वत्र आगे-पीछे, सभी स्थान पर–समय से परे, पल-पल तुम्हारे हृदय में अखंड विराजमान रह कर सभी कार्य कर रही है*
   और
   जो कुछ भी बन रहा है व बनेगा,
   वह तुम्हारे परम हित में ही होगा, यह दृढ़ता से मानकर–स्वीकार करके,

★ मूल गुजराती पृष्ठ-58 पर पढ़ें।

***अखंड जाग्रतता** व अखंड सतर्कता से खुले ही रहो*

और

उन्हें ही आप संपूर्ण सहकार दो – ऐसा बल-प्रेरणा और सुरुचि आप में सहज ही प्रगटे ऐसी अंतर से तीव्र अभीप्सा सहित प्रभु चरणों में प्रार्थना है।

*तो, इतना ही अखंड स्मरण करते रहने की नियमित **आदत** डालना-**अभ्यास** करते रहना।*

तो, जीवन में हर पल सुख, शांति, बल, प्रकाश और आनंद सहज ही मिलता जाएगा। ऐसा चैतन्य प्रवाह अखंड ही बहता रहता है।

तो, सर्जनात्मक उद्धारक परम सत्य का ही निर्दोषभाव से टोटल स्वीकार करके सर्वारंभ करते रहो।

2. *दो अच्छे भगवदी के साथ दृढ़ मैत्री करो। इस हेतु निर्मानीभाव से प्रायश्चित् रूप प्रार्थना करो।*

3. *आपके सभी क्रियायोगों का फल **ज्ञानाग्नि में** होम करके अर्पण करोगे,*
तो, अखंड सर्वोपरि ब्रह्मसत्ता का साक्षात्कार ज्ञानसमाधि के रूप में
आप अनुभव करोगे
और
फिर अक्षरब्रह्म का ही दिव्य सुख भोगकर-अनुभव करके अन्यों को भी
***"हम सब एक"** के सिद्धांत से अर्पण करना।*
तो, गुणातीतभाव को अब व्यापक करते जाओ
और
*अविचल अंतिम विश्रामस्थान में **परमपद** की प्रतीति*
तुम स्वयं प्रथम सिद्ध करके सभी को एकांतिक धर्म सरलता से सिद्ध कराओ,
वैसी सेवा कर लेना।
प्रभु सभी को वैसा बल और दृष्टि दें–इसी अभ्यर्थना के साथ

आनंद करो
और
सभी को कराओ...

लि. आपके ही
दादुकाका के
हेतपूर्वक जयश्री स्वामिनारायण!

ब्रह्मस्वरूप काकाजी अब भी प्रगट ही हैं, तो उनके आशीर्वाद भी प्रगट ही रहेंगे ! ऐसे अद्‌भुत आशीर्वाद प्राप्त करके सभी ने महाप्रसाद के लिए प्रस्थान किया और भावभीनी विदाई ली...

सच, **ब्रह्मस्वरूप प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. कोठारीस्वामिजी, प.पू. निर्मलस्वामिजी, 'डिवाईन लाईफ मिशन' के पू. स्वामी विश्वासानंदजी, पू. हर्षदभाई** (अनुपम मिशन), **पू. ईलेशभाई** (गुणातीत ज्योत), अस्सी वर्षीय **प.पू. ज्योति बहन, प.पू. देवी बहन** (गुणातीत ज्योत), **पू. सर्वमंगल बहन** (हरिधाम), **प.पू. दीदी, पू. जयश्री बहन एवं पू. रश्मि बहन** (सांकरदा) इत्यादि स्वरुपों-मुक्तों की सेरेछाया में देश व विदेश के तकरीबन दो हज़ार स्वजनों के साथ बिताए ये तीन दिन '**धरती पर अक्षरधाम**' की दिव्य अनुभूति करा गए!

पर, 'योगेश्वर हीरक महोत्सव' यहाँ पूर्ण नहीं हुआ... कारण – 'योगेश्वर हीरक महोत्सव' की पूर्णाहुति तो भगवान स्वामिनारायण की प्रासादिक भूमि '**सांकरदा**' में होनी थी, जहाँ **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** इन योगेश्वरों का हीरक महोत्सव मना कर ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की प्रसन्नता लूटने के लिए आतुर थे।

अतः 4 फरवरी की रात को प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. बापु, प.पू. वशीभाई, प.पू. अरुणभाई एवं मुक्तों के साथ रात को करीब 12:00 बजे बड़ौदा एक्सप्रेस से निकले और 5 की सुबह बड़ौदा स्टेशन से सांकरदा मंदिर के लिए रवाना हुए। प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, प.पू. अरुणभाई के हीरक प्रागट्योत्सव की स्मृति के रूप में प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने तीनों के लिए **बड़ौदा स्टेशन पर फूलों से सुसज्जित गाड़ी** भेजी थी। उसमें बैठ कर तीनों सांकरदा मंदिर आए। मंदिर में प्रवेश करते ही दर्शन देने के लिए सामने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी स्वयं कुर्सी पर विराजमान थे। उन्हें प्रणामपूर्वक जय स्वामिनारायण करके सभी नित्यविधि से फ़ारिग़ हुए।

फूलों से सुसज्जित टॅम्पो में बैठ कर सभी को दर्शन देते हुए प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई एवं प.पू. अरुणभाई मंदिर से सभामंडप की ओर गए। सुसज्जित टॅम्पो में ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की मूर्ति के बीच बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव का लोगो और आस-पास डायमंड लगाए हुए थे। **रंग-बिरंगे कलात्मक गलीचे** पर चलते हुए प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई एवं प.पू. अरुणभाई मंच पर पहुँचे। मंच पर **भारतीय शैली के अनुरूप पाँच आसन** बनाए थे, जिनके नीचे सांकेतिक रूप में पांच **डायमंड** लगाए थे। इन पाँचों आसनों पर प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई एवं प.पू. अरुणभाई को बिठाया गया। आसनों के एक ओर फूलों से सुसज्जित आसन पर प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी विराजमान थे और उनके साथ प.पू. महेन्द्र बापु भी बैठे थे।

सभा का संचालन करते हुए **पू. निष्काम-स्वामिजी** (गुरुजी) ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी से मंगल आशिष देने की प्रार्थना की। **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने इस उत्सव का हेतु बताते हुए मंच की पृष्ठ भूमि का परिचय कराया –

संतों ने गुरुहरि योगीजी महाराज की स्मृति करते हुए रूपक द्वारा सुसज्जा की है। बापा अकसर एक प्रसंग कहते थे कि एक चरवाहे को कहीं से एक हीरा मिला व बिकते-बिकते आख़िरकार उसे एक जौहरी ने खूब दाम देकर खरीद लिया। शरद्पूर्णिमा की रात को उसने वह हीरा परात में रखा, तो चंद्र की किरण से उसमें से असंख्य हीरे उत्पन्न हो गए। इसी प्रकार बापा ने काकाजी को साक्षात्कार करा कर ऐसा पारस बनाया और उन्होंने अपने जोग से ऐसे पारस तैयार कर दिए। सो, स्टेज की पृष्ठभूमि पर चंद्रमा के नीचे एक परात में काकाजी की मूर्ति विराजमान है कि काकाजी जो ऐसा पारस थे, उनसे ऐसे ये पाँच पारस तैयार हुए हैं। इस प्रकार की भावना संतों ने व्यक्त की है। यूँ हम भले पाँचों के लिए बोलते हैं कि काकाजी स्वरूप हैं, पर यदि हमारे वर्तन में न आए, तो बेकार है... इसलिए इनके आसन के नीचे भी हीरे का प्रतीक रखा है। सांकरदा के हर एक मुक्त के अंदर इस प्रकार की भावना प्रगटे और ऐसी महिमा समझ आए...

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के आशीर्वाद के बाद सर्वप्रथम **तीनों भाइयों** ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी **को पुष्प हार** अर्पण किया और पू. बापुस्वामी, पू. ब्रह्मानंदस्वामी और पू. वजुभाई ने तीनों भाइयों का पुष्प हार से स्वागत किया। पू. भक्तिनंदनस्वामी ने प.पू. गुरुजी एवं पू. अक्षरप्रियस्वामी ने प.पू. दिनकरभाई व प.पू. बापु का पुष्प हार से स्वागत किया। **15 फरवरी – प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का प्राकट्य दिन** भी नज़दीक था, सो दिल्ली मंदिर के मुक्त समाज की भावना व्यक्त करने के लिए प.पू. गुरुजी दिल्ली से ही गुणातीत समाज के ध्वज के रंगों का हार लेकर गए थे। वह हार प.भ. विजय शर्मा ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को अर्पण किया। पवई मुक्त मंडल की ओर से प.भ. घनश्यामभाई, प.भ. गिरिशभाई और प.भ. दीपकभाई जागीरदार ने तीनों भाइयों को हार अर्पण किया। हारविधि के बाद पू. ब्रह्मानंदस्वामी एवं पू. वजुभाई ने माहात्म्य दर्शन कराया... तत्पश्चात्, सभी को माहात्म्ययुक्त सेवा करने का बल मिले और बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव तक स्वरुपों को राजी कर लें, ऐसी भावना व्यक्त करते हुए सांकरदा मंदिर के सेवक पू. बिम्पलभाई ने स्वयं एक भजन बना कर उसे प्रार्थना के रूप में प्रस्तुत किया।

सेवा के माहात्म्य से भरपूर भजन के बाद **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने** आशीर्वाद देते हुए **अंतर के रुदन से ब्रह्मस्वरूप काकाजी का ऋण अदा करने की भावना व्यक्त की –**

मुझे दिल में एक दुःख था-दर्द था। मैंने टटोला कि मेरे इस दर्द की दवा कहाँ है? बहुत सोचा तो मुझे प्रेरणा मिली कि मेरे इस दर्द को दूर करने का उपाय तो भरतभाई और वशीभाई के पास है। महाराज के समय में एक सेठ ने संतों को रस की रसोई दी थी। रस खट्टा था, सो संतों ने शक्कर माँगी। तो उसने मना करते हुए कहा कि हमारे यहाँ यह रिवाज नहीं है। पर, बाद में उसे खूब दुःख हुआ। फिर गुणातीतानंदस्वामी ने उपाय बताते हुए कहा कि दोबारा संतों को रस की रसोई और शक्कर दो। तब उसे भीतर में शांति हुई... प.पू. स्वामिजी की दो बार स्वर्ण तुला हुई। मुझे मन में ऐसा था कि काकाजी और पप्पाजी का ऋण हम किस प्रकार चुकाएँ? आर्थिक दृष्टि से सांकरदा मंदिर इतना मज़बूत नहीं है। अब जब इन भाइयों की षष्ठीपूर्ति का मौका आया

है और शास्त्र में मिश्री को पवित्र कहा जाता है, हर शुभ कार्य में-पंचामृत में मिश्री का महत्त्व होता है, तो फूल नहीं तो फूल की पंखुड़ी के रूप में भरतभाई और वशीभाई की मिश्री से तुला करने की संतों की इच्छा है। इसके पीछे दो भावनाएँ हैं कि हम काकाजी और पप्पाजी का तो पूर्ण लाभ ले नहीं सके, पर मैं दिल से कहता हूँ कि ये काकाजी और पप्पाजी के स्वरूप हैं; उनकी तुला करके ऐसा मानें कि हमने काकाजी और पप्पाजी की करी। मेरे दिल में आनंद हो, ऐसी नम्र प्रार्थना और विनती है।

यूँ, आशिष प्रदान करते हुए अंत में **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** भावविभोर होकर एक बालक की भाँति रो पड़े और बाद में प्रार्थना करते हुए बोले–

यह तुला करते हुए मेरे अंतर की ऐसी भावना है कि मिश्री की यह मिठास हमारे गुणातीत समाज के भीतर–हमारे सभी केन्द्रों में संप, सुहृद्भाव, एकता के रूप में हमारे दिल में प्रगटे–ऐसी प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी और प.पू. दिनकरभाई को अपने से बड़ा मानते हुए प.पू. भरतभाई व प.पू. वशीभाई ने अपनी जगह उनकी तुला करने की प्रार्थना की...

तब **प.पू. गुरुजी** ने **ब्रह्मस्वरूप काकाजी** द्वारा कही बात दोहराते हुए कहा–

स्वर्ण की क्या बात? हमें तो मुक्तों के दिलों से तोले जाना है।

तत्पश्चात् अपनी भावना व्यक्त करते हुए **प.पू. वशीभाई** ने कहा–

हम सब ऐसी प्रार्थना–संकल्प करें कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी और ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की शताब्दी के अवसर पर इन स्वरूपों की स्वर्ण तुला करें...

और फिर... **प.पू. भरतभाई** एवं **प.पू. वशीभाई** की **'मिश्री तुला'** की शुभ शुरुआत हुई। फूलों से सुशोभित दो तुलाओं पर सूत्र भी यही लिखा था–

मिठास... मिठास... मिठास... समग्र गुणातीत समाज में संपूर्णरूप से मिठास ही प्रवर्ते...

प.पू. भरतभाई और प.पू. वशीभाई दोनों की गोद में ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की मूर्ति रख कर, उन्हें तुला के एक-एक पलड़े में बिठाया। सर्वप्रथम प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. बापु, प.पू. अरुणभाई की ओर से दोनों तुलाओं में मिश्री के पॅकेट्स रखे गए। तत्पश्चात् उपस्थित सांकरदा मंदिर के संतों, पू. विज्ञानस्वामी के साथ कंथारिया के संतों एवं मुक्तों ने एक के बाद एक मिश्री का पॅकेट अर्पण किया। मिश्री तुला संपन्न होने के बाद **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा–

सच, मुझे बहुत आनंद हो रहा है कि मेरे मन में जो दर्द था, वह दर्द निकल गया और खूब संतोष हुआ कि आज काकाजी स्वरूप, पप्पाजी स्वरूप इन दिव्य स्वरूपों की तुलाविधि की। हम सभी को उसका लाभ मिला... काकाजी-पप्पाजी का जो संकल्प था कि जीतेजी अक्षरधाम यहाँ खड़ा करना है और ऐसा जीवन जीते जीवनमुक्तों के भीतर ऐसी मिठास की खूब जरूरत है। सभी स्वरूप यह प्रगटाएँ ऐसी भावना है...

आशिष प्राप्ति के बाद पू. अशोकभाई मोदी ने **चॉकलेट का** विशिष्ट **हार** तीनों भाइयों को अर्पण किया और फिर हीरक प्राकट्योत्सव निमित्त **प.पू. अरुणभाई** ने प्रासंगिक प्रार्थना की। तत्पश्चात् **अक्षरज्योत**–सांकरदा की बहनों द्वारा बनाया **ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की मूर्ति के** छोटे-छोटे **पॅन्डन्ट्स का** विशिष्ट **हार** पू.

व्रजलालभाई, पू. बिम्पलभाई और पू. कौशिकभाई ने तीनों भाइयों को अर्पण किया और प्रार्थना की कि ये प्रसादी का लॉकेट जिसे भी दें, उसके जीवन में मिठास प्रगटे। विशिष्ट हार ग्रहण करने के बाद **'वशीकारी यानि–वशी'** की नई उपमा से नवाज़े गए **प.पू. वशीभाई** ने आशीर्वाद दिया। आज का यह अवसर बस लूट लेना है, ऐसी भावना से **सांकरदा के संतों**–पू. स्नेहलस्वामी, पू. भक्तिस्वामी और पू. यज्ञप्रसादस्वामी ने तीनों भाइयों को **स्मृति भेंट** अर्पण की। अर्धगोलाकार इस स्मृति भेंट में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज के साथ सभी गुणातीत स्वरूपों की मूर्ति का दर्शन हो रहा था और गुणातीत समाज की नींव के रूप में बीचोंबीच झूले में 'बंधुजोड़ी' ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की मूर्ति का दर्शन हो रहा था। स्मृति भेंट के बाद सभी ने **प.पू. भरतभाई** से आशिष पाई और... फिर इस उत्सव की अंतिम स्मृति के रूप में केक कटिंग हुई। तीनों भाइयों को अलग-अलग तीन केक अर्पण की, जिसमें ब्रह्मस्वरूप काकाजी के साथ हर एक की मूर्ति अंकित थी। **प.पू. दिनकरभाई, प.पू. गुरुजी** एवं **प.पू. निर्मलस्वामिजी** के आशीर्वाद से उत्सव की पूर्णाहुति हुई।

प.पू. गुरुजी ने सांकरदा के इस उत्सव में आशिष देते हुए कहा–

ऐसे समैये जरूर एटेन्ड करने चाहिए। जैसे हार्ट में ब्लॉकेजीज़ हो जाती हैं, ऐसे ही हमारे अंतर में जो कई ब्लॉकेज़ होती हैं, वो ऐसे समैये में निकल जाती हैं... स्वामी का जब मॅसेज आया कि इस प्रकार 5 तारीख को मुंबई मंडल पहुँच रहा है, तो तुझे भी आना है, तब मैंने कहा था कि दिल्ली के लिए हमारी सारी टिकिटें ग्रुप कन्सेशन में हुई हैं। फिर भी स्वामी ने कहा कि यदि ऐसा है, तो तीन टिकिट मैं तुझे भेज देता हूँ, पर तुझे आना है। भले ही टिकिट के पैसे कटें और ज़्यादा लगें, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि पैसे वसूल हो गए!

तो, जैसे कि इस उत्सव में **प.पू. वशीभाई** ने अपने वक्तव्य में कहा–

अस्सी साल की उम्र में गुरुजी अभी भी अपने आपको लर्नर मानते हैं।

यूं, प.पू. गुरुजी की उपरोक्त भावना बयाँ करती है कि प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने अपने संतों के साथ-सहकार से इस उत्सव द्वारा वाकई सभी को भीतर में एहसास करवा दिया–

'हम एक हैं, हमको एक ही है रहना,
सच्चा मर्म है समझना...'

वैसे देखा जाए तो **15 फरवरी को प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का प्राकट्य दिन** भी नज़दीक आ रहा था और योगेश्वरों ने तो प्रार्थना भी की थी कि उसी दिन अपने साथ वे यह उत्सव मना लें। लेकिन, अपने विभु ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी का मानो ऋण अदा करने की भावना से प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने यह सारा आयोजन अलग ही किया। सो, उनके प्राकट्य पर्व पर अंतर की प्रार्थना कि गुरु स्थान पर होने के बावजूद, आप संबंध वाले सभी का माहात्म्य समझ कर इतनी प्राथमिकता देते हैं, तो आपकी ऐसी क्रिया-चरित्रों का निरंतर मनन-चिंतन करते हुए हम भी प्रगट स्वरूपों को राजी करने का ऐसा मार्ग अपनाएँ...

૩-૨-૮૨

Jai Shree Swaminarayan

TEL. : 379325

YOGI DIVINE SOCIETY

6/D, SONAWALA BLDGS.
TARDEO, BOMBAY 400 007

પરમ સાક્ષાત્કાર - [illegible] મુમુક્ષુઓના
દિવ્ય સંદેશ -
- સર્વ કોઈ આદર્શ સાધકો -
સાધનાની પૂર્ણાહૂતિનો

(1). સાધર્મ્ય લાભ સર્વોપરી પરબ્રહ્મ ભગવાન સાથે - અખંડ પામ્યા - સર્વ રીતે સમયસર પર - યુગે યુગ તમારા હૃદયમાં અખંડ બિરાજમાન રહીને કેવળ તેજ સર્વ કાર્ય કરી રહેલ છે - તે જો કોઈ ભૂલી રહ્યું છે તે ભાનું [illegible] તે તમારા પરમભક્તિમાં [illegible] દૃઢ [illegible] અખંડ [illegible] - તે અખંડ [illegible] [illegible] સંપૂર્ણ સાક્ષાત્કાર [illegible] [illegible] [illegible] પ્રાર્થના [illegible] [illegible] [illegible] Total [illegible] [illegible]

(2). [illegible] પ્રાર્થના કરવી. [illegible]

(3). [illegible] [illegible]

Do not consider the facts as they are; go according to your inner convection.

[illegible] Dadubhai

[illegible] સ્વામી [illegible]

મૂળ ગુજરાતી : **પરમ સાક્ષાત્કાર – ૩જી ફેબ્રુઆરીનો** ૩-૨-'૮૨

દિવ્ય સંદેશ

–સર્વ શ્રેયાર્થી સાધકવર્ગને –

સાધનાની પૂર્ણાહુતિનો

૧. સાર્વભોમ સર્વોપરી પરબ્રહ્મ સત્તા જ સર્વત્ર - આગળ પાછળ - સર્વ સ્થળે સમયથી પર - પળેપળ જ

તમારા હૃદયમાં અખંડ બિરાજમાન રહીને કેવળ તે જ સર્વ કાર્ય કરી રહેલ છે

ને

જે કાંઈ બની રહ્યું છે ને બનતું જશે

તે **તમારા પરમહિતમાં જ** હશે તેમ દઢ **માની** - સ્વીકારી

અખંડ જાગ્રત ને અખંડ જાણપણે ખુલ્લા જ રહો

ને

તેને જ સંપૂર્ણ સહકાર આપો તેવું બળ - પ્રેરણા ને સુરૂચિ સહજ જ પ્રગટો

એજ અંતરની તીવ્ર અભિપ્સા સહ પ્રભુ ચરણે પ્રાર્થના છે.

તો આટલું જ અખંડ સ્મરણ કરતા રહેવાની **ટેવ - અભ્યાસ** - નિયમિત પાડતા રહો.

તો જીવનમાં પળેપળ સુખ - શાંતિ - બળ - પ્રકાશ ને આનંદ સહજ જ મળતાં જશે.

આવો ચૈતન્ય પ્રવાહ અખંડ જ વહેતો રહે છે

તો સર્જનાત્મક ઉધ્ધારક પરમ સત્યને જ નિર્દોષભાવે ટોટલ સ્વીકારી સર્વારંભ કરતા રહો.

૨. બે સારા ભગવદી સાથે દઢ મૈત્રીભાવ કેળવો. તે માટે પ્રાયશ્ચિતરૂપ નિર્માનીપણે પ્રાર્થના કરવી.

૩. તમારી સર્વ ક્રિયાયોગોનું ફળ – **જ્ઞાનાગ્નિમાં** જ હોમ કરીને અર્પણ કરશો

તો અખંડ સર્વોપરી બ્રહ્મસત્તાનો સાક્ષાત્કાર જ્ઞાન સમાધિરૂપે તમો અનુભવશો

ને

અક્ષરધામનું જ દિવ્ય સુખ ભોગવી - અનુભવી અન્યને પણ

''આપણે સૌ એક''ના સિદ્ધાંતે અર્પજો.

તો ગુણાતીતભાવને હવે વ્યાપક બનાવતા રહેજો

ને

અવિચરળ અંતિમ વિશ્રામસ્થાનમાં **પરમપદ**ની પ્રતીતિ

તમો જાતે પ્રથમ સિદ્ધ કરી સૌ માટે એકાંતિક ધર્મ સરળતાથી સિદ્ધ થાય તેવી સેવા કરી લેશો. પ્રભુ સૌને તેવું બળ ને દષ્ટિ અર્પે એજ અભ્યર્થના સહ–

આનંદ કરો
ને
સૌને કરાવો. }

લિ. આપના જ

દાદુકાકાના

હેતપૂર્વક જયશ્રી સ્વામિનારાયણ.

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	27.2.'14,	गुरुवार	– महाशिवरात्रि, व्रत *(ताड़देव मंदिर में सुबह 9:30 बजे 'लघुरुद्र')*
(2)	**दि.**	**2.3.'14,**	**रविवार**	**– प.पू. गुरुजी की 77वीं प्राकट्य तिथि का शुभ दिन, ताड़देव मंदिर में प्राकट्योत्सव सायं 5:30 बजे से...**
(3)	दि.	7.3.'14,	शुक्रवार	– **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्वधामगमन दिन निमित्त** ***सायं 6:30 बजे ताड़देव मंदिर में अखंड परिक्रमा का शुभारंभ...***
(4)	दि.	8.3.'14,	शनिवार	– **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्वधामगमन दिन निमित्त करी** ***अखंड परिक्रमा की पूर्णाहुति सायं 6:30 बजे...***
(5)	दि.	10.3.'14,	सोमवार	– श्रीहरि नौमी
(6)	दि.	12.3.'14,	बुधवार	– एकादशी – व्रत
(7)	**दि.**	**13.3.'14,**	**गुरुवार**	**– प.पू. गुरुजी का 77वां प्राकट्य दिन**
(8)	दि.	16.3.'14,	रविवार	– होली, होलिका दहन, **ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज का जन्मोत्सव**
(9)	दि.	17.3.'14,	सोमवार	– धुलेन्डी, *दिल्ली मंदिर में* **चंदनोत्सव** *सुबह* **8:30** *बजे से...* **संतभगवंत प.पू. साहेबजी का प्राकट्य पर्व**
(10)	दि.	27.3.'14,	गुरुवार	– एकादशी, व्रत
(11)	दि.	31.3.'14,	सोमवार	– गुड़ी पड़वा
(12)	दि.	8.4.'14,	मंगलवार	– रामनौमी, **भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती**, व्रत
(13)	दि.	11.4.'14,	शुक्रवार	– एकादशी, व्रत
(14)	दि.	13.4.'14,	रविवार	– गुरुहरि योगीजी महाराज का भागवती दीक्षा दिन
(15)	दि.	15.4.'14,	मंगलवार	– पूर्णिमा, श्री हनुमान जयंती
(16)	दि.	25.4.'14,	शुक्रवार	– एकादशी, व्रत
(17)	दि.	2.5.'14,	शुक्रवार	– अखात्रीज
(18)	दि.	3.5.'14,	शनिवार	– गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की अंतर्धान तिथि
(19)	दि.	4.5.'14,	रविवार	– **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का प्राकट्य दिन**
(20)	दि.	8.5.'14,	गुरुवार	– श्रीहरि नौमी
(21)	दि.	10.5.'14,	शनिवार	– एकादशी, व्रत
(22)	दि.	13.5.'14,	मंगलवार	– नृसिंह जयंती, फलारी व्रत

R.N.I. 28971/ 77 *(Air Mail)*
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO** ***FOR*** **YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052